www.terapanthinfo.com

## इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

# अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 16 ■ 16-30 जून, 2011

**संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट**
**सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका**

*अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।*

**❐ सदस्यता शुल्क :**

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

**❐ विज्ञापन सहयोग :**

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

**❐ सम्पर्क सूत्र :**

**अणुव्रत महासमिति**
**अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग**
**नई दिल्ली–110002**

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

- जीवन अहिंसामय बने — *आचार्य महाश्रमण* — 3
- करूणा, दया, सेवाभाव जरूरी — *प्रतिभा पाटिल* — 5
- खेलों से दूर होते बच्चे — *डॉ. विनोद गुप्ता* — 7
- फैल रही है गुटखे की महामारी — *प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा* — 8
- महंगाई की मार : देवों के द्वार — *रमेश कोठारी* — 10
- अपराधिकरण की आग — *सुषमा जैन* — 12
- स्वयं को देखिए — *डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी* — 15
- पर्यावरण संरक्षण में जन भागीदारी — *भैरूलाल नामा* — 16
- बेलगाम भुखमरी — *अशोक सहजानन्द* — 19
- राष्ट्रीय चरित्र के संपोषक — साध्वी शुभप्रभा — 20
- गंगा तेरा पानी कैसा..... — *आशीष वशिष्ठ* — 22
- अहिंसा और अनुकम्पा - 4 — *मुनि सुखलाल* — 25
- लाखन दादा — *पूनम कुमारी* — 26
- आलोचना बनाम गुप्त प्रशंसा — *डॉ. शुद्धात्म प्रकाश जैन* — 28
- विकास का गांधीवादी प्रतिमान — *वंदना कुंडलिया* — 30
- मोरारजी भाई को अहिंसा पुरस्कार — *मुनि राकेशकुमार* — 32


### ■ स्तंभ


- संपादकीय — 2
- राष्ट्र चिंतन — 9
- कविता — 18
- झांकी है हिन्दुस्तान की — 33
- अणुव्रत आंदोलन — 35-40

www.terapanthinfo.com

संपादकीय

# मूल्यों के अभाव में पनपता कदाचार

भ्रष्टाचार की सुनामी में समूचा देश डूबा हुआ है। तथाकथित बड़े और पढ़े-लिखे लोगों का भ्रष्टाचार को पनपाने में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। शिक्षित एवं बड़े लोगों ने जितना कदाचार को बढ़ावा दिया उतना अनपढ़ और सामान्य लोगों ने नहीं। अभी भी देश की लगभग आधी आबादी रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतों और न्यूनतम सुविधाओं से वंचित है। भ्रष्टाचार राष्ट्र के विकास की सभी योजनाओं को निगल रहा है। **अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का यह कथन ध्यान देने योग्य है कि "आज कालाबाजारी, घूसखोरी और लूट-खसोट की प्रवृत्ति चल रही है। उसका एक बड़ा कारण यह है कि उसके अनुरूप मस्तिष्कीय प्रशिक्षण नहीं है। यह एक सच्चाई है कि अनपढ़ लोगों का भ्रष्टाचार के प्रचार-प्रसार में उतना योगदान नहीं है, जितना पढ़े-लिखे लोगों का है। मैं यह नहीं कहता कि कम पढ़ा लिखा आदमी भ्रष्ट नहीं हो सकता, किन्तु इतना जरूर कहूंगा कि उतने बड़े पैमाने पर वह भ्रष्टाचार नहीं करता, जितने बड़े स्तर पर पढ़े-लिखे और ऊपर की कुर्सी पर बैठे लोग करते हैं। भ्रष्टाचार जैसे खोटे काम में भी बड़ी दक्षता और चतुराई की जरूरत होती है। इसके लिए वित्तीय नियमों और कानूनों की पूरी जानकारी होनी चाहिए, जो सामान्य या कम पढ़े-लिखे लोगों में कम होती है।"**

जो सक्षम है--अर्थ से, बाहुबल से, जनबल से, सत्ताबल से, वही सदाचार की सीढ़ियां लाँघकर कदाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। उच्च अधिकारियों एवं मंत्रिमंडलों में जिन लोगों ने स्थान बना रखा है उनमें से अधिकांश भ्रष्टाचारी हैं। स्वयं के नाम पर कुछ भी नहीं पर परिजनों-रिश्तेदारों-मित्रों के पास अकूत सम्पदा। आज भ्रष्टाचार निरोधी सभी संस्थाएं भ्रष्ट नेताओं और अफसरों के सीधे नियंत्रण में काम करती हैं। हर तरफ भ्रष्टाचार का भारी बोलबाला है--पंचायत के कार्यों में, सड़क बनाने में, नरेगा, विद्यालयों में मिड-डे-मील राशन से लेकर वृद्ध-वृद्धाओं की पेंशन से लेकर खदानों के ठेकों आदि में जहां देखो वहीं भ्रष्टाचार। विडंबना तो यह है कि पर्याप्त सबूतों के बावजूद भ्रष्टाचारियों को सजा तक नहीं मिलती। देखने में आता है कि हमारे भ्रष्टाचार निरोधी कानून में कई खामियां हैं जो भ्रष्टाचारियों का बचाव करती हैं। इस व्यवस्था में यदि कोई भ्रष्ट जेल जाता है तो भी ऐसा कोई प्रावधान कानून में नहीं है जिसके द्वारा उस व्यक्ति की भ्रष्ट तरीके से प्राप्त काली कमाई या उसके द्वारा सरकार को पहुंचाए गए नुकसान की वसूली की जा सके, उसकी संपत्ति जब्त की जा सके। आवश्यकता इस बात की है कि सभी राजनेताओं, अधिकारियों, कर्मचारियों के परिजनों-सगे-सम्बंधियों-मित्रों का विगत तीन दशक पूर्व की आर्थिक स्थिति एवं वर्तमान आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिये और पता लगाया जाना चाहिए कि इन लोगों के पास इतना धन कैसे और किन माध्यमों से आया।

राजनेताओं एवं अधिकारियों पर लगाम कसने की दृष्टि से ही लोकपाल बिल की तैयारी हो रही है। उच्च पदों पर आरूढ़ व्यक्तियों एवं धनपतियों का मानवीय मूल्यों एवं मानवीय एकता में विश्वास ही नहीं है। मानवीय मूल्यों के प्रति अनास्था एवं संवेदनहीनता राजनेताओं, अधिकारियों, अर्थपतियों, राज्य कर्मचारियों को कदाचार करने को प्रेरित करती है। यही कारण है कि चुनाव जीतने के बाद राजनेता भ्रष्टाचार का दामन थाम लेते हैं। चुनाव में दो-पाँच करोड़ रूपयों का व्यय हुआ है, अगले चुनाव में इससे ज्यादा होगा, अतः उसका प्रबंध करना ही उनका भावी लक्ष्य होता है। अधिकारी/कर्मचारी सोचता है कि इस पद पर पहुँचने एवं शिक्षा-दीक्षा पर जितना व्यय हुआ है, येन-केन-प्रकारेण उससे दो गुना तो बटोरना ही है। एक ही लक्ष्य होता है कि उसकी भावी पीढ़ी आर्थिक रूप से मजबूत बने तथा वह और उसका परिवार ही जीवन की सुख-सुविधाएं भोगे। इस तरह की सोच जब विकसित होती है तो व्यक्ति संवेदनशून्य बन मानवीय मूल्यों को नकारता हुआ कदाचार में संलग्न हो जाता है।

आज स्थिति यह है कि हर काम को करने की दरें निर्धारित है। निर्धारित शिष्टाचार बनते जा रहे भ्रष्टाचार को निभाओ और काम निकलवा लो। ऐसी शिष्टाचारिता निभाने के बाद किसी नियम कानून की आव यकता नहीं होती। भ्रष्टाचार में लिप्त होकर कुछ व्यक्ति करोड़पति-अरबपति बन बैठे और राष्ट्रीय विकास योजनाओं को हाशिए पर ला स्वस्थ राष्ट्र निर्माण के सपने को चकनाचूर कर दिया।

**● डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com



# जीवन अहिंसामय बने

## अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण का उद्‌बोधन

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अपने प्रथम मंगल वक्तव्य में कहा–'आर्हत वांग्मय का सुन्दर सूक्त है–'धम्मो मंगल मुक्किट्‌ठं अहिंसा संजमो तवो।' धर्म उत्कृष्ट मंगल है, परम मंगल है। उससे बड़ा मंगल दुनिया में प्रतीत नहीं हो रहा है। जिसके पास धर्म है, उसके पास मानो मंगल ही मंगल है।

धर्म के तीन प्रकार बताए गए हैं–अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है और तपस्या धर्म है। जिस आदमी के जीवन में धर्म होता है या धर्म जिसके मन में रम जाता है अथवा जिसका मन धर्म में रम जाता है, उसे मनुष्य ही क्या, देवता भी नमस्कार करते हैं।

जन्म लेना एक सामान्य घटना है। सामान्य घटना इसलिए है कि हर मनुष्य जन्म लेता है। मनुष्य ही नहीं, हर प्राणी संसार में जन्म लेता है। इसलिए इसमें कौन-सी विशेष बात है? परन्तु जन्म के बाद जीवनकाल में जो व्यक्ति वैशिष्ट्य को प्राप्त कर लेता है, उसके जन्मदिन को बड़े आदर के साथ, श्रद्धा के साथ लोग मनाते हैं। ऐसा ही कुछ मेरे साथ हो रहा है। जीवन के ५०वें वर्ष में मैंने आज प्रवेश किया है। लगभग शताब्दी का आधा भाग संपन्नता की ओर है।

मैं भगवान महावीर का स्मरण करता हूं, जो परम आराध्य, परम पूजनीय, प्रातःस्मरणीय हैं। मैं आचार्य भिक्षु की स्मृति करता हूं, जो महान क्रान्तिकारी, चिंतक, लेखक और सबसे बड़ी बात कि वे महान साधक संत हुए हैं। मैं परमपूज्य गुरुदेव तुलसी को श्रद्धा के साथ याद करता हूं। उनको तो मैंने साक्षात् देखा है और उनके चरणों में रहने का मुझे अवसर मिला है। उनका मेरे पर परम उपकार है। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ का महान उपकार मेरे पर है। उन्होंने मुझे आगे बढ़ने का ज्यादा से ज्यादा मौका दिया और अपना सारा दायित्व विश्वास के साथ मुझे सौंप दिया। वे कहा करते थे–'मैं निश्चिंत हो गया।' ऐसे महान उपकारी परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं। मेरे पार्श्व में साध्वीप्रमुखा विराजमान हैं, बचपन से जिनका वात्सल्य प्राप्त हुआ और यदा-कदा जिनके परिपार्श्व में आने का मौका मिला। मेरे मन में इनके प्रति बहुत सम्मान का भाव है। मैं उन्हें सादर अभिवादन करता हूं। श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री विराजमान हैं, जो मेरे परम उपकारी हैं और परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से जिन्होंने मुझे संसार से तारने का प्रयास किया है। मेरे मन में वैराग्य भाव निर्मित करने और उसे पुष्ट करने का प्रयास किया, मुझे मुनि दीक्षा प्रदान की। आप मेरे दीक्षा प्रदाता मुनिवर हैं, जिन्होंने मुनि जीवन स्वीकार करने के बाद मेरा पालन-पोषण किया। मुझे शिक्षित और संस्कारित करने का प्रयास किया। ऐसे मुनिश्री को मैं वंदना करता हूं। मुख्य नियोजिका बैठी हैं, जो आचार्यश्री के पास साहित्य के क्षेत्र में तथा अन्य विधाओं में बहुत श्रम करने वाली थीं। उनका मुझे सहयोग प्राप्त है। उनको भी मैं प्रसन्नता के साथ निहार रहा हूं।

मुझे मेरी संसारपक्षीया मां याद आ रही हैं। मां नेमादेवी का सांसारिक उपकार मेरे पर है ही, परन्तु मैं मानता हूं उनका धार्मिक उपकार भी है। वे संसार में नहीं हैं। मैं उनको भी बड़ी भावना के साथ याद कर रहा हूं। इसी के साथ मैं अपने संसारपक्षीय पूज्य पिताश्री झूमरमलजी को याद करता हूं, जिनका साया मुझे स्वल्पकाल के लिए मिला, परन्तु उनका भी स्नेह मुझे प्राप्त हुआ। उनको भी मैं सद्‌भावना के साथ याद कर रहा हूं। सरदारशहर मेरी जन्मभूमि है, जहां में पला-पुसा, खेला-कूदा और धार्मिक साधना में आगे बढ़ने का संकल्प लिया। सरदारशहर की उस मातृभूमि को भी मैं आज याद कर रहा हूं।

मैंने सोचा है कि जन्मदिवस आया है तो मुझे कुछ निर्णय भी करने चाहिए। मैंने अपने विकास की दृष्टि से, कुछ मोड़ लेने की दृष्टि से कुछ निर्णय लिए हैं। वे विचार कुछ संकल्प के रूप में हैं, जो इस प्रकार हैं–

मैं अनिश्चित काल के लिए निर्णय करता हूं–

१. मैं प्रतिदिन विशेष स्थिति के सिवाय यथासंभव चौविहार नवकारसी करूंगा।
२. मैं विशेष स्थिति के सिवाय यथासंभव प्रथम प्रहर में अन्न ग्रहण नहीं करूंगा।
३. मैं विशेष स्थिति के सिवाय यथासंभव प्रतिदिन तीन विगय का वर्जन करूंगा।

ये तीन तपः संबंधी संकल्प हैं। उसके बाद अब मैं जीवनशैली में मोड़ ला रहा हूं और व्यवहार से थोड़ा-सा उपरत होने का प्रयास करके कुछ निश्चय की दिशा में आगे बढ़ने तथा और ज्यादा महत्त्वपूर्ण कार्य करने की दृष्टि से मैंने कुछ सोचा है। वे भी अनिश्चित काल के लिए हैं।

४. मैं घरों-घरों, दुकानों-दुकानों और कारखानों-कारखानों में पगल्या करने की विधा का प्रयोग यथासंभव कम करने का प्रयास करूंगा।
५. मैं चतुर्मास में इक्कीस दिन तक की तपस्या के पारणे वालों के यथासंभव गोचरी नहीं जाऊंगा। इससे ऊपर की तपस्या के पारणे में गोचरी जा सकता हूं।
६. मैं चातुर्मास में साठ दिन से कम सेवा करने वालों के यथासंभव गोचरी नहीं करूंगा।

इन छह संकल्पों के बाद संकल्पों का सिरमौर है--

७. मैं यथासंभव उपशम की साधना का अभ्यास करूंगा।

मैंने ये सात संकल्प अपने लिए सोचे हैं, ताकि मेरे जीवन में कुछ मोड़ आए। आप लोग इतनी बड़ी संख्या में आए हैं, मेरा ५०वां जनमदिवस मनाने के लिए तो मैंने भी सोचा कि मुझे भी कुछ विचार करना चाहिए, संकल्प करना चाहिए। आप लोग आएं, न आएं, मुझे तो कुछ सोचना ही चाहिए। थोड़ा-सा आगे पादन्यास करने के लिए यह प्रयास किया।

कार्यक्रम में अनेक संकल्पों के उपहार

www.terapanthinfo.com



मेरे पास आए। अनेक केन्द्रीय संस्थाओं ने अपने संकल्प मेरे सामने अभिव्यक्त किए हैं और वास्तव में यह एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है संकल्पों का उपहार देना। मैं कल से ही देख रहा हूं कि कितने ही संकल्पों के उपहार मेरे पास आ रहे हैं, जो पवित्र और निरवद्य संकल्प हैं, उनके प्रति मेरी मंगलकामनाएं हैं। एक संकल्प या कार्यक्रम मैंने देखा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का और वह था जैन स्कॉलर परियोजना का। गुरुदेव तुलसी के समय से जैन विद्वान तैयार करने की जो बात विचारणीय है, मैं सोच रहा था कि उसी संदर्भ में यह उपक्रम आ गया। अ. भा. तेरापंथ महिला मंडल ने जैन स्कॉलर परियोजना को हाथ में लिया है, यह कार्य अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। मैं चाहता हूं यह कार्य विशेष रूप से आगे बढ़े और भी जो सारे पवित्र संकल्प हैं, उन सभी के प्रति मेरी मंगलकामना है। सभी अच्छे संकल्प साकार हों। एक वर्ष के लिए संकल्प लिए हों तो एक वर्ष पूरा होने को आए तो वापिस मुझे रिपोर्ट भी आपको देनी चाहिए कि जो संकल्प आपने मुझे उपहारस्वरूप दिए थे, उनकी प्रगति कितनी हुई या नहीं हुई? यह रिपोर्ट भी खास करके केन्द्रीय संस्थाओं की ओर से मेरे पास आनी चाहिए कि एक साल में स्वीकृत संकल्पों को आपने कितना आगे बढ़ाया है? संभव हो तो त्रैमासिक रिपोर्ट भी आप प्रस्तुत कर सकते हैं।

मैं अपने लिए मंगलकामना करता हूं कि मेरा जीवन अहिंसामय बने, संयममय बने, तपस्यामय बने और मैं अपनी आत्मा के कल्याण के साथ परकल्याण की दिशा में भी प्रयास करता रहूं।'

द्वितीय मंगल उद्‌बोधन में कहा--'आर्हत वांग्मय का एक सुन्दर सूक्त है--'सच्चं भयवं।' सत्य भगवान है। जो व्यक्ति अपने जीवन में सचाई की आराधना करता है, वह व्यक्ति भगवान की आराधना कर लेता है। मानव बनना बहुत बड़ी बात नहीं, परन्तु जीवन में सचाई की साधना करना बहुत बड़ी बात हो जाती है।

जन्म लेना सामान्य बात है, परन्तु जीवन में विशिष्ट कार्य करना विशेष बात हो जाती है। आज मैंने अपने जीवन के ५०वें वर्ष में प्रवेश किया है। इस संदर्भ में धर्मसंघ ने अमृत महोत्सव मनाने का प्रस्ताव रखा। उसकी मैंने स्वीकृति भी प्रदान कर दी। आज के इस अवसर पर भारत की राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल का आना मैं अपने प्रति उनकी सद्‌भावना का प्रतीक मानता हूं।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ ने संभवतः एक बार कहा था कि विकास का चतुष्कोण है। विकास के चार प्रकार हैं--आर्थिक विकास, भौतिक विकास, नैतिक विकास और आध्यामिक विकास। भौतिक संसाधनों की भी अपेक्षा होती है और उस विकास के लिए आर्थिक विकास भी आवश्यक होता है। भौतिक और आर्थिक विकास एक अपेक्षा की पूर्ति है। परन्तु इतने मात्र से ही विकास की परिपूर्णता नहीं होती। विकास की परिपूर्णता के लिए दो विकास और वांछनीय हैं। वे हैं--नैतिक और आध्यात्मिक विकास। देश की जनता में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा रहे। जैसा अभी राज्यपाल महोदय ने कहा कि गुरुदेव तुलसी, जिन्होंने अणुव्रत की बात कही थी और अणुव्रत के लिए उन्होंने कितना परिश्रम किया था। जन-जन के मन में नैतिकता के प्रति निष्ठा बढ़े, ऐसा उन्होंने प्रयास किया था। नैतिक मूल्यों का विकास आवश्यक है, उससे भी आगे बढ़ें तो आध्यात्मिक विकास, चेतना का विकास, आत्मा की निर्मलता का विकास वांछनीय है। ये चारों विकास होते हैं तो एक संतुलित विकास और पूर्ण विकास हो रहा है--ऐसा माना जा सकता है।

मैं अपने बारे में कहूं--मुझे मानव बनने का मौका मिला, उसके साथ-साथ तेरापंथ शासन, भैक्षव शासन में दीक्षित होने का अवसर मिला। आचार्य भिक्षु का यह शासन मिला और इस शासन का दायित्व भी मुख्यतया मेरे पर आ गया। मैं सबसे पहले अपने आपको तेरापंथ शासन की सेवा के लिए समर्पित मानता हूं। बाद मैं आगे चलूं तो मैं जैन शासन की सेवा करना चाहता हूं और उसके साथ मैं यथासंभव, यथाशक्ति यत्किंचित मानव जाति की सेवा करना चाहता हूं।

अभी हम लोग अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। अहिंसा यात्रा का मुख लक्ष्य है--अनुकंपा की चेतना का विकास। जन-जन में करुणा की भावना जागे। जिसमें दया की भावना जाग जाती है, वह व्यक्ति अपराधों से अपने आपको बचा लेता है। अनुकंपा की चेतना के विकास के तहत हमने चार सूत्र निर्धारित किए हैं, जिनमें पहला है--साम्प्रदायिक सौमनस्य। भारत में विभिन्न सम्प्रदाय हैं। उन सम्प्रदायों में परस्पर सौमनस्य रहे, सद्‌भावना रहे, ऐसी प्रेरणा देने का यथासंभव प्रयास किया जा रहा है।

दूसरा सूत्र है--नशामुक्ति। लोग नशे की बुराई से मुक्त रहें, ऐसा प्रयास किया जा रहा है। अनेक-अनेक लोगों ने हमारे पास नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया है। हम उसके लिए प्रयास भी कर रहे हैं।

तीसरी बात--कन्या भ्रूणहत्या निरोध। कहीं-कहीं कन्या भ्रूणहत्या का स्वर भी आता है। हम उसके लिए भी प्रेरणा दे रहे हैं कि कन्या भ्रूणहत्या जैसा घिनौना कृत्य नहीं होना चाहिए।

चौथा सूत्र है--यथासंभव ईमानदारी का पालन। अपने जीवन में लोग ईमानदारी को महत्त्व दें और जहां तक बन सके, ईमानदारी के रास्ते पर चलें। थोड़ा कष्ट आ जाए तो उसे स्वीकार कर लें, परन्तु ईमानदारी को न छोड़ें। ईमानदारी के पथ पर आगे बढ़ते रहें।

इस प्रकार अहिंसा यात्रा के माध्यम से कुछ काम किया जा रहा है। मैंने मेवाड़ की जनता के लिए कहा कि पारिवारिक सौमनस्य को प्रमुखता दें। परिवारों में सौहार्द और मैत्रीभाव रहे, ऐसा यथासंभव प्रयास कर रहे हैं। मैं अपने लिए मंगलकामना करता हूं कि मेरा जीवन अध्यात्ममय हो। मैं स्वयं आत्मसाधना करता हुआ दूसरों की भी सेवा कर सकूं, यह मेरी भावना है। जीवन की यह अर्धशताब्दी का लगभग संपन्नता का अवसर है। मैं हमेशा अध्यात्म भावना और सेवाभावना के प्रति जागरूक रहूं, समर्पित रहूं। सम्मानित मंच के प्रति भी मेरी मंगलभावना है। आप लोग यहां पहुंचे हैं, यह आप सबकी सद्‌भावना है। हम सब कल्याण की दिशा में काम करते रहें, यह हमारे लिए मंगलकारी हो सकेगा।'

www.terapanthinfo.com



# करुणा, दया, सेवाभाव जरूरी

## महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के भावपूर्ण उद्‌गार

'आज मुझे आपके बीच आकर प्रसन्नता हो रही है। आचार्य महाश्रमणजी एक महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व, विचारक और समाज सुधारक हैं। वे अहिंसा, अनुकंपा, शान्ति और नैतिकता की प्रतिष्ठापना के द्वारा सामाजिक स्वस्थता के लिए अविरल और अविश्राम परिश्रम कर रहे हैं। आज उनके महान कार्य का आदर और सम्मान करने के लिए मैं यहां आई हूं। उन्हें आशीर्वाद देने का हक तो नहीं रखती हूं, लेकिन शुभकामनाएं जरूर दे सकती हूं। उन्होंने अहिंसा यात्रा के द्वारा देश के विभिन्न गांवों तथा शहरों का भ्रमण किया। लोगों के लोक कल्याण के बारे में जागृति लाई। आपने अपने प्रवचनों के द्वारा सामाजिक समरसता के महत्त्व को उजागर किया और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

यहां आदरणीय साधुगण और हमारी साध्वियां मौजूद हैं। मैं उन सबको प्रणाम करती हूं। आज जब हम अपने देश में एक ओर भ्रष्टाचार का वातावरण देख रहे हैं तो दूसरी ओर आध्यात्मिकता को लेकर समाज में जागरूकता लाने वाली ये महान हस्तियां भी कायम हैं। मैं समझती हूं कि यह देश के लिए बहुत सौभाग्य की बात है कि आप अपनी तपश्चर्या, कठिन व्रत और कठिन जीवन का आदर्श लोगों के सामने रखते हुए महानता प्राप्त की है। लोगों को आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देकर उनके चरित्र-निर्माण का काम आप कर रहे हैं। मैं समझती हूं कि हमारे लिए यह बहुत ही सौभाग्य की बात है।

सच देखा जाए तो समाज में अनाचार, दुराचार, व्यभिचाार, कुप्रवृत्तियों, कुप्रथाओं तथा अन्याय का दमन कर उन्हें नष्ट कर सामाजिक सद्‌भाव का वातावरण निर्मित करना एक अतिशय महत्त्वपूर्ण और जरूरी

बात है। जब हम हजारों-लाखों की संख्या में आचार्यश्री के विचार सुनने आते हैं तो उनसे प्रेरणा लेकर हमें यह नेक काम आरंभ करना, अपना नैतिक तथा सामाजिक कर्त्तव्य मानना चाहिए और खुद इसके लिए काम शुरू कर देना चाहिए। इसके लिए खुद साधु बनने की जरूरत नहीं। हर कोई साधु या साध्वी का जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। लेकिन साधु ने जो उपदेश दिया, उसका प्रचार-प्रसार करने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। हम गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी अच्छी बातें समाज में कर सकते हैं। यही प्रेरणा लेकर हम सबको यहां से जाना है।

भारत एक ऐसी प्राचीन भूमि हैं, जहां विश्व के अनेक धर्मों की उत्पत्ति हुई है। जैन धर्म भी उनमें से एक है। जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक सभी तीर्थंकरों ने अच्छा मनुष्य बनने का मार्ग दिखाते हुए यह शिक्षा दी कि मनुष्य और प्राणियों का जीवन अमूल्य है और साथ में यह भी बताया कि हमें अपने कार्यों और व्यवहार में यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा किसी भी जीव को किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुंचे। 'जीओ और जीने दो' का सिद्धान्त जैन धर्म की ही देन है। हमें इस सिद्धान्त को व्यवहार में उतारना चाहिए तथा सभी प्राणियों के प्रति करुणा, दया और सेवाभाव रखना बहुत जरूरी है। जैन धर्म में ऐसे ही एक श्लोक का अर्थ है--हे जिनेन्द्र ! मुझे बुद्धि दो कि मैं सभी प्राणियों से प्रेम करूं, सज्जनों से प्रसन्न रहूं, सभी दुखियों पर दया करूं और कलुषित जनों के प्रति सहिष्णुता रखूं।

इसी तरह हिन्दू धर्म में कहा गया है--

*सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।*

*सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभागभवेत्।।*

अर्थात केवल मनुष्य मात्र ही नहीं, प्राणिमात्र जिनमें जान है, वे सब सुखी हों। यह हमारे लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है, शिक्षा है।

भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख तत्त्व अहिंसा परमो धर्मः माना गया है। अर्थात अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। अहिंसक परंपरा का उच्चतम रूप हमें जैन जीवन-दर्शन में देखने को मिलता है। जैन धर्म में सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र को त्रिरत्न के रूप में अंगीकार किया गया है। इसी प्रकार सम्यक् चरित्र के अन्तर्गत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह--इन पांच व्रतों के पालन की शिक्षा दी गई है, जिनमें अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वास्तव में जैन परंपरा में अहिंसा जीवन की एक शैली है।

जब हम अहिंसा की बात करते हैं तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी का स्वतः ही स्मरण हो जाता है। उन्होंने सत्य व अहिंसा--इन दो प्रमुख सूत्रों के आधार पर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व किया। महात्मा गांधी ने जब सत्य और

अहिंसा के सिद्धान्तों को आधार बनाकर स्वतंत्रता आन्दोलन प्रारंभ किया तो उस समय विश्व में किसी ने सोचा भी नहीं था कि हम इस मार्ग से आजादी प्राप्त करने में कामयाब हो सकते हैं। परन्तु उन्होंने दुनिया को दिखा दिया कि इन मूल्यों को आधार बनाकर ही स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं और यह बड़ी बात सामने आई कि इन तत्त्वों में कितना सामर्थ्य है। समाज में शान्ति की स्थापना करने और खुशहाली लाने में हमें अहिंसा के महत्त्व को कभी भी नहीं भुलाना चाहिए। गांधीजी की दृष्टि में अहिंसा कायरों का नहीं, बल्कि साहसी व्यक्ति का अस्त्र है। मैं हिंसा की राह पर चल रहे लोगों से आग्रह करूंगी कि वे इस राह को छोड़कर अहिंसा के मार्ग को अपनाएं। जिन्होंने भी हिंसा के मार्ग का अनुसरण किया है, मैं उनका आह्‌वान करना चाहूंगी कि अहिंसा के महत्त्व को समझिए, इसकी ताकत को समझिए और अहिंसा का मार्ग आप भी अपनाइए। लोकतंत्र में चर्चा और आपसी विमर्श के द्वारा समस्याओं का हल निकालना सही और महत्त्वपूर्ण रास्ता है। वर्तमान विश्व परिदृश्य में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की बहुत आवश्यकता है। अहिंसा के महत्त्व को समझते हुए संयुक्त राष्ट्रसंघ ने राष्ट्रपिता महात्माजी के जनमदिवस २ अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मान्यता दी है, जो आज पूरी दुनिया ने माना है।

समाज में जो गरीबी, अज्ञान और सामाजिक कुरीतियां हैं, हमें उन्हें भी उखाड़ फेंकना होगा। नशाखोरी जैसी सामाजिक कुरीतियां और बुराइयां हमारे देश के विकास के लिए समस्याएं बनकर खड़ी हैं। नशाखोरी इन्सान की खुद की जिन्दगी को तो तबाह करती ही है, सारे कुटुम्ब की जिन्दगी को अस्तव्यस्त कर देती है। यह कहा जाता है--पहले इंसान दारू पीता है, गुटखा खाता है और फिर वही दारू उसको पी जाती है और गुटखा उसको खा जाता है। यह बहुत बड़ी समस्या है। इसके उन्मूलन के लिए समाज में जागरूकता लानी आवश्यक है। शराब और नशीले पदार्थों की लत युवाओं के लिए खतरा बनती जा रही है। इससे व्यक्तियों, परिवारों और समाज पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों के बारे में भी मैं चिंतित हूं। इसके दुष्प्रभावों के बारे में जागरूकता लानी होगी और इसके लिए साधु-संतों को ही नहीं, हम सबको मिलकर सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के कार्य को चुनौती के रूप में लेकर सामाजिक नजरिए और मानसिकता में बदलाव लाने के लिए कार्य करना होगा। मुझे यह जानकर विशेष प्रसन्नता हुई है कि इस महोत्सव में समाज के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें व्यसनमुक्ति अभियान चलाकर इन सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास भी शामिल है। राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण का काम हो रहा है, यह बहुत बड़ी बात है।

नशाखोरी के साथ-साथ बालिका भ्रूणहत्या जैसे निंदनीय कार्य भी समाज के लिए बहुत बड़ी समस्या हैं। बालिका भ्रूणहत्या हिंसा का एक वीभत्स रूप है। इसकी रोकथाम के लिए तत्काल कदम उठाए जाने की जरूरत है। बालिका एक बोझ है--यह मानसिकता वास्तव में दहेज के कारण पैदा हुई है। दहेज बालिकाओं को मार रहा है और प्रेम तथा स्नेह जैसी भावनाओं को समाप्त कर रहा है। अब समय आ गया है कि इस स्थिति में बदलाव हो और इस मुहिम में खासकर पुरुषों और महिलाओं को और युवकों को आगे आना होगा। इसके साथ ही मानवता के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए पर्यावरण और वृक्ष संरक्षण का काम भी अतिआवश्यक है। उम्मीद है कि आचार्यश्री से प्रेरणा लेकर आप सभी इस महत्त्वपूर्ण काम में प्रवृत्त होंगे।

आज जो बात बोली जाती है, समाज में हम उसे देख रहे हैं। भ्रष्टाचार की बात हो रही है, कदाचार की बात हो रही है, चरित्र निर्माण के अभाव में हमें ये सब दिखाई दे रहा है। अगर अच्छा समाज हमें निर्मित करना है तो चरित्र निर्माण के लिए भी काम करना होगा। अच्छे संस्कार अच्छे जीवन के लिए जरूरी हैं और चरित्र-निर्माण अच्छे व्यक्ति और अच्छे समाज के लिए जरूरी है। आप सबकी मेहनत से समाज में यह बदलाव आएगा, मनुष्य में बदलाव आएगा। लालच की भावना चाहे वह किसी भी प्रकार की हो, जब व्यक्ति के मन से निकल जाएगी और अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक होकर सद्‌भाव के साथ हर व्यक्ति काम करने लगेगा तो हमें जो बातें आज दिखाई दे रही हैं, वे खुद-ब-खुद कम होती दिखाई देंगी। इसके लिए जो काम आज महाश्रमणजी कर रहे हैं, मैं आपका सम्मान करती हूं। यह जागरूकता बहुत बड़ी बात है। केवल जैन समाज के लिए ही नहीं, पूरे समाज के लिए काम करने की जरूरत है। जहां-जहां लत है, जहां-जहां नशा है, जहां-जहां बेईमानी, भ्रष्टाचार और अनैतिकता है, ऐसी जगह हमें काम करना होगा। महाप्रज्ञजी से मैं कई बार मिली हूं। उनसे चर्चा करने का भी सौभाग्य मिला और मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि महाश्रमणजी उन्हीं का कार्य लेकर आगे चल रहे हैं। मैंने सोचा कि मैं भी जाकर आपके बीच शामिल होऊं। मुझे यह जानकर बहुत खुशी है कि अत्यन्त उत्कृष्ट, अत्यन्त पवित्र, अत्यन्त निर्मल, अत्यन्त विधायक और अत्यन्त आवश्यक काम के लिए आप सब यहां आए हैं। यहां से प्रेरणा और सद्‌भावना लेकर हमें समाज के हर तबके के लिए काम करना है।

हमारे देश में जो गरीबी, भूख और अस्वस्थता है, उसको भी मिटाना है और यह हम सबकी जिम्मेदारी है। इसलिए में आप सबसे आह्‌वान करूंगी कि बहुत अच्छा मौका है, अच्छा क्षण है। हम यहां से प्रेरित होकर समाज के लिए, अपने जीवन के लिए कुछ क्षण देकर अच्छा काम कर पाएं तो मैं आप सबके लिए यही कहूंगी कि मुझे यहां आकर बहुत प्रसन्नता हुई और मुझे विश्वास है कि आचार्यजी के प्रयत्नों से विश्व में शान्तिपूर्ण समाज के निर्माण में मदद मिलेगी। अमृत महोत्सव की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं और सभी उपस्थित लोगों के सफल भविष्य के लिए मंगलकामनाएं।

# खेलों से दूर होते बच्चे

डॉ. विनोद गुप्ता

कहा जाता है कि खेलना हर बच्चे का मूलभूत अधिकार है। लेकिन कितने बच्चों को यह अधिकार मिल पाता है? देश के 6 बड़े शहरों में किए गए एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि सिर्फ 25 प्रतिशत बच्चे ही घर से बाहर खेल पाते हैं। उनके खेलने के बीच सबसे बड़ी बाधा खुद उनके माता-पिता हैं।

निकलोडियन इंडिया द्वारा किए गए सर्वेक्षण 'प्ले लाइफ' के नतीजे आंखें खोल देने वाले हैं। 39 प्रतिशत बच्चे कभी भी घर से बाहर नहीं खेलते हैं। वास्तव में घर से बाहर जाकर खेलना बच्चों की दैनिक गतिविधियों में आखिरी नंबर पर है। औसत साप्ताहिक दिनों में 7-2 घंटे पढ़ाई करने के बाद बच्चे घर के बाहर केवल 16 मिनट ही खेले।

सर्वेक्षण के अनुसार लगभग सभी बच्चों ने प्रतिदिन टेलीविजन देखा और पढ़ाई की, लेकिन केवल 25 प्रतिशत बच्चों को ही घर से बाहर जाकर खेलने का मौका मिला। रोजाना घर से बाहर खेलने नहीं जाने वाले 75 फीसदी बच्चों में से 38 प्रतिशत बच्चों के माता-पिता उन्हें रोज घर से बाहर जाने की अनुमति नहीं देते।

माता-पिता द्वारा बच्चों को बाहर खेलने की अनुमति नहीं दिए जाने के तीन प्रमुख कारण सामने आए हैं बच्चों के लिए खेलने का उपयुक्त स्थान नहीं होना, असुरक्षित खेल स्थल और पढ़ाई का बोझ।

महानगरों में खेल मैदान या खेलने की जगह ही नहीं होती। गली-मुहल्लों में भी इतना ट्रैफिक रहता है कि बच्चे खेल नहीं पाते। यदि कहीं खेल मैदान या खेलने की जगह हुई भी तो वह उनके घर से काफी दूर होती है जहां बच्चे अकेले जा-आ नहीं सकते।

बच्चों पर हद दर्जे का पढ़ाई का बोझ है। माता-पिता की अपने बच्चों से अपेक्षाएं काफी ऊंची हैं। हर माता-पिता अपने बच्चे को कलेक्टर बनाना चाहता है और इसके लिए निरंतर पढ़ने हेतु बच्चे के पीछे पड़ जाता है। बच्चे में योग्यता या प्रतिभा हो या न हो, पर उसे अपने अभिभावकों की खातिर दिन-रात पढ़ाई करनी पड़ती है। स्कूल वाले भी कम नहीं हैं। वे बच्चे को इतना अधिक गृह कार्य देते हैं कि उसे पूरा करने में ही समय निकल जाता है। ऐसे में वे कब खेलें? यदि वे ट्यूशन पर जाते हैं तो उन्हें खेलने जाने के लिए समय मिलने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

बच्चों की स्वयं की अभिरूचि भी खेलों के प्रति नहीं रही। कम्प्यूटर, इंटरनेट, वीडियो गेम्स, टीवी आदि ने बच्चों को बुरी तरह जकड़ रखा है। जब भी उन्हें समय मिलता है वे कम्प्यूटर या वीडियो गेम्स खेलते हैं या फिर टीवी पर कार्टून नेटवर्क देखते हैं। इंटरनेट का इस्तेमाल भी बच्चे खूब कर रहे हैं। माता-पिता भी बच्चों की इन आदतों से बड़े खुश होते हैं और इसे आधुनिकता का प्रतीक मानते हैं।

कुछ बच्चों को कच्ची उम्र में ही पारिवारिक जिम्मेदारियां वहन करनी पड़ती हैं। घर का काम या अन्यत्र रोजगार करने की वजह से उन्हें खेलने का समय ही नहीं मिल पाता है। जिन घरों में सोतेली मां या सौतेला पिता होता है, वहां दिन भर बच्चों से काम लिया जाता है तथा खेलने के अवसर छीन लिए जाते हैं।

बच्चों का स्वस्थ शारीरिक और मानसिक विकास होने के लिए उनका मैदानी खेलों से जुड़ना बहुत जरूरी है। ये खेल कुछ भी हो सकते हैं। जैसे--क्रिकेट, हॉकी, कबड्डी, खोखो, फुटबॉल आदि। देशी या स्थानीय स्तर के मैदानी खेलों से भी वे जुड़ सकते हैं। खेल ऐसा होना चाहिए जिससे उनका पूरा शरीर हरकत में आए या जिसमें खूब भागदौड़ करनी पड़े। क्योंकि यह उनका सर्वोत्तम व्यायाम है। बच्चे अन्य कोई व्यायाम नहीं करते, न ही सुबह की सैर पर जाते हैं। ऐसे में उनका मैदानी खेल खेलना नितांत आवश्यक है।

यदि बच्चे खेलते हैं तो इससे उनका स्वस्थ मनोरंजन होता है। पढ़ाई के साथ-साथ यह भी जरूरी है। इससे पढ़ाई के प्रति नीरसता दूर होती है और वे मन लगाकर पढ़ते हैं। खेलने से बच्चों का तनाव भी दूर होता है। उनमें खेल के साथ-साथ टीम भावना विकसित होती है जो उन्हें सामाजिक बनाती है।

बच्चों में मोटापा तेजी से बढ़ रहा है जिसका कारण उनकी शारीरिक गतिविधियां कम होना है। यदि बच्चों को खेलने के भरपूर अवसर दिए जाते हों तो वे मोटापे से दूर रहकर चुस्त दुरुस्त रहेंगे। बच्चों में मोटापा कम आयु में ही उन्हें हाई ब्लड प्रेशर, डायबीटिज तथा हृदयरोग जैसी बीमारियों की गिरफ्त में ला देता है।

अभिभावकों को अपनी सोच बदलना चाहिए। खेल को व्यर्थ की चीज या समय जाया करने वाली गतिविधि न समझें अपितु उसका महत्व समझते हुए बच्चों को इसके लिए प्रेरित करें, न कि डांट कर घर में कैद करें। बच्चों को भी अपने बेहतर भविष्य के लिए मैदानी खेलों से जुड़कर गर्व का अनुभव करना चाहिए।

***43/2, सुदामा नगर, रामटेकरी,***
***मंदसौर (म.प्र.) 458001***

# फैल रही है गुटखे की महामारी

**प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा**

तम्बाकू-सेवन से विश्व भर में प्रति वर्ष लगभग 40 लाख व्यक्तियों की मृत्यु होती है, जिसमें लगभग दस लाख व्यक्ति केवल भारत के होते हैं। सम्पूर्ण भारत में तम्बाकू का किसी न किसी रूप में प्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। बीड़ी सिगरेट के पैकिटों पर लिखी वैधानिक चेतावनी भी बेअसर सिद्ध हो रही है। विशेषज्ञों के अनुसार सिगरेट के धुएं में कुल 40 हजार विषैले तत्त्व होते हैं, जिनमें 438 तत्त्व कैन्सर को बढ़ाने वाले होते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि धूम्रपान करने वाला व्यक्ति अपने अन्दर केवल 15 प्रतिशत धुआं ले जाता है। शेष 85 प्रतिशत धुआं वह बाहर ही उछाल देता है, जो उसके आसपास के वातावरण को विषाक्त कर देती है। इससे धूम्रपान करने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त उसके परिजनों, मित्रों और आसपास के अन्य निरीह जनों के फेफड़ों में भी घातक विष भर जाता है।

भारत सरकार द्वारा निर्धारित की गयी नयी व्यवस्था के अनुसार अब तम्बाकू उत्पादकों के पैकिटों के 40 फीसदी हिस्से पर तम्बाकू के जीवन के लिए खतरनाक होने के नारे के साथ ही उसके प्रतीक के रूप में चित्र भी बना होता है। भारत सरकार द्वारा यह निर्णय सर्वोच्च न्यायालय के दबाव के आधार पर लिया गया है, मगर इससे धूम्रपान करने वालों पर कोई विशेष प्रभाव दृष्टिगत नहीं हो रहा। धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए घातक है, यह तो पैकिटों पर पहले ही लिखा रहता था, जिस पर धूम्रपान करने का अभ्यस्त व्यक्ति शायद ही कभी विचार करता होगा। अब उसका आकार बढ़ने और चित्र छपने से भी कोई बड़ा प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। इन दिनों तम्बाकू का उपयोग करने वालों में सिगरेट से भी अधिक गुटखे लोकप्रिय हो रहे हैं। आज लगभग हर पनवाड़ी की दुकान पर हमें गुटखों के पाउचों की अलग-अलग किस्मों की बड़ी-बड़ी लड़ियां लटकती नजर आती हैं। पटरियों पर बैठे अनेक छोटे दुकानदार ऐसे भी हैं जो केवल गुटखे बेचने का ही धन्धा करते हैं। आमतौर से छोटे बड़े आदमी की जेब में हमें अक्सर उसके स्तर के अनुरूप सस्ता या महंगा गुटखा मिल जाता है, जिसे वह बस में, ट्रेन में, अपने स्वयं के वाहन में या खुली सड़क पर बिना किसी झिझक के जेब से निकालता है और उसे अपने हाथ से या दाँतों से काटकर मुंह में डाल लेता है।

गुटखे के निर्माण में खुशबूदार सुपारी, चूना तथा शरीर के लिए नुकसानदायक कुछ अन्य पदार्थों को शामिल किया जाता है। इसके साथ ही मरी हुई छिपकलियों का चूर्ण भी यत्र-तत्र इसमें मिलाये जाने की जानकारी अनेक बार पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी है। गुटखा बनाने वाले कारखानों पर डाले गये छापों में इस प्रकार की मरी हुई सूखी छिपकलियां बड़ी मात्रा में उपलब्ध भी हुई हैं। मरी हुई छिपकली जहरीली तो होती ही है साथ ही इससे व्यक्ति को गुटखे की उसी तरह आदत भी पड़ जाती है, जिस प्रकार अफीम, चरस, गांजा तथा स्मैक आदि की पड़ती है। यह भी आश्चर्य की बात है कि अपने को शाकाहारी कहने वाले अनेक व्यक्ति भी छिपकली के पाउडर से तैयार किये गए इन गुटखों से कोई परहेज नहीं करते।

शुद्ध पान-मसाला इन दिनों बाजार से धीरे-धीरे गायब होता जा रहा है। उसके स्थान पर गुटखे को ही पान मसाला या आम बोलचाल की भाषा में पुड़िया के रूप में बेचा जा रहा है। प्रारम्भिक दौर में गुटखे के सेवन से आवाज परिवर्तन खांसी, मुंह का न खुलना तथा उससे खाना खाने में कठिनाई जैसी परेशानियां पैदा होती हैं। बाद में गुटखे में गैम्बियर नामक रसायन, इसका प्रयोग करने वाले के मुंह, जीभ, तालू, गला, फेफड़े और मूत्राशय तक को कैन्सर से ग्रस्त कर देता है। कानपुर के जे.के. कैन्सर संस्थान के निदेशक और कैन्सर-विशेषज्ञ डॉ. कमल साहनी के अनुसार चार या पांच पाउच गुटखा रोज खाना किसी भी व्यक्ति को कैन्सरग्रस्त करने के लिए पर्याप्त है। डॉ. साहनी का कहना है कि जर्दे के पान या साधारण तम्बाकू से 20-25 वर्षों में किसी व्यक्ति में खतरनाक स्थिति बनती है जबकि गैम्बियरयुक्त गुटखा चार-पांच वर्षों में ही अपना असर दिखलाना शुरू कर देता है। मुम्बई के टाटा संस्थान के कैन्सर-विशेषज्ञ डॉ. पी.सी. गुप्ता के अनुसार गुटखे के सेवन से उत्तर भारत में 'ओरल सब्मयुकोहास फाई बोरियिस' नामक बीमारी महामारी के रूप में फैल रही है, जिससे मरीज का मुंह पूरी तरह खुल नहीं पाता और इससे केवल स्ट्रा द्वारा ही मरीज को पौष्टिक पेय देना सम्भव हो पाता है। ब्रिटेन की 'एक्शन ऑफ स्मोकिंग एंड हैल्थ' नाम के एक स्वैच्छिक संगठन ने चेतावनी देते हुए कहा है कि विकसित देशों में धूम्रपान सम्बन्धी कठोर नियम बन जाने के बाद अब तम्बाकू कम्पनियां अपने माल की खपत के लिए विकासशील तथा अविकसित देशों को अपना निशाना बना रही हैं।''

गुटखे के प्रयोग के सन्दर्भ में हमारे यहां विशेष चिंतनीय स्थिति यह है कि इसका प्रयोग हमारी युवा पीढ़ी में अधिक हो रहा है। ऐसा लगता है, जैसे कोई अत्यन्त प्रभावशाली माफिया गुट जानबूझकर हमारी युवा पीढ़ी को नकारा करने पर तुला हुआ है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार इस समय देश में तम्बाकू उत्पादकों का उपभोग तेजी से बढ़ता जा रहा है। इस उपभोग में हमारा देश

पहले तीसरे नम्बर पर था। अब यह बढ़कर चीन के बाद दूसरे नम्बर पर आ गया है। इसके विपरीत तम्बाकू उत्पादन में भारत का पूर्ववत तीसरा ही स्थान बना हुआ है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में इस समय लगभग 20 करोड़ लोग तम्बाकू उत्पादों का नियमित सेवन करते हैं, जिनमें लगभग पांच करोड़ महिलाएं और 15 वर्ष से कम आयु के लगभग 50 लाख बच्चे शामिल हैं। इनमें आधे से अधिक गुटखे के शौकीन हैं। राजस्थान की राजधानी जयपुर में किये गए एक सर्वेक्षण के अनुसार यहां 55 प्रतिशत पुरुष और 10 प्रतिशत महिलाएं गुटखे की अभ्यस्त हो चुकी हैं। 'अस्थमा केयर सोसायटी' के अनुसार इन लोगों में अधिकतर 10 से 30 वर्ष की आयु के बीच के हैं। गुटखे के आदी इन लोगों में विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में अध्ययनरत 85 प्रतिशत छात्र तथा 40 प्रतिशत छात्राएं शामिल हैं। विशेष चिंता की बात यह है कि मदिरापान की तरह अब हमारा युवावर्ग गुटखे को भी अपना स्टेटस-सिंबल समझने लगा है। एक अन्य सर्वेक्षण के अनुसार गुटखे से मौज-मस्ती की शुरुआत करने वाले ये ही युवा बाद में सिगरेट, गांजा, चरस, हेरोइन तथा स्मैक आदि के शौकीन हो जाते हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि तम्बाकू उत्पादों के कुल विक्रय से कर के रूप में सरकार को 24 हजार करोड़ रुपए प्राप्त होते हैं, जबकि तम्बाकू जनित खतरों से निपटने के लिए सरकार को इससे कहीं अधिक लगभग 27 हजार करोड़ रुपये व्यय करने पड़ते हैं। इससे तम्बाकू उत्पादों से होने वाली आमदनी की चर्चा व्यर्थ है।

गुटखे तथा अन्य तम्बाकू उत्पादों से उत्पन्न यह स्थिति अत्यन्त गंभीर है, मगर यह खेदजनक है कि इस तरफ अभी तक कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। वास्तव में अरबों रुपये वाली ताकतवर तम्बाकू लॉबी का समाज, राजनीति और प्रशासन पर इतना जबर्दस्त प्रभाव है कि वह धुंआधार प्रचार तथा अन्य साधनों से किसी को कुछ कहने का अवसर ही नहीं देती। गुटखे के प्लास्टिक पाउच पर न्यायालय द्वारा लगाये गये प्रतिबन्ध से भी इस जहर का विक्रय रुकने वाला नहीं है। आवश्यकता इसके निर्माण को रोकने की है।

हालात की गंभीरता को देखते हुए यह आवश्यक है कि गुटखे के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर जन-आन्दोलन शुरू किया जाय और केन्द्र सरकार पर दबाव डालकर इसके निर्माण, व्यापार और उपयोग पर सम्पूर्ण देश में प्रतिबन्ध लगाया जाय। यह प्रतिबन्ध लगाने से पहले प्रचार-माध्यमों द्वारा इसके विरुद्ध जन-जागरण किया जाय और इसके विज्ञापनों पर पूर्ण प्रतिबन्ध हो। गुटखे तथा अन्य तम्बाकू उत्पादों पर काफी ऊंचा कर लगाकर इन्हें इतना महंगा कर दिया जाय कि आम आदमी के लिए इस पर धन खर्च करना कठिन हो जाए। गुटखे तथा जर्दे से बनायी जाने वाली अन्य वस्तुओं से होने वाली हानियों के बारे में पाठ्य पुस्तकों में भी विस्तार से बतलाया जाना चाहिए, ताकि छात्र-छात्राएं प्रारंभ से ही इन चीजों से परहेज करने लगें। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि तम्बाकू के अभ्यस्त व्यक्तियों को तम्बाकू छोड़ने में आने वाली कठिनाइयों के निदान हेतु आवश्यक चिकित्सा-सुविधा भी निःशुल्क प्रदान की जाय।

***10/611, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)***

## राष्ट्र चिन्तन

◆ **''आप कहीं भी जाएं वातावरण में भ्रष्टाचार की गंध हर जगह मिलेगी। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि मानो भ्रष्टाचार कोई स्नातक डिग्री हो जिसे पाने के लिए हर कोई बेताब है।''** ये विचार हैं प्रसिद्ध क्रिकेट कमेंटेटर हर्षद भोगले के।

उपर्युक्त कथन को पिछले साल सी-फोर द्वारा 10 शहरों में किए गए सर्वे के विश्लेषण से भी बल मिलता है। सी-फोर ने भ्रष्टाचार के मुद्दे पर दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरू, कोलकाता, चेन्नै, पटना, लखनऊ, चंडीगढ़, भोपाल एवं हैदराबाद के नागरिकों से बातचीत की। रिश्वत देने के मुद्दे पर लोगों द्वारा किए गए रहस्योद्घाटन हैरतअंगेज हैं--

1. दो में से एक व्यक्ति ने स्वीकारा कि बच्चे का जन्म प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए रिश्वत दी।
2. तीन में से एक ने माना कि उसने स्कूल में दाखिले के लिए घूस दी।
3. तीन में से दो लोगों ने कबूला कि उन्होंने ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करने के जुर्म में चालान से बचने के लिए ट्रैफिक पुलिस की मुट्ठी गर्म की।
4. तीन में से दो ने कहा कि उन्होंने रिश्वत देकर ड्राइविंग लाइसेंस लिया।
5. आठ लोगों में से एक ने स्वीकारा कि उसने सेक्रेटरी या किसी बड़े अधिकारी को रिश्वत देकर सरकारी नौकरी या पोस्टिंग हासिल की।
6. पांच में से एक ने माना कि उसने मकान के अवैध विस्तार के लिए निगम अधिकारी को 'भेंट' दी।
7. तीन में से दो व्यापारियों ने माना कि उन्होंने सेल्स टैक्स चोरी के एवज में बिक्रीकर अधिकारी को घूस दी।

रिश्वत देने वाले के सामने दो स्थितियां होती हैं--1. या तो कोई व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा या व्यापारिक विवशताओं के कारण रिश्वत देता है या फिर रिश्वत देने का दूसरा कारण यह है कि व्यक्ति लोभी प्रकृति का है तथा ज्यादा से ज्यादा धन पाना चाहता है। दोनों ही स्थितियों में रिश्वत देने वाला भ्रष्टाचार को प्रेरित करता है और भारतीय न्यायिक प्रणाली के अंतर्गत दोषी है। अगर व्यक्ति ने मजबूरी में घूस दी है तो उसे उसका परिस्थितिजन्य साक्ष्य प्रस्तुत करना होगा जबकि दूसरी स्थिति में वह स्पष्टतः भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाला, षड्यंत्रकारी और प्रेरक माना जाएगा तथा दंड का अधिकारी होगा।

**नवभारत टाइम्स 30 मई 2011 से साभार**

*व्यंग्य*

# महंगाई की मार : देवों के द्वार

**रमेश कोठारी**

**मेरी यही सलाह है--जो मिले उसी में संतोष करो। और हां, औरों के प्रपंच में न पड़ो। कहने का मतलब यही कि महंगाई का हव्वा खड़ा मत करो। उसे सहज रूप से ओढ़ो। संयममय जीवन जीना सीखो। जिससे वह भारभूत न लगे।**

महँगाई डायन यत्र-तत्र-सर्वत्र अपना साम्राज्य फैलाती जा रही है। इससे न केवल आज मानव समूह त्रस्त है बल्कि दैव्य समूह भी संत्रस्त है। अतीत में नैवेद्य-द्रव्य के ढेर लगते थे और भण्डारे छलकते थे। ऐसे भण्डारों से अपेक्षा-कृतों को वक्त-वक्त पर प्रदान कर सेवाकार्य के एक पक्ष की पूर्ति की जाती थी। आज देव स्थानों में भक्तों की आवा-जावी तो सतत बढ़ती जा रही है। क्योंकि सांसारिक परेशानियां भी दुगुनी गति से बढ़ती जा रही है। अतः आस्था व विश्वास के साथ कुछ पाने की आस से देव-मन्दिरों में धोकना, पूजा-पाठ हवन करना, मान्यता-मानता रखना और अन्याय अनुष्ठान करना-करवाना आस्थाशीलों का क्रम हो गया है।

किन्तु स्वार्थी व भेजाबाज यह मानव जाति है। जहां कहीं वह अपने मुनाफे की बात सोच ही लेती है। इसलिए व्यवसायी व्यक्ति के लिये वास्तविक बयान किया है--इस शब्दावली में--

*''वाणियोविणजन विसरे, सुरगां में भी जाय।*

*साहिबसुं सौदो करे, (तो भी) टक्को-पीसो खाय।।''*

अतएव आज मनुष्य बड़ी भक्ति भावना से मंदिरों में जाता है। पर चढ़ावा-सामग्री को उसने आधा कर दिया है। क्योंकि दिन-रात 'द्रौपदी के चीर' की भांति बढ़ने वाली महंगाई से वह हैरान है। एक समय की रोटी-राशन जुटाने में भी कितने 'पापड़ बेलने' पड़ते हैं उसे। वास्तव में आज का मनुष्य बड़ा तनावपूर्ण जीवन जीता है--'चन्द टुकड़ों' के लिये। यह आम जनता की बात है। किन्तु, देव बिरादरी भी उपरोक्त नैवेद्य-द्रव्य में कटौती आने से प्रभावित और चिंतित है। वे कहां तक यह दृश्य निहारें। अतः निकल पड़े प्रसिद्ध देवालय के हनुमानजी अपनी गदा उठाकर। अपनी देव-सोच के साथ एक ही छलांग में पहुंच गये--राज्य के आपूर्ति मंत्री के पास। अपने कार्यालय में पूजनीय हनुमान दादा को देख, मंत्रीजी हड़बड़ा कर उठ खड़े हुए और बोले--जय हनुमान दादा। आज आप हमारे द्वार पर? वक्त-वक्त पर हम आपके द्वार पर आते हैं।

हां मंत्रीजी! यह कलियुग है। कभी-कभी 'उल्टी गंगा भी बहती है।' यानी कभी 'राजा के यहां रंक तो कभी रंक के यहां राजा।' जब तुम संत्री थे तब हमारे द्वार पर दौड़-दौड़ कर आते थे। अब मंत्री बन गये हो तो जनता की तरह हमें भी तुम्हारे द्वार खटखटाने पड़ते हैं। यह तो गनीमत है कि आज तुम ऑफिस में मिल गये, नहीं तो तुम्हें कहां-कहां मुझे ढूंढना पड़ता?

अरे दादा! ऐसी कोई बात नहीं है। हम तो जनता के सेवक हैं। हां, अब आप बताइये आपकी समस्या क्या है? हम हाजिर हैं--आपकी खिदमत में। अरे हां, हनुमान दादा, सॉरी! हम तो भूल ही गये। बताइये दादा, आप क्या लेंगे ठंडा या गरम?

ओ! मंत्री महोदय यह आतिथ्य-वातिथ्य की औपचारिकता को छोड़ो। मूल मुद्दे की बात यह है कि आज व्यक्ति-व्यक्ति में, घर-घर में, परिवार-परिवार में, गाँव-गाँव में, शहर-नगर में ही नहीं सारे देश में महंगाई की चर्चा जोरों पर है। बेचारे! लोगों को अपनी घर-गृहस्थी का राशन-पानी जुटाना 'टेढ़ी खीर' हो गया है। ज्यों-त्यों कटौती कर वे अपना गुजारा करते हैं। इसीलिये हमारे आलयों में चढ़ावे की चीजों पर भी सीधा असर पड़ रहा है। मंत्रीजी! आप समझ गये होंगे कि महंगाई की मार हमारे द्वार पहुंच गयी है।

हां, हम तो देव हैं। लोगों व भक्तों की भावना और धूप-खुशबू की महक मात्र से अपने मन को मना लेते हैं। लेकिन ये हमारे भक्त जो महंगाई के कारण आपात स्थिति से गुजर रहे हैं। वे बड़े दुःखी हैं। उनकी शुद्ध-बुद्ध लेना हमारा फर्ज़ बनता है। वस्तुतः उनके दर्द को हम देख नहीं पा रहे हैं। बड़ी उम्मीद लेकर उपस्थित हुए हैं आपके पास। इसका आप अतिशीघ्र इलाज़ कीजिये। बस आपको तो आदेश ही जारी करना है--'जीवन जरूरियात की सामग्री पर छूट-छाट/राहत की घोषणा का।' यानी एक 'पंथ दो काज।' भक्त-पुजारी भी खुश और हम भी खुश।

हनुमानजी की फरमाइश जानकर मंत्रीजी का 'माथा ठनका' और धीरे से बोले--आपकी प्रस्तुति बिल्कुल ठीक है। परन्तु, हनुमानजी! ऐसे निर्णय हम राज्य के मुख्यमंत्री की सम्पत्ति से लेते हैं। ऐसा करिये न हम मुख्य मंत्री के पास चलें, वहां जो भी निर्णय होगा, फिर आगे का क़दम उठायेंगे। हनुमान दादा मंत्री के साथ पहुंच गये चीफ़ मिनिस्टर की ऑफिस में। हनुमानजी को कार्यालय में देखकर सभी कर्मचारी चौंक पड़े। अरे! यह कोई बहरूपिया यहां घुस आया है--सी.एम. के ऑफिस में? मगर साथ में आए खाद्य मंत्री ने स्पष्ट कर कहा--सचमुच में ये हनुमान देव ही हैं। उनके आने के मक़सद के बारे

में भी मंत्रीजी ने खुलासा किया। तब सभी संत्री, तंत्री और स्वयं मुख्यमंत्री उनके अभिवादन के लिये खड़े हो गये। बड़ी शिष्टता के साथ हनुमानजी का आदर-सत्कार किया। और पूछा--देवानुप्रिय! हमें विश्वास नहीं हो रहा है, यह अनहोनी आज होनी में कैसे बदल गयी? अच्छा हनुमान दादा, फरमाइये आपकी समस्या क्या है? क्या सेवा करें हम आपकी?

हां, मंत्रीजी सेवा-पूजा तो आप कभी-कभार देवालय में उपस्थित होकर कर लेते हैं। आज तो हम आपके द्वार सेवा लेने आये हैं। कुछ व्यथा-विपदा के साथ आये हैं। तदोउपरांत हनुमानजी ने उपरोक्त महँगाई वाली कहानी पुनः प्रस्तुत की। और उपसंहार स्वरूप कहा--हम भी जनता की भांति महंगाई की संक्रामक बीमारी से ग्रस्त हैं। क्योंकि हमारी आजीविका का स्रोत एक ही है--चढ़ावा और वह भी सूखता जा रहा है। राज शासन की धुरी आप थामे हुए हैं। कुछ ऐसा नुस्खा पेश करें जिससे 'सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।' तात्पर्य यही कि जन-मानस तृप्त व हमारा आना भी सार्थक।

मुख्य मंत्री महाशय को हनुमानजी की प्रस्तुति समीचीन लगी। पर मंत्रीजी ने निवेदन की शैली में हनुमानजी से कहा--हनुमान दादा! आप तो विघ्न-विनाशक, भीड़-भंजक, संकट-मोचक, पीड़-हर्ता और महान् अर्ध्य देव हैं। फिर इसी के साथ आप हैं--महाबली, पराक्रमी तथा पराकाष्ठा के नियन्ता, फिर यह सिफारिश!!!

मंत्रीराज! न यह मेरी सिफारिश है न और कुछ। आप इसे अन्यथा न लें। केवल सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के उद्देश्य के साथ उपभोक्ता सामग्री की कीमतें कम करने के लिये हम उपस्थित हुए हैं। यही साधारण-सी हमारी मांग है। ओ राजपुरुष! वैसे हम स्वयं शक्ति-सम्पन्न हैं। चाहे जिसे हिला सकते हैं, बिठा सकते हैं और उठा भी सकते हैं। विशेष परिस्थिति के बावजूद हम यहां आये हैं। आप जानते हैं यह दुषम काल है। सबकुछ यहां उल्टा-पुल्टा होना स्वाभाविक है। अब आप सेवा-सुश्रुषा, दान-दक्षिणा, भेंट-सौगात व तोहफा-उपहार कुछ भी समझें यह काम आपको करना है।

अन्ततः प्रशासन के प्रथम पुरुष ने युक्तिपूर्वक उत्तर दिया--देवानुप्रिय दादा! महंगाई की मांग को लेकर आपका यहां आना किसी अपेक्षा से जायज़ है। मगर हमारे लिये बड़ी दुविधा है--दादा। हम करें भी क्या? क्योंकि इसकी बुनियाद बड़ी लम्बी और गहरी है। जो देश की राजधानी से तकल्लुफ रखती है। जहां अधिशासन अधिपति लोकसत्ता के प्रधान अधिकारी बैठते हैं। मूलतः वहीं से यह महंगाई के रस्म-रिवाज की परिपाटी प्रारंभ होती है। इसीलिये हे देव! आप अविलम्ब पहुंचिये दिल्ली।

हनुमानजी राजतंत्रियों के वचन-वायदे एवं टालमटोल की भाषा समझ गये। किन्तु, 'मरता क्या नहीं करता' अर्थात् अन्तिम प्रयास करने का साहस किया और अपने आपको आश्वस्त करते हुए अपने देव विमान में आरूढ़ हुए और पहुंच गये दिल्ली विमान-पत्तन पर। हनुमान जैसे ही वहां विमान से उतरे कि दूसरा और तीसरा देव-यान वहां उतरता हुआ मालूम पड़ा। कुछ प्रतीक्षा के उपरान्त ज्ञात हुआ कि उन देव-यानों में क्रमशः शनि महाराज एवं भैरवदेव आये हैं। सहसा हनुमान का उनसे साक्षात्कार हो गया। भारत की राजधानी में पहुंचने का मुख्य कारण एक दूसरे ने जाना। और उन्होंने अपनी आपबीती आपत्तियों की भी अवगति प्रस्तुत की। उन्हें मालूम पड़ा कि हम 'एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं।' खैर! तीनों ही देव आपस में बतिया ही रहे थे कि हनुमान की दृष्टि सामने से पधार रहे श्रीराम पर पड़ी। दो कदम आगे बढ़कर, हनुमान ने भगवान् श्रीराम के चरण-स्पर्श किये। अन्य देव भी श्रीराम से आत्मीय भाव से मिले।

राम ने पूछा--पवन पुत्र! तुम यहां कैसे? और ये अन्य देवगण भी तुम्हारे साथ.....? हनुमंत ने कहा--प्रभो! आप तो घट-घट के ज्ञाता है। आपसे कोई बात ओझल नहीं है। फिर भी मैं अपनी मनो-व्यथा संक्षेप में अभिव्यक्त करता हूँ--

प्रभो! इस संसार में मानव बेचारे! दुःखी-दुःखी हैं। महंगाई, गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी आपाधापी और आपात स्थितियां जीवन में उलझन ही उलझन। इसलिये भगवन् उपरोक्त अनेक उलझनों में से एक महंगाई की समस्या को सुलझाने के लिये यहां की विशाल राजशाला के हम प्रत्याशी हैं।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम को भक्त हनुमान की भावना अथ से इति तक ध्यान में आ गयी। राम ने लम्बा गहरा निसांस छोड़ते हुए अपना अभिप्राय यों व्यक्त किया--देवानुप्रिय! आप भी मेरे जैसे भोलेराम लगते हो। यहां तो मोटी चमड़ी के महानुराज राज करते हैं। जिन पर ऐसी-वैसी दलीलों का कोई असर नहीं होता। तुम्हारी दाल गलने वाली मुझे नहीं लगती। क्योंकि यहां का पानी विशेष फीका व मलिन है। तुम लोग मेरी बात मानो और उल्टे पांव लौट जाओ। यही श्रेयस्कर है तुम्हारे लिये।

राम ने फिर ख़ास आपबीती कही--देखो, मुझे बीस साल हो गये, यहां के चक्कर काटते, धक्के खाते। एक छोटा-सा मसला था--मन्दिर-निर्माण का। वह भी मेरी निजी जन्म भूमि के परिसर में पुनः मन्दिर प्रतिष्ठापित करने का मामला था। गुत्थियों व ग्रंथियों के मायाजाल में ऐसे चक्रवात का रूप ले लिया कि मैं यहां के धक्के खा-खा कर थक गया। अब न्याय क्षेत्र से आधा-अधूरा निपटारा हुआ है। इसलिये हनुमंत यहां के चक्रव्यूह में फंसो मत और सीधे चले जाओ अपने आलय में। साथी देवगणों से भी मेरी यही सलाह है--जो मिले उसी में संतोष करो। और हां, औरों के प्रपंच में न पड़ो। कहने का मतलब यही कि महंगाई का हव्वा खड़ा मत करो। उसे सहज रूप से ओढ़ो। संयममय जीवन जीना सीखो। जिससे वह भारभूत न लगे। बस इसी परामर्श के साथ मैं अपनी बात को विराम देता हूं।

***666/2, वास्तु निर्माण सोसायटी***
***रंगमंच के सामने, सेक्टर-22***
***गांधीनगर - 382022 (गुजरात)***

**राजनेता और अफसरशाही के गठजोड़ से हर कोई त्रस्त है, दुःखी हैं और अत्याचार का किसी न किसी रूप में सामना कर रहा है। जो अधिकारी इस गठजोड़ का सदस्य नहीं बनता उसका इंजीनियर मनोज गुप्ता जैसा हश्र हो रहा है। फिर भी यदि न्यायपालिका, समाज और ईमानदार अधिकारी मिलकर ऐसे अपराधियों के खिलाफ मजबूती से खड़े हो जाये तो निश्चित ही राजनीति में अच्छी छवि वाले लोग होंगे।**

# अपराधिकरण की आग

**सुषमा जैन**

यदि देश के नेताओं ने अपनी नहीं बल्कि राष्ट्रहित की विचारधारा के अनुसार राजनीति का विस्तार किया होता तो आज सभी को भरपेट भोजन, स्वच्छ पानी, साफ-सफाई, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं सुलभ होती, क्योंकि अजादी के बाद साढ़े छः दशकों का समय समभाव समानता और सर्वसमावेशी विकास के लिए कम नहीं था। परन्तु देश के नेता आजादी को रसीले-सजीले स्वप्न पूरे करने और मौज-मस्ती करने का तोहफा समझ 'अपना भला तो जग का भला' की नीति पर ही चलने लगे। राजनीतिक दलों ने भी उन्हीं लोगों को प्राथमिकता दी जो उनके लिए अधिक से अधिक नोट और वोट जुटा सकें, उन्हीं लोगों को टिकट दिये जाते रहे जो येन-केन-प्रकारेण चुनाव में जीत हासिल कर सकें। चुनाव जीतने के लिए नेताओं ने मतदाताओं को डराने व मत-पत्र व पेटियों को छीनने के लिए अपराधियों का सहारा लिया और फिर अवसर पाकर अपराधी स्वयं ही राजनीति में प्रवेश कर गये जिसका परिणाम आज हम सबके सामने है कि राजनीतिक अपराधीकरण की प्राणहारक जड़ें केवल राजनीति को ही नहीं बल्कि देश की प्रत्येक लोकतांत्रिक संस्था की जड़ें कुतर रही हैं।

सेशन कोर्ट द्वारा पीडब्लूडी उत्तर प्रदेश के अधिशासी अभियन्ता मनोज गुप्ता हत्याकांड में औरेया के बसपा विधायक शेखर तिवारी तथा दिबियापुर के एसएचओ होशियार सिंह समेत दस लोगों को निर्मम हत्या का दोषी मानते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि जहां एक ओर अपराधीकरण अपने खूनी पंजे गाडते हुए सम्पूर्ण सत्ता पर काबिज होता जा रहा है वहीं दूसरी ओर पुलिस अपनी छवि में सुधार के चाहे कितने भी दावे करे, मगर सच्चाई यह है कि वह सत्ता दल के नेताओं के दबाव में कदमताल ठोकते हुए निर्दोषों पर कहर बरपाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है। इंजीनियर मनोज गुप्ता की हत्या इसलिए की गयी क्योंकि वे औरेया के ठेकेदार आर.के. वाजपेयी के कुछ बिलों का भुगतान बिना काम पूरा हुए नहीं कर रहे थे। 21 दिसम्बर 2008 को ठेकेदार ने विधायक शेखर तिवारी तथा अन्य अभियुक्तों के साथ फर्जी बिलों पर हस्ताक्षर के लिए मनोज गुप्ता के घर जाकर धमकी दी। मनोज के इंकार करने पर सभी अभियुक्तों ने उसे 23.24 दिसम्बर की रात में उसकी पत्नी के सामने करंट लगाकर बेरहमी से पीटा तथा उसे उठाकर थाने के आगे फेंक दिया। जहां रही-सही कसर थानेदार ने पूरी कर दी और उसने मनोज को सुरक्षा देने की बजाय उस पर कहर बरपाया जिससे उसकी मृत्यु हो गयी।

अकेले मनोज गुप्ता ही नहीं बल्कि उन जैसे अनेक ईमानदार सरकारी अधिकारी सत्ता के मद में चूर जन-प्रतिनिधियों की कुपित दृष्टि का शिकार बन चुके हैं। एक के बाद एक ताबड़तोड़ सरकारी अधिकारियों की लगातार हो रही हत्याएं क्या इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए नाकाफी है कि जिन लोगों के स्वच्छ और स्वस्थ प्रशासन देंने की कसमें खाई थीं वे ही अब तानाशाह बनकर स्वयं को पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और अपराध के लिए दण्ड विधान से ऊपर समझने लगे हैं? कहीं दूर-दराज के क्षेत्रों में नहीं बल्कि प्रदेश की राजधानी में सरेआम दो-दो सीएमओ का मारा जाना और उनकी हत्याओं का राज तक न खुल पाना क्या यह स्पष्ट नहीं करता कि अपराधिक तत्वों और हिंसक घटनाओं को बढ़ावा दिया जा रहा है तथा खाकी वर्दी भी उनका साथ बखूबी निभा रही है? सभी राजनीतिक दल अधिकतर यह वादा करते हैं कि उनके यहां अपराधिक इतिहास और छवि वाले नेताओं के लिए कोई स्थान नहीं है। फिर आखिर क्या कारण है कि दिन-प्रतिदिन अपराधिक तत्वों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। क्यों?

अपराधिक प्रवृत्ति वाले लोगों के

राजनीति में प्रवेश पर लगाम नहीं कस पा रही है? असलियत तो यह है कि कोई भी राजनीतिक दल राजनीतिक अपराधिकरण रोकने के प्रति गंभीर नहीं है। कई ऐसे मामले भी प्रकाश में आये हैं जहां पार्टी ने पहले दागदार विधायकों को दण्डित किया और फिर अगले विधानसभा चुनावों में उनकी उम्मीदवारी पक्की कर दी। ऐसे व्यवहार से राजनीति में अपराधी प्रवृत्ति बढ़ेगी या घटेगी, इसका जवाब जनता को देना ही होगा। इस समय उत्तर प्रदेश विधानसभा में ऐसे लगभग

में 10 वर्ष की सजा अधिक मामलों में विधायक मुख्तार अंसारी टाडा और हथियार कानून के तहत 10 वर्ष की सजा और पांच लाख रुपये जुर्माना भुगत रहे हैं तो मिल्कीपुर के बसपा विधायक आनन्द सेन यादव शशि कांड में निरुद्ध हैं। बांदा के बसपा विधायक शीलू दुराचार मामले में निरुद्ध है तो डिबाई के बसपा विधायक भगवान शर्मा उर्फ गुड्डू पंडित कई मामलों में आरोपी हैं। ज्ञानपुर के सपा विधायक विजय मिश्रा मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता पर हमले के आरोप में बन्द है तो बरेली के विधायक सुल्तान वेग वाहन चोरी तथा बिल्सी के सपा विधायक योगेन्द्र सागर दुराचार मामले में निरुद्ध है। शिकोहाबाद से निर्दलीय विधायक अजय राय होटल व्यवसायी को धमकाने में तथा कुंडा के निर्दलीय विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया अक्षय प्रताप सिंह को धमकाने के आरोप में निरुद्ध हुए। झांसी के सपा विधायक दीपनारायण सिंह यादव मारपीट के आरोप में बंद हुए। ऐसे अनेक मामले भी होंगे जिनमें सत्ता पक्ष के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज ही नहीं हुई होगी और अपराधी खुले घूम रहे होंगे।

इसी राजनीतिक अपराधिकरण के चलते सत्तापक्ष की आंखों का तारा बनने के लिए कई सरकारी अधिकारी सभी कायदे कानूनों की हदें पार कर पार्टी कार्यकर्ता की तरह तलवे चाट रहे हैं। ये बेईमान, जनविरोधी तथा अलोकतांत्रिक अधिकारी लोकसेवक के बजाय आका बनकर समाज में कहर ढा रहे हैं। हसन अली प्रकरण में आईएएस विजयशंकर पांडे का नाम तो आया ही है मगर थोड़ा पीछे देखें तो मुख्य सचिव रह चुकी नीरा यादव व अखण्ड प्रताप सिंह को भ्रष्टाचार के मामले में जेल तक जाना पड़ा। प्रदेश के 24 से अधिक आई.ए.एस. व पी.सी. एस. अधिकारी करोड़ों रुपये के खाद्यान्न घोटाले में आरोपी हैं। लगभग इतने ही आईपीएस और 104 पीपीए के खिलाफ पुलिस भर्ती घोटाले के मुकदमें दर्ज हैं। इससे पहले नोएडा भूमि घोटाले में 15 बड़े अफसरों की संलिप्तता उजागर हो ही चुकी है। कई अन्य आय से अधिक सम्पत्ति रखने, दसतावेजों में हेरफेर करने आदि के मामले में आरोपी हैं।

यही कारण है राजनेता और अफसरशाही के गठजोड़ से हर कोई त्रस्त है, दुःखी हैं और अत्याचार का किसी न किसी रूप में सामना कर रहा है। जो अधिकारी इस गठजोड़ का सदस्य नहीं बनता उसका इंजीनियर मनोज गुप्ता जैसा हश्र हो रहा है। फिर भी यदि न्यायपालिका, समाज और ईमानदार अधिकारी मिलकर ऐसे अपराधियों के खिलाफ मजबूती से खड़े हो जाये तो निश्चित ही राजनीति में अच्छी छवि वाले लोग होंगे।

***वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार***
***न्यू कृष्णानगर जैन बाग, वीरनगर,***
***सहारनपुर (उ.प्र.) 247001***

***अनुभवी व्यक्ति के पास जो ज्ञान मिलता है,***
***वह हजारों पुस्तकों में भी नहीं मिल सकता।***

**● आचार्य तुलसी ●**

***संप्रसारक :***

**एम.जी. सरावगी फाउंडेशन**

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

**● दूरभाष : 22809695**

*With Best Compliments from :*

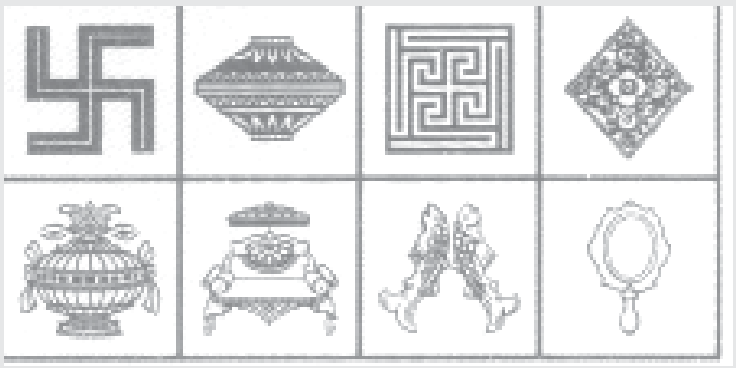

# बाबूलाल सुराणा

(पड़िहारा-गुवाहाटी)

## R.B. SURANA & SONS

1st Floor, Patodia Market
T.R.P. Road (Fancy Bazar)
**Guwahati** (Assam)
Tel. : 2545236, 2632560
Mobile : 09435015572

# स्वयं को देखिए

डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

**आत्म निरीक्षण के माध्यम से स्वयं की गरिमा को पहचानिए। जैसे ही किसी प्रतिमा का अंकुर आपको अपने अन्दर दिखलाई पड़े, उसको पुष्पित-पल्लवित होने का अवसर दीजिए। जो स्वयं को जान लेता है, परम तत्त्व को समझाना भी उसके लिए सरल है। ऐसे मनुष्य ही प्रभुसत्ता के दूत कहलाते हैं।**

दूसरों की बुराइयां देखने वाले लोग बहुत मिल जाएंगे, लेकिन अपनी ओर निहारने वाले लोग कम ही होते हैं। बहुत कम लोग मृत्यु के पूर्व अपने आपको पहचान पाते हैं। इसी प्रकार बहुत कम लोग अपने जीवन काल में संचित शक्ति प्रकट कर पाते हैं, प्रायः शक्तियों को साथ लिए मृत्युलोक चले जाते हैं। सत्य तो यह है कि मनुष्य के भीतर अनेकानेक गुप्त शक्तियां सुप्त पड़ी होती हैं, वह स्वयं में अपनी योग्यता-क्षमता का पता तक नहीं करते। वे विभूतियों के अभूतपूर्व ढेर की ओर आंख तक भी नहीं उठाते हैं। यह ठीक है कि बाहर की अनेकानेक वस्तुओं को जान-समझकर हम ज्ञानी कहलाए, परन्तु यह भी कम आवश्यक नहीं कि हम अपने को जानना-समझना भी सीखें। जो स्वयं पर दृष्टि डालने का प्रयास करता है, वही महान् बनता है। ऐसा मनुष्य संकट और बाधाओं पर विजय पाकर सदैव अपना पथ प्रशस्त करता है। यदि हम महापुरुषों का जीवन देखें तो स्वीकार करेंगे कि वे सदैव आत्म-निरीक्षण करते रहते थे। उनकी प्रत्येक भूल उन्हें कुछ नवीन सुधार की ओर प्रेरित करती थी। यदि हममें भी महान् बनने की ललक या चाहत उठे तो दूसरे को तुच्छ समझने या छिद्रान्वेषण की भावना त्याज्य करनी होगी। दूसरे को मूर्ख या तुच्छ समझने वाला मनुष्यत्व खो देता है। प्रयास हो कि दूसरों की त्रुटियां देखने की अपेक्षा अपनी कमियां तलाशें। उन्हें दूर करने हेतु अभी से जुट जाएं। अपनी शक्ति को पहचानने और उनका सदुपयोग करने में ही मनुष्य की अपनी अलौकिक शान है।

प्रभु ने हमें विभूति-विरासत सौंपते समय विश्वास किया था कि इनका दुरुपयोग कभी न होगा। उदर पूर्ति व संतान वृद्धि में अपनी अलौकिक सामर्थ्य को खो बैठने के लिए उतारू हो जाना न मात्र परमात्मा के प्रति विश्वासघात है, अपितु आत्मघात भी है। आज जो भी शक्ति हमारे भीतर है उससे कहीं अधिक शक्ति पहले से विद्यमान है। आवश्यकता है मात्र इस बात की कि स्वयं का महत्व समझें, शक्ति पहचानें व समय का उपयोग करें। जीवन का एक-एक क्षण बहुमूल्य है, उसे बरबाद न होने दें। जब भी जिस शुभ कार्य की इच्छा जागृत हो, उसे तत्काल उसी क्षण में प्रारम्भ कर दें। अपनी सम्पूर्ण शक्ति को उस कार्य में एकाकार कर दें। वह क्षण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगा, जिस पल आप यह अनुभव कर पायेंगे कि विश्व-वसुंधरा को इसकी प्रबल आवश्यकता है। मनुष्य के भीतर एक और महान् व्यक्तित्व समाहित रहता है, जो अन्य बाहरी व्यक्तित्व से अनेक गुना महान् होता है। जिस क्षण मनुष्य अपनी इस अलौकिक गरिमा की झलक पा लेता है, उसके पैर मानव से महामानव बनने के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए मचल उठते हैं। अब यह हो सकता है! कि आपका वर्तमान संकट-बाधाओं से बुरी तरह घिर गया हो। आपत्तियों ने आपके व्यक्तित्व का विकास न होने दिया हो, पर इससे घबराने की कोई बात नहीं? अग्नि की बढ़ती तपन का तात्पर्य है--सोने की और ज्यादा चमक होना। चन्दन की और अधिक घिसाई का भाव है--सुगन्ध का हर क्षण नया विस्तार। मनुष्य व्यक्तित्व भी कुछ ऐसा ही है, जब तक विपत्तियां इसे परेशान न करें, इसकी विभूतियों की चमक तीव्र नहीं होती। अतएव आत्म निरीक्षण के माध्यम से स्वयं की गरिमा को पहचानिए। जैसे ही किसी प्रतिमा का अंकुर आपको अपने अन्दर दिखलाई पड़े, उसको पुष्पित-पल्लवित होने का अवसर दीजिए। कौन जानता है कि कल के भविष्य में आप विश्व के उच्च कलाविद् बन जाएं, विद्वान-लेखक होने का गौरव प्राप्त करें। समाज आपको राजनेता के रूप में पाकर कृतकृत्य हो। जो स्वयं को जान लेता है, परम तत्त्व को समझाना भी उसके लिए सरल है। ऐसे मनुष्य ही प्रभुसत्ता के दूत कहलाते हैं।

***86/323 देवनगर,***
***कानपुर - 208003 (उ.प्र.)***

# पर्यावरण संरक्षण में जन भागीदारी

**भैरूलाल नामा**

ऐसा वातावरण जहां पेड़-पौधे, जीव, जन्तु, मृदा, वायु, जल, ताप, मानव-निर्मित सभ्यता आदि सम्मिलित रूप से पाये जाते हैं। मोटे रूप में सजीव व निर्जीव सभी वस्तुएं मिलकर पर्यावरण का निर्माण करती है। प्रकृति के सीमित साधन इनका हो नहीं अति दोहन ये हैं सृष्टि के आधार भावी पीढ़ी को मिले उपहार।

वैज्ञानिक तरक्की से ग्रस्त मानव प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर अंधा-धुंध दोहन में व्यस्त हैं। जैसे पेड़ों की कटाई, अवैध खनन, अधिक मात्रा में जल का दोहन, पुराने वाहनों से निकलता धुआ कल कारखानों का धधकता धुआं मिलों की नालियों में बहती गन्दगी। हमारी बढ़ती जनसंख्या प्रकृति से खिलवाड़ कर रही है। प्रकृति का शोषण कर रही है। आज मनुष्य पर्यावरण का शत्रु बन गया है। जबकि पर्यावरण ही मनुष्य का जीवन है। आज मनुष्य प्रकृति का शोषण कर रहा है। उसी से प्रदूषण होता है। हमारा पर्यावरण यदि प्रदूषित होता है तो उससे हमारे जीवन और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। प्रदूषण से हमारा पर्यावरण जहरीला बनता है। उद्योगों का कूड़ा-कचरा और विषैले विसर्जन पर्यावरण को प्रदूषित करने की होड़ में लगे हुए हैं। मानव निज स्वार्थ की पूर्ति करने के उद्देश्य से उद्योग धंधों के दीर्घायु होने की कामना करने लगा है। पर्यावरण की अनदेखी करने से शुद्ध हवा प्रकृति से घायल हो रही है। हमारे चारों ओर का वातावरण इतना दूषित हो गया है कि मनुष्य के स्वयं के प्राण संकट में हैं। एक ओर प्रकार का संकट भी हमारे सामने है। हम वायुमंडल में कार्बन डाई-ऑक्साइड गैस की मात्रा बढ़ाते जा रहे हैं। यह गैस सूर्य के ताप को पृथ्वी तक आने तो देती है किन्तु विकिरण द्वारा उसे लौटने नहीं देती है। परिणाम स्वरूप धीरे-धीरे वातावरण का सामान्य तापमान तीव्र गति के साथ बढ़ता जा रहा है। वैज्ञानिकों की धारणा है कि इस क्रम में बढ़ोतरी 40, 50 सालों में वातावरण का तापमान इतना बढ़ जायेगा जो जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों के लिए बहुत ही घातक साबित होगा। ऐसे तापमान में उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुवों की गैस परत वाली बर्फ भी पिघल जायेगी। जिससे पृथ्वी पर प्रलय की स्थिति आ सकती है।

हमारे वायुमंडल में ओजोन परत का क्षय होना इस दूषित पर्यावरण का प्रमुख कारण है। ओजोन परत सूर्य से निकलने वाली हानिकारक पैराबैंगनी किरणों से हमारी रक्षा करती है। यदि पर्यावरण इसी तरह असंतुलित होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब सम्पूर्ण ओजोन परत नष्ट हो जायेगी तथा सृष्टि के ऊपर विनाश के बादल मंडराने लगेंगे। आज पेड़ों की कटाई अंधा-धुंध हो रही है। जबकि पेड़ प्राणवायु ऑक्सीजन के भंडार हैं। वनस्पति पेड़-पौधे वर्षा में सहायक होते हैं। भूमि के अपरदन एवं कटाव को रोककर बंजर होने से भूमि की रक्षा करते हैं। आज पेड़ों की कटाई ने ही सूखे एवं अकाल की स्थिति पैदा कर दी है। अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि का कारण पेड़ों की अंधा-धुंध कटाई ही है। प्रकृति का संतुलन दिनोदिन बिगड़ता जा रहा है। वर्षा न होने से भूमि का जलचव टूट गया है। भूमि का जल स्तर काफी गहराई तक चला गया है। राजस्थान के कई जिलों में पेयजल समस्या विकट है। जिसमें बाड़मेर जिला अग्रणी है। यह समस्या पेड़ों की कटाई से आई है, जिसमें श्वास, अस्थमा, दमा, खांसी, मानसिक तनाव, आंख की बीमारियां, पेट की बीमारियां, हड्डी की बीमारियां तथा अन्य जानलेवा बीमारियों से ग्रस्त हैं। दस्त, पेचिस, हैजा, टाईफाइड इत्यादि बीमारियां जल प्रदूषण से बढ़ी हैं।

## प्रदूषण के स्वरूप

**जल प्रदूषण :** जल ही जीवन है, जल के परम्परागत स्त्रोत हैं नदी, तालाब, कुए, ट्यूबवेल, वर्षा का जल, पोखर आदि प्रदूषण ने सभी जल स्त्रोतों को दूषित कर दिया है। औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ हानिकारक पदार्थ, कचरा और रसायन और अपशिष्ट पदार्थ इस जल स्त्रोत में मिल रहे हैं। जल प्रदूषण से फैलने वाली बीमारियों से आज का मानव अपने आप को बचाने में असमर्थ हैं। हमें जल स्त्रोत में तथा इसमें आस-पास गंदगी नहीं डालनी चाहिये। कपड़ों को नदी तालाबों आदि में नहीं धोना चाहिये। पशुओं को अलग-अलग बाल्टी में पानी लेकर स्नान कराना चाहिये। पानी को फिल्टर करके उपयोग में लेना चाहिये ताकि जल प्रदूषण से फैलने वाली बीमारियों से बचा जा सके। उद्योगों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थ युक्त दूषित जल को निष्क्रिय करने के उपरांत ही विसर्जित किया जाना चाहिये।

**वायु प्रदूषण :** वायु ही जीवन है आज के इस वैश्वीकरण के युग में शुद्ध वायु का मिलना कठिन है। वाहनों, कल-कारखानों की चिमनियों से निकलने वाला धुआं और सड़ते रासायनिक युक्त कचरे ने वायु में जहर भर दिया है। घातक गैसों के रिसाव से स्थिति विकट होती जा रही है। इस स्थिति से बचने के लिए वायु को प्रदूषित करने वाले वाहनों पर नियंत्रण अति आवश्यक है। कल कारखाने, मिल, उद्योग-धंधे मानव बस्तियों से बहुत दूर होने चाहिये।

**ध्वनि प्रदूषण :** आज के परिवेश में ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। कर्कश और कर्ण भेदी ध्वनियां मानव के मानसिक संतुलन को बिगाड़ती हैं। मनुष्य की श्रवण शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है। आकाश में वायुयानों की ध्वनियां, वाहनों, रेडियो, टेप तथा लाउड-स्पीकर ध्वनि विस्तार का शोर सब मिलकर मानव को चिड़-चिड़ा स्वभाव वाला एवं बहरा बना देने पर तुले हुए हैं। वाहनों के ध्वनि उत्पादक हॉर्न (यंत्र) इस प्रकार के बने हों, जिससे ध्वनि प्रदूषित न हो, संगीत के

यंत्र, रेडियो, टेप, टेलीविजन तथा लाउड-स्पीकरों को मंद ध्वनि से बजाया जाये।

**विकिरण जनित प्रदूषण :** परमाणु विस्फोटों तथा परमाणु संयंत्रों से होते रहने वाले रिसाव आदि से विकिरण जनित प्रदूषण भी मानव को भोगना पड़ रहा है। पर्यावरण की समस्या से निबटने के लिए आम नागरिक को जागृत होना चाहिए। स्वयं सेवी संगठनों तथा सामाजिक संस्थाओं को आगे आना होगा। अब हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने का समय नहीं है। इस समस्या पर गंभीरता से विचार करना होगा।

**हमारा दायित्व**

सार्वजनिक स्थानों पर वृक्षारोपण के सम्बन्ध में पोस्टर लगाकर वृक्षारोपण का महत्व जनमानस तक पहुंचाना, जन जागृति एवं चेतना हेतु विद्यार्थियों को कागज की तख्तियों पर लिखकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाने एवं पर्यावरण दिवस पर रैली का आयोजन कर प्रचार-प्रसार करावें। ऐसे मौके पर संगोष्ठियों की भी योजना बनानी चाहिए।

**नारे और श्लोगन :**

1. पर्यावरण बचाइये, वृक्ष लगाइये।
2. पेड़ है तो ऑक्सीजन है, ऑक्सीजन है तो जान है, जान है तो जहान है।
3. निरन्तर करें प्रयास तभी होगा विकास।
4. समृद्ध भारत की पहचान पेड़ों से हरा-भरा हो जहान।
5. पेड़ लगाओ बादल लाओ वर्षा कराओ।
6. पेड़ हमें देते औषधि, जड़ी-बूटी, शीतल छाया।
7. पेड़ हमें देते फल, फूल और मेवे।
8. वृक्षों के सहारे मानव जीवन बचा हुआ है फिर भी मानव वृक्षों के लिए दानव बना हुआ है।
9. हरे पेड़ों की कटाई जीव हत्या के समान है।
10. पर्यावरण की सुरक्षा मानव समाज की सुरक्षा है।
11. मानव संस्कृति को बचाना है तो पर्यावरण संरक्षण करना है।
12. असाध्य रोग से बचना है तो वृक्ष लगाना जरूरी है।
13. जल की विशेषता-- अनेकता में एकता, जीवन का आधार सजीव अस्तित्व का सार, आइये बूंद-बूंद जल बचाएं अगली पीढ़ी के लिए इसे संरक्षित करें।
14. प्रकृति का उपहार, प्रदूषण मुक्त वातावरण, जनसंख्या स्थिरीकरण, घटकों में संतुलन रहित जीवन, स्वस्थ रहे तन मन।
15. दो कान है एक मुंह है, इसका मतलब साफ है, अधिक सुने कम बोले, यही जीवन का सार है।
16. संतुलित भोजन निरोगी तन, अनुशासित जीवन स्वस्थ मन, ये है स्वस्थ व्यक्ति के गुण।
17. विकट राह बने आसान, कार्य करे जब, निरंतर, मिलजुलकर लगन से, निष्ठा से, आत्म विश्वास से, तब होगा उत्तम परिणाम।
18. संतान एक - वृक्ष अनेक।
19. वृक्ष लगाओ अकाल भगाओ पेड़ लगाओ रेगिस्तान मिटाओ।
20. घर-घर में यह गूंजे नारा, प्रदूषण मुक्त हो देश हमारा।
21. नव जीवन की अलख जगायें, आओ हम सब पेड़ लगायें।

समय-समय पर पर्यावरण सम्बन्धी संगोष्ठी आयोजित कर पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डाले तथा प्रतियोगिताएं आयोजित कर विद्यार्थियों का रुझान स्वच्छ वातावरण के प्रति पैदा करना, विद्यालय में सघन वृक्षारोपण करवाना, विद्यालय पेयजल की स्वच्छता के लिए लाल दवा आदि समय-समय पर पेयजल में डलवाना, पानी के स्त्रोत एवं शौचालय आदि को स्वच्छ रखने की आदतों को छात्रों में रुझान विकसित करना प्रत्येक छात्र कम से कम 10 पेड़ लगावें एवं उनकी समुचित देखभाल करें। प्रदूषण से पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है। ऐसा आम नागरिकों को बतावें तथा जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण से होने वाले कुपरिणामों से समाज के लोगों को समझायें इससे कितने नुकसान हैं। उन्हें बताएं।

समाज में ऐसा वातावरण निर्माण करें और बतावें कि हरे वृक्ष की डाल व टहनियां न तो स्वयं काटें और न दूसरों को काटने दें जिस प्रकार से जीव-जन्तुओं में जीव होता है। कोई कांटा चुभने से पीड़ा या दुःख होता है उसी प्रकार पेड़-पौधों को भी पीड़ा होती है।

पर्यावरण का संरक्षण हम करेंगे तो वर्षा सही समय पर होगी। बाढ़ की समस्या का समाधान होगा भूमि का कटाव नहीं होगा। अनावृष्टि की समस्या नहीं रहेगी। किसी भी तरह का प्रदूषण नहीं होगा। तथा आम जनमानस में समय रहते मानव समाज को सचेत होकर पर्यावरण की रक्षा में जुट जाना चाहिये। पर्यावरण संरक्षण में जन सहभागिता भी आवश्यक है। जन साधारण को इस दिशा में शिक्षित किया जाये। उन्हें प्रदूषण के घातक परिणामों से अवगत कराते हुए उससे बचने के उपायों से अवगत करावें। वनों का अनियंत्रित दोहन रोका जाना चाहिये और नये वनों के विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिये। नगरों व गांवों में जहां-जहां स्थान मिले अत्यधिक वृक्ष लगाये जाने चाहिये। मानव निर्मित सामग्री का उपयोग पर्यावरण को संतुलित एवं संरक्षित रखते हुए करना चाहिए। आज की आवश्यकता है वृक्षारोपण क्योंकि वृक्षों ने हमेशा दिया ही है मानव को अपनी छाया, जड़ी-बूटियां, खुशबू, फल-फूल, लकड़ी, गोंद, वर्षा, औषधी लेकिन इसके बदले वृक्षों ने मानव से क्या पाया? वृक्षों के सहारे मानव जीवित बचा हुआ है लेकिन फिर भी मानव वृक्ष के लिए दानव बना हुआ है।

अरे मानव सोच जरा वृक्षों के अनगिनत उपकार है तुझ पर, तू भी कर कुछ उपकार, लगा भूमि पर वृक्ष अपार। हमारा दायित्व है कि हम प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में संयम बरते।

वन्य जीव-जंतुओं को, पादपों को, पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करे। जनसंख्या वृद्धि के द्वारा मानव ने प्राकृतिक पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाया है। अज्ञानतावश हुए इस नुकसान की भरपाई हमें ही करनी होगी आइये हम सभी वनों एवं वन्य जीवों की रक्षा के लिए पर्यावरण का संरक्षण करने का संकल्प लें और पर्यावरण स्वच्छ बनावें।

***नामा सदन, द्वितीय अंबेडकर कॉलोनी,***
***वार्ड सं. 26 बालोतरा - 344022 (राज.)***

## गीत

एक सपन रखा है सिरहाने
आंख जब लगे तो उठा लेना
एक गीत रखा है सिरहाने
उचटे जब नींद उसे गा लेना।

यह जीवन पगडंडी पानी की
कोई भी छाप नहीं छोड़ेगी
छोटी है दृष्टि की तुम्हारी नाव
सागर में कहां-कहां दौड़ेगी?

एक बूंद रखी है सिरहाने
हवा जब चले तो सुखा लेना
एक याद रखी है सिरहाने
मचलें जब मेघ तो बहा देना।

कोई घर-द्वार नहीं होता है
यह सबके साथ चला करती है
फूल-सी अहेरिन यह मनमौजी
शूलों के संग पला करती है।

एक गंध रखी है सिरहाने
अमलतास फूले तो बिछा लेना
एक चुभन रखी है सिरहाने
हरसिंगार चटखे तो गा लेना

क्या पता, ठिकाना क्या सांसों का
उड़ती पतंगों सी कट जाएं
माझे के संग सुती सब खुशियां
हाथों से फिसलें तो मिट जाएं।

एक छुअन रखी है सिरहाने
हौले से उसको सहला लेना
एक किरण रखी है सिरहाने
घिर आए तम उसे जगा लेना।

● **डॉ. भगवतीलाल व्यास**
***35, खारोल कॉलोनी, गली नं. 3,***
***फतहपुरा, उदयपुर (राजस्थान) 313004***

## व्यंग्य

विदेशी काला धन
अब, क्या करोगे इसे
देश में लाकर बाबा,
गर आ भी गया
तो, कई रास्तों से,
फिर उन्हीं के
भाई-भतीजों
बीबी, चमचों
रखैलों की जेब में,
समा जायेगा
मज़लूम, जनता के
हाथ भला,
क्या आयेगा!!!

## हायकू

(1)
दिलों में पत्थर
रगों में बारूद सा,
दौड़ता खून।
(2)
धूर्त औ' भ्रष्ट
आज की राजनीति,
कैसा दुर्भाग्य।
(3)
लक्ष्य से दूर,
सारे तीर कमान,
बिके शिखण्डी
(4)
जीवन मूल्य
हाशिये पे जीवन
बदहाल सा।
(5)
गल फिसला,
फिसल ही जायेगा
मुट्ठी से वक्त।

● **आनन्द बिल्थरे**
***प्रेमनगर, बालाघाट - 481001 (मध्यप्रदेश)***

# बेलगाम भुखमरी

**अशोक सहजानन्द**

पिछले अनेक सालों से सर्वोच्च न्यायालय यह कोशिश कर रहा है कि भूख और भुखमरी के अमानवीय संकट से निपटने में सरकारें (राज्य और केन्द्र) अपनी संवैधानिक भूमिका निभाएं।

''अदालत की चिंता यह देखना है कि गरीब, दरिद्रजन और समाज के वंचित-कमजोर वर्ग के लोग भूख और भुखमरी से पीड़ित न हो। इसे रोकना सरकार का एक प्रमुख दायित्व है, याने वह केन्द्र हो या राज्य। इसे सुनिश्चित करना नीति का विषय है, जिसे सरकार पर छोड़ दिया जाये तो बेहतर है। अदालत को बस इससे ही संतुष्ट नहीं होना चाहिए और उसे यह भी सुनिश्चित करना पड़ सकता है कि जो अनाज भंडारों, खासतौर पर भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में भरा पड़ा है वह समुद्र में डुबोकर या चूहों के द्वारा खाया जाकर बर्बाद न किया जाये।''

*(सर्वोच्च न्यायालय, 20 अगस्त 2001)*

सार्वजनिक वितरण प्रणाली की ताजा स्थिति यह है कि गरीबी रेखा से नीचे गुजर करने वाले परिवारों को उनकी आवश्यकता का एक तिहाई खाद्यान्न ही उपलब्ध हो रहा है। खुले बाजार के दबाव में सरकार ने न केवल सुनियोजित ढंग से सार्वजनिक वितरण प्रणाली को कम किया है, बल्कि इस प्रणाली को दुरुस्त करने के लिए कोई ठोस कदम भी नहीं उठाए हैं जिससे कि व्यवस्था सुधरे और गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाले परिवारों को उनके हक का राशन मिल सके।

लाल गेहूं के आटे से बनी हुई रोटी ठंडी होने पर पत्थर की तरह कड़क हो जाती है और इसका स्वाद चारे जैसा लगता है। गेहूं की गुणवत्ता इस तरह की है जिसे जानवर भी खाने को तैयार नहीं होते। परन्तु गरीब परिवार बेहद मजबूरी

में इसका उपयोग करने के लिए मजबूर है। जिससे गंभीर स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। धीमी मौत देती यह व्यवस्था अंततः कुपोषण के माध्यम से गरीबी खत्म करने के लिए गरीब को ही मिटा देने की साजिश है।

सरकारी योजनाओं के ढेर में दबकर आदमी मर रहा है पर योजनाओं का लाभ देश के करोड़ों लोगों को नहीं मिल रहा है जो हर रोज भूखे सोते हैं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से हजारों-करोड़ रुपया भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रहा है। स्पष्ट अर्थों में खाद्यान्न योजनाएं सरकारों की प्राथमिकता में नहीं हैं, उनका लक्ष्य खाद्यान्न का बड़ा बाजार विकसित करना है। सरकार का व्यवहार यह स्पष्ट करता है कि पोषण सुरक्षा की स्थिति हासिल करने में अभी उसकी कोई रुचि नहीं है। केवल उतने प्रयास किये जा रहे हैं, जिनसे व्यक्ति रातों-रात प्राण न त्यागें, लोग धीरे-धीरे भुखमरी के आगोश में सो जाएं। सरकार को केवल चुनाव-परिणामों की ही भाषा समझ में आती है। ऐसे में चुनावी रणनीतिकारों को अगले चुनावों में इसको अहम् मुद्दा बनाना चाहिए।

बड़ी-बड़ी घोषणाएं। चार लेन की सड़कें। कार-कम्पनियों के टैक्सों में छूट। मोबाइल कम्पनियों के लिए छूट। विदेशी विश्वविद्यालयों का आगमन। भई कमाल है-- हिन्दुस्तानी विश्वविद्यालयों के प्रांगण में भैंसे बांधी जाएंगी। यह पूंजी-निवेश की बात है। लेकिन गांव का आम-आदमी शिक्षा से कोसों दूर, अपनी फटी कमीज में, खाली पेट कम्प्यूटर चलाएगा। क्योंकि उसे रोटी की जरूरत नहीं, उसे तो आंकड़े खाना और आंकड़े पहनना है। आकड़ों का ही सब कुछ खेल है।

सबसे मजेदार बात विकास कार्यों की है। विकास खंड की है। कमीशन के कमाल से कोटेदार मालामाल। जनता के खून-पसीने से उपजा अनाज गोदामों में सड़ता रहेगा और उसे खाकर चूहें मोटे होते रहेंगे। उनसे भी बचा तो बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हमारा अनाज खरीदकर हमें ही महंगे दामों पर बेचेंगी और हम हाथ जोड़कर उनको अपना अन्नदाता कहने पर मजबूर होंगे। अन्न उगाएं हमारे किसान और अन्नदाता कहलाएं कोई दूसरा। भई यह गज़ब का कमाल है। खाद नक़ली, दवाइयां नक़ली पर नोट असली होने चाहिएं।

आज आम आदमी तो नमक, तेल की अंतहीन लाईनों में ही लगा रहता है या जलसे के अंतिम छोर पर खड़ा तालियां पीटता है। वह पूरे दिन के शारीरिक श्रम के बाद रात में बेसुध हो सो जाता है और सुबह उठकर फिर अपनी अंतहीन लड़ाई में लग जाता है। उसे तो रोजाना कुआं खोदना है और पानी पीना है। कोई उसके साथ नहीं..... न हुक्मरान, न नेता और न पुलिस।

***संपादक : 'सहज-आनन्द' (त्रैमासिक)***
***239, दरीबाकलां, दिल्ली-6***

# राष्ट्रीय चरित्र के संपोषक

साध्वी शुभप्रभा

***आचार्य तुलसी द्वितीय विकल्प के अद्वितीय युगपुरुष थे। ग्यारह वर्ष की अल्पायु में वे आत्मविशुद्धि के पथ पर अग्रसर हुए। बाईस वर्ष की अरूण तरूणाई में संघ के अधिशास्ता बने। तीसरे दशक में अतीत के गवाक्ष से वर्तमान को देखा। रक्तरंजित लपटों में मानवीय-विश्वास की विलीन होती कहानियों और निशानियों को देख-पढ़कर वे करूणार्द्र हो उठे। उन्होंने नैतिकता की नौका का अवलम्बन जनता के समक्ष प्रस्तुत किया तथा धर्म क्रान्ति के पुरोधा बनकर वे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और पूरी मानव जाति के उन्नयन हेतु संकल्पित हुए। न धूप देखी और न छांह, न सर्दी और न गर्मी की परवाह की और न ही भूख और प्यास ने उनके समक्ष अपने दाँवपेच चलाए। चरैवेति-चरैवेति सूत्र की अग्रगामिता में वे अणुव्रत की मशाल को हाथ में थामे बस्ती, गांव, कस्बा, ढाणी, नगर, शहर, महानगरों में भ्रमण करते रहे। देश और राज्य की राजधानियों में पहुंचकर उन्होंने सर्वप्रथम चरित्र-निर्माण की बात कही।***

संसार में तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। यथा--1. गुलाब के पौधे के समान, 2. आम के वृक्ष जैसे और 3. कटहल के सदृश। सर्वविदित तथ्य है कि गुलाब के फूल होता है पर फल नहीं लगता। आम के वृक्ष में फूल और फल दोनों होते हैं तथा कटहल वृक्ष में सीधा फल ही आता है। वैसे ही कुछ लोग बोलते बहुत हैं पर करते कुछ नहीं है। दूसरी किस्म के लोग कहते भी हैं और करते भी हैं। तीसरी प्रकार के लोग कहते नहीं है पर करके दिखाते हैं।

जाहिर है इस दुनिया में मानव की तीनों श्रेणियां हैं। पहली श्रेणी के लोग स्वकेन्द्रित होते हैं। केवल अपना स्वार्थ साधते हैं। मैं पीया, मेरा बैल पीया, कुआं चाहे तो ढह पड़े वाली मनोवृत्ति के होते हैं। सत्ता, सम्पदा, शक्ति के बल पर मनचाही भीड़ जुटा लेते हैं। बाहर जनकल्याण कार्यालय का बोर्ड लगवाते हैं, पर भीतर गूंजने वाले कहकहे अनकहे ही बहुत कुछ बयां कर देते हैं।

दूसरी पंक्ति में खड़े लोग आत्महित और परहित के लिए विकास के नए आयाम उद्घाटित करते हैं और सतत् प्रयत्नशील भी रहते हैं। व्यष्टि और समष्टि उनके दृष्टिगोलक में सदैव प्रतिबिम्बित रहती है। अपने समय, सोच, श्रम, शक्ति, और संसाधनों का प्रयोग वे इन्हीं दो परिप्रेक्ष्यों में करते हैं।

तीसरे प्रकल्प में वे महानुभाव आते हैं जिन्होनें प्रकृष्ट जप-तप, ज्ञान-ध्यान की साधना करके तन-मन को साधा, आत्मा को आराधा, निजता को तराशा और पूर्ण की अन्तः अभिलाषा। आगे-पीछे कौन हैं? इस बिन्दु पर उनका चिन्तन कदापि नहीं अटका। 'एकला चलो रे'-सूत्र की परिक्रमा करते हुए वे लक्ष्यसिद्धि तक पहुंच गए।

तेरापंथ के नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी द्वितीय विकल्प के अद्वितीय युगपुरुष थे। ग्यारह वर्ष की अल्पायु में वे आत्मविशुद्धि के पथ पर अग्रसर हुए। बाईस वर्ष की अरूण तरूणाई में संघ के अधिशास्ता बने। तीसरे दशक में अतीत के गवाक्ष से वर्तमान को देखा। रक्तरंजित लपटों में मानवीय-विश्वास की विलीन होती कहानियों और निशानियों को देख-पढ़कर वे करूणार्द्र हो उठे। उनके भीतर का हनुमान जागा। फलतः अनैतिकता के अथाह सागर को पार करने के लिए उन्होंने नैतिकता की नौका का अवलम्बन जनता के समक्ष प्रस्तुत किया तथा धर्म क्रान्ति के पुरोधा बनकर वे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और पूरी मानव जाति के उन्नयन हेतु संकल्पित हुए। न धूप देखी और न छांह, न सर्दी और गर्मी की परवाह की और न ही भूख और प्यास ने उनके समक्ष अपने दाँवपेच चलाए। चरैवेति-चरैवेति सूत्र की अग्रगामिता में वे अणुव्रत की मशाल को हाथ में थामे बस्ती, गांव, कस्बा, ढाणी, नगर, शहर, महानगरों में भ्रमण करते रहे। देश और राज्य की राजधानियों में पहुंचकर उन्होंने सर्वप्रथम चरित्र-निर्माण की बात कही।

**भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने वार्तालाप के दौरान कहा--'देश में सत्य और अहिंसा के प्रसार की आज सबसे अधिक आवश्यकता है। संसार में शांति इसी के द्वारा संभव है।'**

आचार्य तुलसी बोले--'राष्ट्रपति महोदय! यही काम मैं करना चाहता हूं। मैं एक धर्मसंघ का आचार्य हूं। 600 से अधिक समर्पित साधु-साध्वियों की शक्ति मेरे पास है। मैं अपने संघ की पूरी ताकत अहिंसा और विश्व-मैत्री के प्रसार में लगाना चाहता हूं। आप इसका उपयोग करें।

यही बात उन्होनें प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से कही--'हमारे पास त्यागी एवं पदयात्री साधु-साध्वियों की फौज है। आप नवोदित देश के नैतिक उत्थान के लिए इस फौज का उपयोग करना चाहें तो वह तैयार है।'

बातचीत के दौरान आचार्यश्री ने वर्तमान हालातों का जिक्र करते हुए कहा--'आज भारत राजनैतिक दासता से मुक्त है पर उसे मानसिक गुलामी से मुक्त करना अत्यन्त आवश्यक है। आज राष्ट्र के कर्णधार राष्ट्र निर्माण का सपना देख रहे हैं पर किसी भी राष्ट्र का निर्माण केवल ऊँची-ऊँची भव्य अट्टालिकाओं, विशाल बांधों, बड़ी-बड़ी सड़कों और नए-नए उद्योग-धन्धों के आधार पर नहीं होता। मेरी दृष्टि में राष्ट्र निर्माण की बुनियाद है राष्ट्रीय चरित्र। जिसका सीधा सम्बन्ध राष्ट्र में रहने वाली जनता के उदात्त आचरण से है।'

प्रश्न होगा कि चरित्र क्या है? समांतर कोष में चरित्र शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त है। यथा-आचरण, शैली, आचार, कार्यकलाप, चालचलन, राहचाह, शील, लक्षण आदि। एक वाक्य में कहा जाए तो जीवन का सर्वसुखद पक्ष है 'चरित्र'। जीवन-मूल्यों का स्थायी मानदंड है 'चरित्र'। व्यक्ति की सबसे बड़ी संपदा है उसका अपना 'चरित्र'। चरित्र का न आयात संभव है और न निर्यात। वस्तुतः जीवन का संयतभाव से निर्वहन करना ही चरित्र है।

व्यक्ति के चरित्र से परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व का चरित्र बनता है। इसलिए आचार्य तुलसी ने व्यक्ति के चरित्र को ऊँचा उठाने के लिए अनेक उपक्रम प्रारंभ किए। वे जहां भी जाते, बातचीत करते, प्रवचन करते, प्रतिबोध देते, उस समय प्रायः यह अवश्य कहा करते- 'हमें आपके वोट नहीं चाहिए, नोट नहीं चाहिए, रोट नहीं चाहिए, प्लॉट नहीं चाहिए, सपोर्ट भी नहीं चाहिए। हम तो आपसे आपकी खोट मांगते हैं, बुराई मांगते हैं। वह हमारी झोली में डाल दीजिए। आपका भी भला होगा और हमारा भी।'

आचार्य तुलसी जब दक्षिण के अंचल में यात्रायित थे तब पड़प्पा हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक फारूखी ने आचार्यश्री के अभिनन्दन में कहा-- 'महात्मा गांधी स्वराज्य मांगते थे। विनोबाजी भूमि मांगते हैं (उस समय विनोबा भावे विद्यमान थे) और आचार्य तुलसी एक विचित्र संत हैं जो न राज्य मांगते हैं, न भूमि मांगते हैं, न धन मांगते है और न सुख-सुविधाएँ मांगते हैं किन्तु लोगों की बुराइयां मांगते हैं।'

ऐसी अनोखी मांग करने वाले विरल पुरूष होते हैं। कवि ने ठीक कहा है--

*आदमी को जिंदगी में वो नजारा चाहिए।*

*जो अंधेरा दूर करदे, वह सवेरा चाहिए।।*

हर आदमी उजाले का स्वागत करता है तथा आलोकमय बनना चाहता है, फिर क्यों अंधकार उसे चारों ओर से घेर लेता है? क्यों आदमी चारित्रिक पतन के गर्त में गिर जाता है? जिज्ञासा का यह स्वर उभरने पर स्वयं आचार्य तुलसी ने कारणों की मीमांसा करते हुए कहा--

- चारित्रिक शिक्षा और साधना का अभाव।
- वैयक्तिक दृष्टिकोण।
- नियंत्रण शक्ति का अभाव।
- बड़प्पन के कृत्रिम मानदंड।
- विलासपूर्ण जीवन।

उन्होनें स्पष्ट रूप से कहा--'राष्ट्र के विकास के लिए जहां सैन्यबल, अर्थबल और जनबल की आवश्यकता होती है, वहाँ सर्वाधिक जरूरत होती है, चरित्र बल की। बिना चरित्रबल के सैन्यबल, अर्थबल और जनबल सभी अकिंचित्कर हैं।'

राष्ट्र के चरित्र बल के उन्नयन हेतु आचार्य तुलसी ने राष्ट्राध्यक्षों, राजनीति के शीर्षस्थ नेताओं, सेनानायकों, लोकसभा, विधानसभा और राज्यसभा के सदस्यों, चुनाव आयोगों, कमेटियों, उद्योगपतियों, न्यायविदों, वैज्ञानिकों, व्यापारियों, शिक्षा मंत्रालय से सम्बद्ध सभी घटकों, प्रबुद्ध प्रचेताओं, साहित्यकारों, पत्रकारों राष्ट्र की एकता को सुरक्षित रखना चाहने वाले दलों, संगठनों, कार्यकर्ताओं, स्वयं सेवकों तथा आम नागरिकों को समय-समय पर सम्बोधित किया, प्रतिबोध दिया, सलाह-मशविरा किया तथा मार्गदर्शन दिया जिसकी जीवंत निशानियां हैं राजीव लोंगोवाल समझौता, संसदीय गत्यवरोध का समापन आदि। राष्ट्रीय एकता परिषद् के मानद सदस्य होने के नाते आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त संदेशों को बहुमान मिला तथा राष्ट्र ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से उन्हें पुरस्कृत कर कृतज्ञ सर्वतोभावेन अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की।

आचार्य तुलसी भारत में जन्मे। भारतीय मिट्टी में खेले-कूदे। भारतीय वातावरण में पले-पुसे। भारतीय संस्कृति और संस्कारों से संस्कारित हुए, शिक्षित हुए। यही कारण रहा होगा कि भारतीयता उनके हृदय के हर स्पन्दन में, रक्त की हर बूंद में, श्वास की हर लय में, चिन्तन के हर पहलू में, कार्य की हर प्रविधि में मुखरित थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देशवासियों के समक्ष मेरे सपनों का भारत की एक रूपरेखा प्रस्तुत की। ठीक उसी तर्ज पर आचार्य तुलसी ने 'मेरे सपनों का हिंदुस्तानः एक प्रारूप को अपनी आत्मकथा में इस प्रकार रेखांकित किया है--

- देश में गरीबी न हो।
- किसी प्रकार का धार्मिक संघर्ष न हो।
- कोई किसी को अस्पृश्य मानने वाला न हो।
- खाद्य पदार्थों में मिलावट न हो।
- कोई रिश्वत लेने वाला न हो।
- कोई शोषण करने वाला न हो।
- कोई दहेज लेने वाला न हो।
- वोटों का विक्रय न हो।
- पर्यावरण प्रदूषित न हो।

*प्रदूषण*

# गंगा तेरा पानी कैसा.....

**आशीष वशिष्ठ**

वैदिक युग से ही भारत की नदियों को महत्व दिया जाता रहा है। नदियों के किनारे ही हमारे देश में अधिकांश ग्राम, नगर, व्यवसायिक केन्द्र तथा राजधानियां स्थित है प्राचीन काल में नदियां ही यातायात की मुख्य साधन थीं। इनके द्वारा ही व्यापार होता था। इस प्रकार देश को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान कर इनकी प्रतिदिन इस प्रकार वंदना की जाती थी--**'गंगा च यमुना चैव गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा सिंधु, कावेरी जलोस्मिन सन्निधंकुरू।'** इन नदियों के किनारे अनेक मन्दिर तथा विद्या केन्द्र स्थापित थे। इस प्रकार देश में सांस्कृतिक जीव के निर्माण में भी इन नदियों का बहुत महत्व था। अतः हम कह सकते हैं कि नदियां इस देश की शोभा रही हैं।

गंगा नदी का तंत्र भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी तंत्र है और इसके अन्तर्गत भारत का एक चौथाई से अधिक क्षेत्र आता है। इसी नदी तंत्र की प्रमुख नदी गंगा है। इसका विस्तार 838.2 वर्ग किलोमीटर में है। गंगा में सहायक नदी के रूप में बायीं ओर से मिलने वाली नदियां हैं--रामगंगा, गोमती, घाघरा, ताप्ती, गण्डक, और कोसी, जबकि दायीं ओर से आकर मिलने वाली नदियां हैं--यमुना, चम्बल, सिन्ध, बेतवा, केन, टोंस और सोन। गंगा उत्तराखण्ड के गढ़वाल हिमालय में 6 हजार मीटर की ऊंचाई पर स्थित गंगोत्री हिमनद से निकलती है। देवप्रयाग में जब अलखनंदा एवं भागीरथी आपस में संयुक्त होती हैं, तब इस संयुक्त धारा को गंगा के नाम से जाना जाता है। गंगा नदी की प्रारम्भ में दो शाखाएं हैं--भागीरथी और अलकनन्दा। भागीरथी को ही मुख्य शाखा माना जाता है। भागीरथी और अलकनन्दा का संगम देवप्रयाग में होता है। अलकनन्दा तथा पिण्डार का संगम कर्ण प्रयाग में होता है। शिव की अलकों से निकली इसलिये अलकनन्दा है। गंगा विष्णुपदी कही गयी है क्योंकि विष्णु के चरणों से (बद्रीनाथ धाम से) निकलती है। इस प्रकार लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर की यात्रा तय करती हुई गंगा प्रथमतः यही समतल मैदानों में बहती है। हरिद्वार के निकट यह नदी मैदानी भाग में प्रवेश करती है। इलाहाबाद के निकट इसमें यमुना (अदृश्य सरस्वती) नदी आकर मिलती हैं गंगा के दाहिने किनारे अथवा उत्तर से आकर रामगंगा, गोमती, घाघरा, गण्डक, कोसी एवं महानंदा नदियां मिलती हैं। विष्णु गंगा, भागीरथी, ताप्ती, काली, सोन, टोंस, पिण्डार, मन्दाकिनी तथा नन्दका इसकी सहायक नदियां हैं। गंगा नदी की कुल लम्बाई 2,252 कि.मी. है, जिसमें से 1,450 कि.मी. उत्तराखण्ड व उत्तरप्रदेश में, 445 कि.मी. बिहार में तथा 520 कि.मी. पश्चिम बंगाल में है। बांग्लादेश में गंगा नदी को 'पद्मा' के नाम से जाना जाता है। भारत में गंगा का प्रवाह क्षेत्र लगभग 8,61,404 वर्ग कि.मी. है। गंगा नदी जब हिमालय को पार करती है, तब 4,870 मीटर गहरे गार्ज का निर्माण करती है। गंगा नदी की लम्बाई (गंगोत्री से बंगाल की खाड़ी तक) 2510 किलोमीटर है और इसका जलग्रहण क्षेत्र 9,51,600 वर्ग किलोमीटर है। दुनिया की कई नदियां उससे बड़ी हैं मसलन नील, अमेजन, यांग्सी और मिसीसिपी। इन नदियों को लोग प्यार करते हैं। लेकिन दुनियां में कोई नदी ऐसी नहीं है, जो पूजने के मामले में गंगा की बराबरी कर सके। शिव की जटाओं से निकलकर गंगा धरती पर आती है। इकबाल जैसे शायर ने उसे आर्यों की बुनियाद बताया है--

*ऐ आब ए रूद ए गंगा,*
*वो दिन याद है तुझको, उतरा तेरे किनारे था कारवां हमारा।*

आज गंगा जैसी सभी बारहमासी नदियां जल प्रदूषण से अत्याधिक ग्रस्त हैं। मानव बस्तियों और उद्योगों का गन्दा पानी सीधे नदियों में आकर मिल जाता है। इससे जल अधिकांश रूप में उपयोग करने योग्य नहीं रह जाता। इस जल प्रदूषण के कारण ही कश्मीर का प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट होता जा रहा है। उसका स्वर्ग के समान आनन्द देने वाला रूप लुप्त होता जा रहा है। गंगा अब मोक्षदायिनी नहीं रही, वह अपनी पवित्रता खो बैठी है। काशी गंगा तट पर ही स्थित है। तट-जल के प्रदूषित होने से काशी का महत्व कम हो गया है। इतना ही नहीं भगवान विश्वनाथ को मोक्ष प्रदान करने वाली नगरी, जिसकी महिमा तीनों लोकों में थी, उसकी महिमा और महत्व घट गया।

देश में नदी प्रदूषण की समस्या कोई नयी नहीं है और न ही यह बात सरकार अथवा जनसाधारण से छिपी है। नदी जल प्रदूषण निवारण के नाम पर अब तक कई योजनाएं बनी हैं, करोड़ों रूपये भी खर्च हो चुके हैं परन्तु नदियों का प्रदूषण अभी तक दूर नहीं किया जा सका है। गंगा, जमुना, गोमती, कावेरी, नर्मदा, चेलियार, साबरमती, हुगली, पेरियार, दामोदर आदि अधिकांश नदियां आज भी प्रदूषित हैं और प्रदूषण लगातार गहराता जा रहा है। पिछले दिनों इस सम्बन्ध में सामने आई वैज्ञानिकों की रिपोर्ट देखकर यही लगता है कि वह दिन दूर नहीं जब गंगा और यमुना की स्थिति आस्ट्रेलिया की हड़सन नदी जैसी ही हो जाएगी जिसके दोनों किनारों पर वहां की सरकार ने बोर्ड लगाकर यह चेतावनी लिखी है कि 'पानी जहरीला है, इसे न छुएं।' उस पानी से बचने के लिए नदी के किनारों पर बाढ़ लगानी पड़ी है। हमारे यहां नदी जल प्रदूषण की भयावह स्थिति होने के बावजूद इसका कोई तत्काल समाधान नहीं दीख

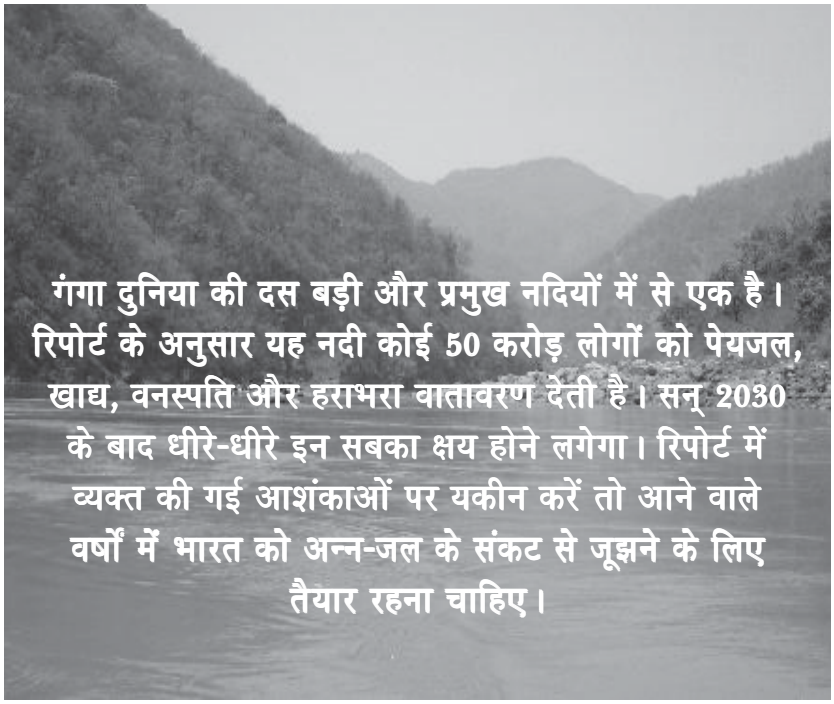

**गंगा दुनिया की दस बड़ी और प्रमुख नदियों में से एक है। रिपोर्ट के अनुसार यह नदी कोई 50 करोड़ लोगों को पेयजल, खाद्य, वनस्पति और हराभरा वातावरण देती है। सन् 2030 के बाद धीरे-धीरे इन सबका क्षय होने लगेगा। रिपोर्ट में व्यक्त की गई आशंकाओं पर यकीन करें तो आने वाले वर्षों में भारत को अन्न-जल के संकट से जूझने के लिए तैयार रहना चाहिए।**

रहा है। इस मामले में सरकारी कार्य प्रणाली महज औपचारिकता ही दर्शाती है।

गंगा नदी की स्थिति भी इससे कम खतरनाक नहीं है। यह तो गोमुख से ही प्रदूषित होने लगी जोकि पर्यटन स्थल तथा पिकनिक केन्द्र के रूप में विकसित किया जा चुका है। वहां प्रदूषण नियंत्रण की कोई व्यवस्था है ही नहीं। लोग वहां इधर-उधर मल-मूत्र त्यागते हैं, बोतलें, कागज, प्लास्टिक की थैलियां आदि कूड़ा-कचरा नदी में डाल देते हैं। बनारस में गंगा तट पर स्थित संकट मोचन निधि की प्रयोगशाला जो पूर्णतया सरकारी है, में प्रति सौ सी.सी. पानी के आंत्र जीवाणुओं की संख्या 80 से 1 लाख 30 हजार के बीच पाई जाती है जो कि बड़ी से बड़ी महामारी फैलने की सूचक है जबकि सरकार बनारस और कानपुर में गंगा के साफ होने का दावा करती है। बनारस और कानपुर में औद्योगिक कचरा आज भी ज्यों का त्यों बहाया जाता है तो ऐसी स्थिति में गंगा साफ कैसे रह सकती है। सरकार केवल बनारस में ही नहीं सफाई के नाम पर 43 करोड़ रुपये खर्च कर चुकी है किन्तु गंगा वहां आज भी पहले की तरह प्रदूषित है। गंगा तो अपने उद्गम स्थल से ही प्रदूषित होती हुई अपने किनारे बसे लगभग 115 नगरों की गन्दगी को लेकर चलती है। ऐसे में किसी क्षेत्र विशेष में गंगा को साफ कैसे रखा जा सकता है। यह केवल सरकार की नासमझी और उद्देश्यहीनता का नमूना है। साथ ही समाज में फैली निरक्षरता, अविद्या तथा अज्ञान एवं जनसंख्या विस्फोट ही इसके मुख्य कारण हैं।

गंगा हिन्दुओं के लिए कितनी ही पवित्र हो परन्तु सरकारी तौर पर गंगा सफाई योजना के तहत शुद्धिकरण का काम सन् 1998 से धन के अभाव में बन्द पड़ा है। यद्यपि यह योजना सीधे प्रधानमंत्री के तहत राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना के तहत काम करती है, इसकी केवल दो बैठकें सन् 1994 तथा 1997 में की गई थी। इस काम के लिए राज्यों का योगदान भी कुछ उत्साहपूर्वक नहीं रहा यद्यपि उच्चतम न्यायालय ने कहा था कि इस गंगा-शुद्धिकरण योजना में नदी जिन राज्यों से बहती है उन राज्यों की भी गंगा-शुद्धिकरण कार्य में भागीदारी होनी चाहिए। बंगाल राज्य की सरकार ने तो कोई खास रिपोर्ट इसके बाबत दी ही नहीं है। प्रोजेक्ट रिपोर्ट ही एक ऐसा दस्तावेज होता है जिससे आगे के लिए खर्च की मांग की जाती है। अब तो महालेखा नियंत्रक की एक रिपोर्ट के अनुसार प्रशासनिक विलम्ब तथा यूनियन एवं राज्य सरकारों को हर स्तर पर उदासीनता, काम के खर्च में अत्यन्त बढ़ोतरी, दोषपूर्ण कार्यकर्ताओं का काम, कई कारण थे जिससे यह कार्य वांछित मापदण्डों के मुताबिक नहीं हो पाया। संयन्त्रों का ठीक तरह से इस्तेमाल न करने से वे खराब हो गए और धन को अन्य कामों पर लगा दिया गया। सीवेज ट्रीटमेण्ट प्लाण्ट्स कमेटियों का भी गठन नहीं किया। हरियाणा, बिहार तथा दिल्ली के राज्यों ने निर्धारित सिटीजन कमेटियों का भी गठन नहीं किया। कुल सक्षमता का केवल 13.7 प्रतिशत सीवेज के लिए ही प्लाण्ट निर्मित हो सके। आखिर में इस कार्य को करने में राज्य स्तरों पर इतनी भिन्नताएं हो गई कि सारे कार्य में असमंजसता पैदा हो गई। पिछले वर्षों में कई करोड़ रुपये खर्च करने के बाद भी गंगा ऐक्शन प्लान का रंग-रूप वही है जो प्लान के पहले था।

गंगा में लगभग 15 करोड़ लीटर गंदा पानी प्रतिदिन गिरता है किन्तु जल-मल शोधन संयन्त्रों के द्वारा दस करोड़ लीटर पानी ही शोधित हो पाता है। इस शुद्धिकरण के बाद भी पानी में बड़ी संख्या में आंत्र जीवाणु अभी भी देखे जा सकते है। इससे साफ है कि नदी का जल प्रदूषण बरकरार है। हिन्दुओं में मान्यता है कि मृत्यु के उपरान्त शव को यदि गंगा के हवाले कर दिया जाय तो सीधा स्वर्ग मिलता है। इस धार्मिक विश्वास के अन्तर्गत हरिद्वार तथा वाराणसी (काशी) में प्रतिवर्ष करीब 50 हजार शवों को जलाया जाता है। दूर दराज के लोग भी यहां लाकर मृतकों का दाह संस्कार करते है। इन शवों को जलाने में 20 हजार टन लकड़ी और उससे बनने वाली राख करीब दो हजार टन होती है। यह भी गंगा जैसी पवित्र नदियों को अपवित्र (प्रदूषित) करने का प्रमुख कारण है। हिमालय की हिमाच्छादित चोटी से बंगाल की खाड़ी तक की यात्रा में स्वार्थी मानव ने गंगा को पूर्ण रूप से स्वच्छ (पवित्र) से पूर्ण रूप से मैली (अपवित्र) कर दिया है। हरित क्रांति से कृषि उत्पादन तो बढ़ाया है परन्तु कृषि क्षेत्र में कीटनाशकों की तथा रासायनिक पदार्थों का उपयोग

भी बढ़ा है। कीटनाशकों के अधिक व अनुचित प्रयोग के कारण भी जल प्रदूषित हो रहा है क्योंकि रासायनिक कारखानों का अवशिष्ट नदियों में प्रवाहित कर नदियों को प्रदूषित किया जा रहा है। जल में क्रमशः रासायनिक प्रदूषण बढ़ रहा है। जल में डिटरजेन्ट, सॉल्वेन्ट, साइनाइड, हैवीमेटल, कार्बनिक रसायन, ब्लीचिंग पदार्थ, डाई तथा अनेक प्रकार के रसायन मिलते हैं जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होते हैं।

हिमालय स्थित गंगोत्री की जीवन धारा है। गंगोत्री ग्लेश्यिर प्रति वर्ष 120 फीट के हिसाब से सिमट रहा है। सन 2030 तक इसके पूरी तरह लुप्त हो जाने का खतरा है। भारत के पचास करोड़ लोग पीने के पानी और सिंचाई के लिए गंगा बेसिन के नदी जल पर आश्रित हैं। नए अनुसंधान के अनुसार गंगोत्री 40 गज प्रतिवर्ष के हिसाब से सूखती जा रही है। इसरो ने भी गंगोत्री के सिकुड़ने की पुष्टि की है। भीषण गर्मी के दिनों में गंगाजल का 70 प्रतिशत इसी ग्लेश्यिर के पिघलने से आता है। नासा द्वारा लिए गए गंगोत्री ग्लेश्यिर के चित्र ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव की पुष्टि करते हैं। ग्लेश्यिरों के पिघलने से धरती पर पर्यावरण के स्तर पर व्यापक फेरबदल होने वाले हैं। नेपाल सरकार के हाईड्रोलॉजिकल विभाग के अनुसार नेपाल में करीब 3200 ग्लेश्यिर हैं। इनसे चौदह बड़ी झीलें बनती हैं। ये झीलें भूकंप के हल्के झटके से भी अपना रूख नीचे के तरफ कर सकती हैं। इससे नीचे के इलाके में तबाही मच सकती है। इस कारण गंगा बेसिन के इर्दगिर्द रहने वाली आबादी को अनेक तरह की नई मुसीबतों से जूझना पड़ सकता है। इलाहाबाद से दिल्ली और कोलकाता तक पीने के पानी के लिए बड़ी आबादी गंगाजल पर ही आश्रित है। नासा के अनुसार शुरू में तो इन ग्लेश्यिरों के पिघलने से गंगा बेसिन की नदियों में पानी बढ़ता नजर आएगा पर अगले दो दशकों में स्थिति भयावह हो जाएगी।

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में, गंगा एक्शन प्लान (जीएपी) के क्रियान्वयन तथा नीतियों व कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए, भारत सरकार ने फरवरी 1985 में केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण (सीजीए) गठित किया, जिसका नाम पुनः सितम्बर 1995 में राष्ट्रीय नदी संरक्षण प्राधिकरण (एनआरसीए) हो गया। सीजीए के निर्देशन तथा निगरानी के अधीन परियोजनाओं को कार्यान्वयन के लिए, सरकार ने जून 1985 में पर्यावरण विभाग के घटक के रूप में गंगा परियोजना निदेशालय (जीपीडी) का गठन किया। सरकार ने जून 1994 में जीपीडी का नाम एनआरसीडी (राष्ट्रीय जल संरक्षण निदेशालय) कर दिया। 1985 में स्थापित केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण (सीजीए) का कार्य है--गंगा कार्य योजना (जीएपी-1) कार्यों के लिए नीतियां बनाना। 31 मार्च, 2000 तक जीएपी चरण-1 पूरा हो चुका था। सभी 261 योजनाएं 30 सितंबर, 2001 तक पूरी हो चुकी हैं। गंगा कार्य योजना का प्रमुख कार्य है नदी में बहते हुए गंदे पानी को मोड़कर दूसरे स्थानों पर उनका उपचार (ट्रीटमेंट) करना एवं उन्हें मूल्यवान ऊर्जा संसाधनों में परिवर्तित करना। जीएपी-1 के अंतर्गत तीन राज्यों--उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल के 25 प्रमुख शहरों से उत्पन्न 1340 एमएलडी गंदे पानी में से 882 एमएलडी (मिलियन लीटर प्रतिदिन) को स्वच्छ करना था। घरेलु प्रदूषित वस्तुओं को घटाने, इन्हें साफ करने एवं दूसरे माध्यमों में परिवर्तित करने की 873 मिलियन लीटर प्रतिदिन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका है। अभी तक नगरपालिका द्वारा 728 मिलियन लीटर प्रतिदिन ही प्रदूषित पानी को साफ किया जाता है। सरकार ने 873 मिलियन लीटर प्रतिदिन प्रदूषित जल के उपचार हेतु अधिसंरचना विकसित करने हेतु अपना लक्ष्य निर्धारित किया था परन्तु विभिन्न नगरपालिकाओं के द्वारा अभी तक 728 मिलियन लीटर प्रतिदिन प्रदूषित जल के उपचार हेतु ही अधिसंरचनात्मक सुविधा उपलब्ध करायी जा सकी है। जीएपी चरण-2 को राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना (एनआरसीपी) के साथ विलय कर दिया गया है।

एनआरसीपी 16 राज्यों में स्थित 27 अंतर्राज्यीय नदियों के किनारे स्थित कस्बों को जोड़ता है। कुल 215 प्रदूषण निवारण योजनाएं पूरी हो चुकी हैं। 2455 एमएलडी गंदे पानी को मोड़कर सफाई करने की योजना है। एनआरसीपी में 18 राज्यों के 157 कस्बों तथा प्रदूषित नदियों के 31 हिस्से आते हैं। परियोजना की लागत को केन्द्र तथा राज्यों द्वारा क्रमशः 70 तथा 30 के अनुपात में वहन किया जाता है। जुलाई 2003 तक, इस योजना के अंतर्गत 763 योजनाओं की लागत 2460 करोड़ रुपये होगी, को स्वीकृति दे दी गई है। प्रदूषण उन्मूलन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जीएपी में कोर तथा गैर-कोर योजनाओं को शामिल किया है। कोर क्षेत्र योजनाओं के अंतर्गत नाला उपचार प्लांट (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, एसटीपी) नाले के बाहव को रोकने तथा मोड़ने की योजनाएं भी शामिल हैं। ये योजनाएं प्रदूषण के विभिन्न बिन्दुओं, जैसे नाला तथा नाला पंपिग स्टेशनों से बहने वाले प्रदूषणों को रोकने के लिए लाई गयी हैं। अब जबकि, गंगा कार्य योजना के दूसरे चरण का राष्ट्रीय नदी संरक्षण कार्य योजना (एन.आर.सी.पी.) के साथ विलय कर दिया गया है, इस विस्तृत कार्य योजना के अंतर्गत 18 राज्यों में 31 अंर्तराज्यीय नदियों के साथ बसे 157 शहर आते हैं। इस कार्य योजना के तहत 157 शहरों में प्रदूषण हटाने का काम आंरभ हो रहा है, कुल मिलाकर प्रदूषण कम करने की 763 योजनाएं मंजूर कर दी गई हैं। गंगा दुनिया की दस बड़ी और प्रमुख नदियों में से एक है। रिपोर्ट के अनुसार यह नदी कोई 50 करोड़ लोगों को पेयजल, खाद्य, वनस्पति और हराभरा वातावरण देती है। सन् 2030 के बाद धीरे-धीरे इन सबका क्षय होने लगेगा। रिपोर्ट में व्यक्त की गई आशंकाओं पर यकीन करें तो आने वाले वर्षों में भारत को अन्न-जल के संकट से जूझने के लिए तैयार रहना चाहिए।

***बी-96, इंदिरा नगर,***
***लखनऊ-226016 (उ.प्र.)***

# अहिंसा और अनुकम्पा :४:

मुनि सुखलाल

अहिंसा यात्रा का लक्ष्य है--अनुकम्पा की चेतना का जागरण। अनुकम्पा और अहिंसा एक ही बात है। भारत में भगवान महावीर और भगवान बुद्ध ने अहिंसा पर सर्वाधिक बल दिया था। महावीर की अहिंसा का आधार था अनुकम्पा और बुद्ध की अहिंसा का आधार था करुणा। अनुकम्पा और करुणा की भाव मीमांसा हम आगे करेंगे। अभी यह समझें कि महावीर ने सम्यक्त्व के जो पांच लक्षण बताये उनमें अनुकम्पा भी एक प्रमुख लक्षण है। जैन परम्परा में अनुकम्पा पर बहुत बल दिया गया है। आगे चल कर अनुकम्पा की जगह जैन परम्परा में दया शब्द का विकास हुआ। जैन परम्परा एक सम्प्रदाय में तो दया एक नारा का रूप ले चुका है। संभवतः दया और करुणा दोनों शब्द काफी नजदीक हैं। दोनों शब्दों का हार्द दूसरे के दुःख से द्रवित होना ही है। पर करुणा और दया दोनों ही एक-दूसरे पर आधारित हैं। अनुकम्पा शब्द दूसरे पर आधारित नहीं है। वह आत्मस्थता पर बल देता है। अनुकम्पा का अर्थ है दूसरे की हिंसा से अपने मन में अनुकम्पन का अनुभव करना। अनुकम्पन दूसरे पर आधारित नहीं है। वह आत्मस्थता है। हिंसा के प्रति अपने मन में होने वाला एक द्वन्द्व है। भले ही अनुकम्पा का परिणाम करुणा और दया में प्रतिफलित हो सकता है पर वह अपने आप पर आधारित है।

जैन परम्परा में आचार्य भिक्षु ने दया और अनुकम्पा पर काफी विस्तार से विचार किया है। आचार्य भिक्षु के वाङ्मय के अंतर्गत अनुकम्पा की चौपई का संपादन करते हुए संभवतः आचार्य महाश्रमण का ध्यान अनुकम्पा पर विशेष रूप से स्थिर हुआ। संभवतः इसीलिए आचार्य महाश्रमण ने अहिंसा यात्रा का लक्ष्य भी अनुकम्पा की चेतना का विकास घोषित कर दिया।

**आज के माहौल की पृष्ठभूमि में आचार्य महाश्रमण अध्यात्म को अहिंसा यात्रा के साथ जोड़ते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द, भ्रूणहत्या निषेध, व्यसनमुक्ति तथा यथासंभव नैतिक मूल्यों के प्रति जागरण का संदेश दे रहे हैं। हमें इनके आध्यात्मिक मूल्यों को समझना तो जरूरी है ही पर उससे आज विश्व पर संकट के जो बादल मंडरा रहे हैं उससे भी मुक्ति मिल सकती है।**

आदमी में जब अनुकम्पा का विकास होता है तो उससे आध्यात्मिक चेतना का जागरण और नैतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता तो स्वयं जागृत हो जाती है। आचार्य महाप्रज्ञजी ने भी अहिंसा यात्रा के दौरान महात्मा गांधी के इस वाक्य का बार-बार उपयोग किया था कि आज के मनुष्य के मन में करुणा का स्रोत सूख रहा है। सचमुच आज आदमी इतना भौतिक हो गया है कि वह अपनी आत्मा को भूलकर शरीर पर ही अधिक केन्द्रित हो गया। पर्यावरण पर विचार करें तो हमें स्पष्ट प्रतीत होगा कि प्रदूषण के प्रति मनुष्य कितना बेपरवाह होता जा रहा है। वह अपनी सुख-सुविधा के लिए पृथ्वी, जल, ऊर्जा, वनस्पति तथा जीव जगत के प्रति जरा भी चिंतित नहीं है। यद्यपि प्रकृति के इस प्रदूषण का मूल्य मनुष्य को ही चुकाना पड़ेगा। आज जो प्रदूषण बढ़ रहा है वह किसी व्यक्ति का नुकसान नहीं है अपितु समूची मनुष्य जाति के अस्तित्व के संकट का सूचक है। अनुकम्पा यात्रा इस संकट के प्रति मन में कम्पन पैदा करने का ही एक उपाय है।

असल में हिंसा दूसरों की होती ही नहीं। दया भी दूसरे के प्रति नहीं होगी। आचार्य भिक्षु ने इस पर बहुत सूक्ष्मता से विवेचन किया है। संत तुलसीदास जी ने भी कहा है--

*तुलसी दया न पार की, दया आपरी होय।*
*तूं कीणनें मारै नहीं तो तने न मारे कोय।।*

दया वास्तव में दूसरे की होती ही नहीं, अपनी ही होती है। यदि आदमी स्वयं हिंसा से ग्रसित नहीं हो तो उसे भी हिंसा का सामना करने का अवसर नहीं आयेगा। हिंसा के जन्म-जन्मांतर के अनुबंध ही मनुष्य के दुःख के कारण बन रहे हैं। यदि अब भी आदमी हिंसा से विरत हो जाये, हिंसा करते हुए उसके मन में अनुकम्पन हो तो अहिंसा अपने आप प्रतिफलित हो जायेगी।

आज के माहौल की पृष्ठभूमि में आचार्य महाश्रमण अध्यात्म को अहिंसा यात्रा के साथ जोड़ते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द, भ्रूणहत्या निषेध, व्यसनमुक्ति तथा यथासंभव नैतिक मूल्यों के प्रति जागरण का संदेश दे रहे हैं। हमें इनके आध्यात्मिक मूल्यों को समझना तो जरूरी है ही पर उससे आज विश्व पर संकट के जो बादल मंडरा रहे हैं उससे भी मुक्ति मिल सकती है। आवश्यकता है अहिंसा यात्रा के उद्देश्य को ठीक से समझा जाये तथा समझाया जाये। यदि इन दोनों बिन्दुओं में परस्परोपग्रह नहीं हुआ तो संकट से बचना असंभव हो जायेगा।

**कहानी**

# लाखन दादा

**पूनम कुमारी**

रात्रि का अन्तिम प्रहर बीतने ही वाला था। चारों तरफ से उजाला अब अपना अस्तित्व दिखाने लगा था। बरसात रुकी ही थी किन्तु बूंदाबांदी चल रही थी। हरियाली का मोटा गद्दा सारी धरती पर फैला हुआ था, मानो वह हर एक थके मांदे को विश्राम के लिये निमन्त्रण दे रहा हो। ऐसे प्राकृतिक सौन्दर्य को दर्शाती हुई ट्रेन पटरियों पर सरपट भागी जा रही थी। मानो सब अपनी अपनी मंजिल को पाने के लिए उतावले हो रहे हों।

ट्रेन की सीट पर बैठा लाखन बाहर का दृश्य देख रहा था। यद्यपि शरीर से वह स्थिर था पर उसका मन दो तरफ भाग रहा थ। आगे की ओर जहां उसे अपने गांव पहुंचने की कल्पना थी और पीछे की ओर जहां 45 वर्ष के पहले का अतीत उसके सामने था। आज उसके मन में अत्यधिक प्रसन्नता थी। वह अपने गांव लौट रहा था। एक लम्बे अरसे के बाद गांव के लोगों से मिलने जा रहा था। कितनी नई-नई कल्पनाएं आज उसके मस्तिष्क में उठ रही थीं।

स्टेशन आते ही गाड़ी रुक गई। लाखन ने अपना सामान संभाला और उतर गया। एक तांगे में सामान जमाकर स्वयं भी बैठ गया।

कहां ले चलूं बाबूजी? तांगे वाले ने पूछा।

उत्तर देने में लाखन को कुछ सोचना पड़ा। उसके गांव में उसका अपना कोई न था और वह स्वयं भी 45 वर्षों के बाद गांव में आ रहा था। क्या पुराने पत्ते पर यह मुझे अपनी झोंपड़ी तक पहुंचा देगा, वह सोचने लगा।

इसी उधेड़बुन में खोया हुआ सा लाखन बोला--'चबूतरे के पास।' तांगा चल दिया। लाखन अपने गांव की एक-एक वस्तु को बड़े ही गौर से निहार रहा था, कितना बदल गया था उसका गांव! जहां लम्बे चौड़े मैदान थे वहां बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हो गई हैं। जहां कच्चे रास्ते थे वहां सड़कें बन गई हैं और आज पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर हुक्का पीते हुए भी कोई नजर नहीं आ रहा है। सारे लोग उसे अपरिचित से ही लग रहे हैं। क्योंकि लाखन जब गांव में था उस समय के बूढ़े लोग आज नहीं रहे वे परलोक की यात्रा पर चले गये। जो युवा थे वे प्रौढ़ व वृद्ध हो गए हैं। जो बालक थे वे देश के कर्णधार बन गए हैं और इसी बीच कितने अनजान चेहरों ने उसके गांव में जन्म ले लिया है।

'बाबूजी! चबूतरा आ गया है।'

'हूं।' लाखन सामान लेकर नीचे उतर गया और पैसे चुकाकर उसे विदा किया। जाते-जाते उसने तांगे वाले से पूछा क्यों भई! आजकल तो इस गांव का बहुत विकास हो गया है न। पहले जब मैं यहां आया था तो यह इतना विकसित नहीं था।

लाखन ने ऐसा कहकर मानो उसे अतीत की दुःखद स्मृति करवा दी हो। वह लम्बी श्वास छोड़ते हुए बोला--बाबूजी! यह क्या विकास है? अगर लाखनदादा रहते तो न जाने इस गांव का विकास किस शिखर को छू लेता।

लाखनदादा! कौन लाखनदादा!

वही लाखनदादा। पर आप कैसे जानेंगे उन्हें! उन्हें तो हम ही जान सकते हैं क्योंकि हम उनके बीच रहे हैं।

सच कहूं बाबूजी! लाखनदादा के चले जाने पर हम सब तो अनाथ से हो गए हैं। जब हम तांगा चलाते तो आते-जाते रास्ते में कहीं न कहीं लाखनदादा दिखाई दे जाते और उन्हें देखते ही हमारे भीतर नई शक्ति जग जाती। खैर छोड़िये इन बातों को! मुझे तांगा हांकना है। उन दिनों की तो सिर्फ यादें ही शेष है। और वह चला गया।

लाखन ने चारों तरफ दृष्टि दौड़ाई। पर उसे अपनी झोंपड़ी कहीं भी नजर नहीं आई। उसने देखा चबूतरे के सामने ही एक मन्दिर है और उसके पास एक बड़ा-सा तालाब। जहां स्त्रियां पानी भरने जा रही है। लोग स्नान कर रहे हैं।

लाखन ने चबूतरे पर पड़े मचान को बिछाया और उसी पर बैठ गया। आज वह अपने आपको धन्य और गौरवशाली महसूस कर रहा था। स्वगांव की माटी का स्पर्श करने से एक नया रोमांच उसके भीतर होने लगा था।

इसी बीच दोपहर हो गयी। गांव की छटा को निहारते -निहारते वह अपनी भूख प्यास भी भूल बैठा। तभी एक ग्वाला चबूतरे पर आया।

किसी नये व्यक्ति को वहां बैठा देखकर ग्वाले ने अदब से सलाम किया और वहीं पर बैठ गया।

लाखन ने सोचा इससे ही अपनी झोंपड़ी के बारे में क्यों न पूछ लूं। उसने कहा--विशाल! यहां एक झोंपड़ी हुआ करती थी, उसका क्या हुआ?

लाखन ने ऐसा प्रश्न पूछकर मानो उसकी दुखती रग पर अंगुली टिका दी हो। वह गमगीन होकर बोला-- बाबूजी! वह झोंपड़ी नहीं मन्दिर था और जिसमें स्वयं लाखन भगवान् निवास करते थे।

लाखन ने बात काटते हुए कहा--झोंपड़ी में तो इन्सान ही निवास करते हैं, भगवान नहीं।

ग्वाले ने तपाक् से प्रत्युत्तर दिया-- इसीलिए तो हम उसे झोंपड़ी नहीं मन्दिर कहते हैं क्योंकि उसमें निवास करने वाला इन्सान, इन्सान नहीं, साक्षात् भगवान था।

'कौन था वह?'

'लाखनदादा।'

लाखनदादा! कौन लाखनदादा?

बाबूजी! लाखनदादा के बारे में कौन नहीं जानता। इस गांव का बच्चा-बच्चा लाखनदादा का नाम बड़े ही आदर के साथ

लेता है। सात वर्ष की छोटी उम्र में ही लाखन नाम का वह लड़का सबका दादा बन गया था। लाखनदादा गांव के हर एक व्यक्ति को सुखी बनाना चाहते थे। कितना सुखी था उस समय हमारा गांव। कितना विकास किया था लाखनदादा ने इस गांव का। हर एक सुविधा को उपलब्ध कराने के लिए वे हर समय तैयार रहते थे। कितनी मौज और कितनी मस्ती थी उनकी छाया में। आज भी आबाल, वृद्ध उन्हें याद करते हैं और उनके आने की राह देखते हैं।

अपने ही बारे में यह सब सुनकर लाखन की जिज्ञासा बढ़ती चली गई। उसने आगे पूछा--अब कहां गए तुम्हारे लाखनदादा?

''हूँ''--इसकी भी एक लम्बी कहानी है बाबूजी! सुनोगे तो दिल दरिया भर जाएगा और आंखें सावन की बरसात।

तब तो तुम सुना ही दो। ताकि मैं भी उस महान पुरुष के बारे सुनकर अपने आपको पवित्र कर सकूं।

बाबूजी! हमारा यह गांव पाकिस्तान की सीमा पर है। यहां आए दिन आक्रमण की शंका बनी रहती है।

एक दिन ऐसा ही कुछ हुआ। सूचना मिली कि कल शत्रु सेना गांव में प्रवेश कर जाएगी।

लाखनदादा ने रातों-रात सारे लोगों को इकट्ठा किया और एक जोशीला भाषण दिया अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए। सब लाखनदादा के साथ हो गए। सुबह होते-होते सारा गांव एक सैनिक टुकड़ी में बदल गया। और इसके सेनापति थे स्वयं लाखनदादा।

बड़े ही जोश के साथ शत्रु सेना का सामना किया गया। सेना हमारे उत्साह व साहस के आगे टिक नहीं पाई, भाग खड़ी हुई।

दूसरे दिन लाखनदादा ने पूरे गांव का भ्रमण किया और यह जानना चाहा कि किस-किस का क्या नुकसान हुआ है। इसी भ्रमण के दौरान उन्हें पता चला कि ठाकुर की नवयौवना बेटी का सैनिकों ने अपहरण कर लिया है।

बिरजू ने घबराई हुई आवाज में पुकारा, लाखनदादा! लाखनदादा! लाखनदादा!

क्या बात है बिरजू! ऐसे घबराये हुए से क्यों लग रहे हो?

लाखनदादा! अभी-अभी मैं उधर से आ रहा था कि दो स्याहपोश घुड़सवार मुझे मिले और यह पत्र दिया और साथ में यह धमकी भी दी कि यह पत्र सिर्फ आपके हाथ में ही पहुंचे वरना वे मुझे गोली से उड़ा देंगे। जब उसने पत्र खोलकर पढ़ा तो देखा-- लाखन! अगर ठाकुर की बेटी की लाज सुरक्षित रखना चाहते हो तो सुबह से पहले इस गांव को ही नहीं इस देश को भी छोड़ दो। वरना उस छोकरी की दुर्दशा देख नहीं पाओगे और गांव को भी विनाश के गर्त में धकेल दिया जाएगा। लाखन पर वज्रघात-सा लगा। गांव को छोड़ना हर खुशी को छोड़ना था। उसे किसी से लगाव था तो वह थी--उसके गांव की माटी। जिसकी गोद में खेल-खेल कर वह अपनी अनाथता के सारे दुःख को भूल गया था। इस माटी की रक्षा-सेवा करने के अलावा उसने कुछ किया ही क्या था।

लाखन ने रातों रात सामान समेटा। झोंपड़ी से बाहर आया और बैठ गया वहीं इसी चबूतरे के पास। कितना फूट-फूट कर रोया था वह उस दिन।

उसने माटी को सिर से लगाया और कहा--हे मातृभूमि! मैं जा रहा हूं। मैंने जो कुछ पाया तुम्हारी गोदी में पाया। तुम्हारी रक्षा व सुरक्षा को ही अपना कर्त्तव्य समझा था। आगे भी प्राणान्त तक समझता रहूंगा। ''अगर किसी भी शब्द को बोलने में गौरव होता है तो वह है मां''-- अज्ञात के इस वाक्य को वह भूल नहीं पा रहा था। अन्तिम सलाम के साथ वह चल पड़ा।

उसने फिर मुड़कर कहा--मां। यह भूमि, यह गांव, ये ग्रामीण सब तुम्हारे हवाले हैं। तुम्हारे इन बेटों में वह शक्ति सदैव भरी रहे जिससे मां के पैरों में सांकल डालने वालों के हाथों को काटने में उसके बेटे तत्पर रहे। वह चला गया।

45 वर्षों के बाद पुनः वह इस गांव में आया है और झोंपड़ी को खोज रहा है। ग्वाले के वाक्य ने उसका ध्यान भंग कर दिया। उसने कहा--कहां खो गये थे बाबूजी!

उसने कहा--अरे कहीं नहीं। फिर क्या हुआ तुम्हारे लाखनदादा का?

विशाल ने कहा--मैं नहीं जानता फिर क्या हुआ। मैं क्या, कोई नहीं जानता कि लाखनदादा का क्या हुआ पर उनकी याद आज भी हमें सताती है। उनके आने की राह आज भी हम देख रहे हैं।

लाखन के मन में आया-विशाल को गले लगा ले और कह दे यह रहा तुम्हारा लाखनदादा! पर उसने अपने आप पर काबू पा लिया।

विशाल ने कहा--आप झोंपड़ी के बारे में पूछ रहे थे, यह जो सामने मन्दिर खड़ा है उसी झोंपड़ी की जगह पर है। हम लोगों ने यह मन्दिर बनवाया और इसके प्रांगण में बैठकर हम लाखनदादा को याद करते हैं, आंसू बहाते हैं और उनको यहां बुलाने की कोशिश करते हैं।

विशाल की बातें सुनकर लाखन भी खो सा गया। वह इस उधेड़बुन में था कि अपना परिचय गांव वालों को दे या नहीं। इसी के साथ एक विचार और उसके भीतर पैदा हुआ--काश! वह एक-एक गांव में एक-एक लाखनदादा तैयार कर सकता जो कि अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता को अखण्ड रख सकता, अपनी मिट्टी की लाज सुरक्षित रख सकता। एक-एक ऐसे लाल को तैयार कर सकता जो जननी व जन्म भूमि के गौरव को, उसकी महिमा को आंक सकता। काश! एक बार फिर..... .....एक बार फिर वह अपने मूल रूप में.....प्रकट....हो सकता। उसके मन में बार-बार देशहित और देश भक्ति के भाव उफान ले रहे थे।

सारा गांव उस मन्दिर की ओर उमड़ रहा था। सम्भवतः लोगों ने अपने लाखनदादा को पहचान लिया था। महापुरुष किसी भी वेशभूषा में छिपाने से नहीं छिप सकते। जन-जन का उत्साह देखने लायक था। स्त्रियां स्वागत गीत गा रही थीं। बच्चे फूलों की सौगात भेंट कर रहे थे। मन्दिर वही, पुजारी वही किन्तु अपने भगवान को पाकर इस गांव का तृण-तृण, कण-कण आह्लादित हो उठा था।

***72, कैलाश पार्क-अर्थला***
***पोस्ट-मोहननगर 201007 (गा.-उ.प्र.)***

# आलोचना बनाम गुप्त प्रशंसा

**डॉ. शुद्धात्म प्रकाश जैन**

आलोचना से डरें नहीं। कोई आपकी आलोचना कर रहा है अर्थात् आप उनके लिए महत्वपूर्ण बन गये हैं। आपने वह स्थान हासिल कर लिया जो वे नहीं कर सके। आलोचना का मतलब होता है कि आप कुछ खास हासिल कर रहे हैं और लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे हैं। कई लोग अक्सर अपने से ज्यादा शिक्षित या ज्यादा सफल लोगों की धज्जियां उड़ाने में संतुष्टि का अनुभव करते हैं।

जब भी कोई आपकी आलोचना करे तो आप अपनी ऊर्जा, समय बर्बाद कर उन्हें जवाब देने का प्रयास नहीं करे। आपके पुरुषार्थ से भटकाने का ही तो उनका उद्देश्य है। वे अपनी श्रेणी में ही आपको शामिल कर राह से भटकाना चाहते हैं।

जब कोई किसी की आलोचना कर रहा होता है कि आलोच्य का चरित्र लोगों के सामने उजागर होने के बजाय आलोचक का ही स्वरूप स्पष्ट होता है। शॉपेनहार ने बहुत पहले कहा था-''घटिया लोग महान लोगों की गलतियों और मूर्खताओं में बहुत आनन्द लेते हैं।''

कोई भी महत्वपूर्ण व्यक्ति न तो दूसरे की आलोचना करेगा न ही आलोचना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करेगा। उसके पास अपने कार्यों के लिए ही समय कम पड़ता है। याद रखें, अनुचित आलोचना दरअसल छुपी हुई प्रशंसा है।

एक बार डेल कारनेगी के एक शिक्षार्थी ने उनकी आलोचनात्मक प्रतिक्रिया को वहां के अखबार ''सन'' में प्रकाशित किया। इससे डेल कारनेगी पहले तो थोड़े परेशान हुए, लेकिन बाद में उनका जो चिन्तन रहा, वह इस प्रकार का था--''अखबार खरीदने वाले आधे लोगों ने तो उस लेख को देखा ही नहीं होगा। जिन लोगों ने इसे पढ़ा होगा, उनमें से आधों को यह हानिरहित मनोरंजन का स्रोत लगा होगा। जिन लोगों को इसे पढ़कर मजा आया होगा, उनमें से आधे इसे कुछ सप्ताह में भूल गये होंगे।''

दरअसल लोग आपके या हमारे बारे में नहीं सोचते हैं, या वे इस बात की परवाह नहीं करते कि हमारे बारे में क्या कहा जाता है। वे तो अपने बारे में सोच रहे हैं। आपकी या मेरी मौत की खबर से हजार गुना ज्यादा चिन्ता उन्हें अपने सिर के छुटपुट दर्द की होती है।

अगर आपकी आलोचनाएं हो रही हैं तो इसका मतलब है कि आप काम कर रहे हैं और काम को सही तरीके से करने का प्रयास कर रहे हैं। एलीनोर रूजवेल्ट ने कहा है कि हम एक ही तरीके से आलोचना से बच सकते हैं--यही कि हम डेस्टन चाइना की मूर्ति बन जायें और शेल्फ पर बने रहें।

आपको अपने दिल में जो सही लगता है वह करें, क्योंकि आपकी आलोचना तो वैसे भी होगी। अगर आप कुछ करेंगे तो भी आपकी आलोचना होगी और अगर आप कुछ नहीं करेंगे तो भी आपकी आलोचना होगी। इस तथ्य को और स्पष्ट करने के लिए एक दृष्टान्त को लेते हैं--

एक बार एक व्यक्ति ने अगरबत्तियों की एक दुकान खोली और उसके बाहर एक बोर्ड पर लिख दिया--''यहां सुगन्धित अगरबत्तियां बिकती हैं''। कुछ समय में एक ग्राहक आया और बोला-- ''भाई साहब! इस बोर्ड में ''यहां'' शब्द अनावश्यक है, क्योंकि आपकी दुकान तो स्थिर है। भाई साहब ने बोर्ड से ''यहां'' शब्द को हटा दिया। कुछ समय बाद एक और व्यक्ति आया और बोला--''भाई साहब! आप अगरबत्तियों को निःशुल्क तो देंगे नहीं, अतः ''बिकती है'' यह शब्द अनावश्यक है और इस प्रकार भाई साहब ने ''बिकती है'' शब्द भी हटा दिया।

कुछ समय बाद एक अन्य व्यक्ति ने आकर कहा--'' कोई ग्राहक इतना मूर्ख तो होगा नहीं कि वह बिना सुगन्धित अगरबत्तियों को लेगा, वह तो स्वयं जांच पड़ताल करके ही खरीदेगा तो यहां ''सुगन्धित'' शब्द अनावश्यक लग रहा है। भाईसाहब बोले--आप ठीक कहते हैं और उन्होंने वह शब्द भी हटा दिया।

अब बोर्ड पर सिर्फ ''अगरबत्तियां'' लिखा हुआ था। तभी एक और व्यक्ति आया और बोला भाईसाहब इस गली के नुक्कड़ तक तो आपकी अगरबत्तियों की खुशबू फैली हुई है और कोई भी उस मैन रोड से निकलता है तो उसे स्वयमेव यह पता चल जाता है कि यहां कोई अगरबत्तियों की दुकान है तो आपने यहां ''अगरबत्तियां'' क्यों लिख रखा है? आखिर भाईसाहब ने वह शब्द भी मिटा दिया।

अभी कहानी यहीं समाप्त नहीं हुई है। कुछ समय बाद एक और आदमी वहां आया और बोला--''भाईसाहब! आपने इतनी अच्छी और सुगन्धित अगरबत्तियों की इतनी खूबसूरत दुकान खोली, लेकिन इसमें जरा-सी कमी खल रही है। आपको यहां एक बोर्ड लगाना चाहिए था और उस पर लिखा होता--''यहां सुगन्धित अगरबत्तियां बिकती हैं''। यह सुनकर भाईसाहब ने अपना माथा ठोक लिया।

उक्त प्रसंग से यही निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आलोचना किसी भी तरह कार्य करने और कार्य न करने से भी हो सकती है अतः जो काम अच्छा हो उसे पूरे मन से करें और आलोचनाओं की चिन्ता छोड़ दें।

आलोचना से बचने के लिए सभी को खुश करने का प्रयास नहीं किया जा सकता। यह प्रयास ठीक मेंढ़कों को तौलने जैसा प्रयास होगा। अमेरिकन इंटरनेशनल कॉरपोरेशन के प्रेसिडेंट स्वर्गीय मैथ्यू सी. ब्रश ने इस संदर्भ में कहा है-''मैं उस पहले आदमी को खुश करने की कोशिश करता था जो मेरे खिलाफ बोलता

था, परन्तु मैं उसके साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए जो करता था, उससे कोई और पागल हो जाता था। फिर जब मैं उस दूसरे आदमी के साथ पटरी बैठाता था तो दो और लोग मधुमक्खियों की तरह भिनभिनाने लगते थे। मैंने अंत में यह जान लिया कि व्यक्तिगत आलोचना से बचने के लिए आहत भावनाओं को शांत करने और ठंडा करने की मैं जितनी कोशिश करूंगा, मेरे दुश्मनों की संख्या उतनी ही बढ़ती जायेगी। आखिरकार मैंने खुद से कहा--'' अगर तुम अपना सिर भीड़ से उपर उठाते हो तो तुम्हारी आलोचना होना तय है। इसलिए इसकी आदत डाल लो। इससे मुझे बहुत मदद मिली।''

जब भी आप किसी अनुचित आलोचना के शिकार हो तो आप उसका मुस्कुराकर स्वागत करें। इससे आलोचक स्वयं ही ग्लानि महसूस करेगा। आप उस आदमी को तो जवाब दे सकते हैं जो आपको पलटकर जवाब दें, परन्तु आप उस आदमी को क्या कह सकते हैं जो ''सिर्फ हंस'' दें।

गृहयुद्ध के तनाव में लिंकन टूट ही गये होते अगर उन्होंने यह नहीं सीखा होता कि कटु निन्दा का जवाब देने की कोशिश करना मूर्खता ही थी। आलोचकों का सामना उन्होंने किस तरह किया, इसका वर्णन एक साहित्यिक रचना है। युद्ध के दौरान जनरल मैक्आर्थर के पास इसकी एक प्रति उनके मुख्यालय की डेस्ट के उपर टंगी थी। यह सूत्र था--''अगर मैं अपनी सारी आलोचनायें पढ़ने की कोशिश करूं (उनका जवाब देने की बात तो रहने ही दें) तो मैं कोई दूसरा काम कभी कर ही नहीं पाउंगा।''

उक्त उद्धरण से यह सिद्ध होता है कि अपनी क्षमता के हिसाब से आलोचना के भय से रहित सर्वश्रेष्ठ काम करना चाहिए। अगर अन्त में सफलता मिले तो आलोचना का कोई अर्थ नहीं रह जाता और अगर असफलता मिले तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दस देवदूत कसम खाकर कहें कि मैं सही हूं।

एक बार लिंकन के गृह सचिव एडवर्ड एम. स्टैंटन ने लिंकन को ''महामूर्ख'' कहा। जब लिंकन को बताया गया कि स्टैंटन ने क्या कहा था, तो लिंकन ने शांति से जवाब दिया--''अगर स्टैंटन ने कहा है कि मैं महामूर्ख हूं तो मैं निश्चित रूप से होउंगा, क्योंकि वे लगभग हमेशा सही होते हैं। मैं जरा उनके पास जाता हूँ और खुद हकीकत देख लेता हूं।''

लिंकन के स्टैंटन के पास जाने से दोनों के मध्य हुई गलतफहमी दूर हुई। लिंकन आलोचना का स्वागत करते थे, बशर्ते उन्हें लगे कि आलोचना गंभीर थी, ज्ञान पर आधारित थी और सहयोग की भावना के साथ की गई थी। आपको और हमें भी इस प्रकार की आलोचना का स्वागत करना चाहिए, क्योंकि हम चार में से तीन बार से ज्यादा सही होने की आशा तो नहीं कर सकते।

यदि कोई आपकी आलोचना करता है तो यह आपके लिए हितकारी ही है, क्योंकि आलोचनाएं आपको परिष्कृत करेंगी और आप अपने दोषों को दूर करने का प्रयास करेंगे। जैसा कि कहा गया है--

*निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय।*
*बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाय।।*

पेप्सोडेण्ट कम्पनी के पूर्व प्रेसिडेंट चार्ल्स लकमैन ने बॉब होप को रेडियो पर प्रस्तुत करने के लिए दस लाख डॉलर प्रतिवर्ष खर्च किये। वे कार्यक्रम के प्रशंसा भरे पत्रों को नहीं देखते थे, परन्तु वे इस बात पर जोर देते थे कि वे आलोचनात्मक पत्रों को पढ़ें। वे जानते थे कि उनसे वे कुछ सीख सकते थे।

फोर्ड कम्पनी अपने मैनेजमेंट और कार्यप्रणाली की गड़बड़ियों का पता लगाने के लिए इतनी उत्साही थी कि इसने कर्मचारियों की वोटिंग करवायी और उन्हें कम्पनी की आलोचना करने के लिए आमंत्रित किया। उक्त सभी उदाहरण हमें आलोचना से डरना नहीं, अपितु कमजोरियों से लाभ उठाना सिखाते हैं।

जब भी हमें अपनी आलोचना सुनाई दें तो ला रोशफूको के विचार को याद करें--''हमारे बारे में हमारे दुश्मनों के विचार हमसे ज्यादा सही होते हैं।'' जब भी अनुचित निन्दा के कारण आपका क्रोध बढ़ रहा हो तो एक मिनट ठहर कर सोचें कि जब आइंस्टीन मानते हैं कि वे निन्यानवें प्रतिशत समय गलत रहते थे, तो शायद मैं कम से कम अस्सी प्रतिशत समय तो गलत होता ही होउंगा। शायद यह आलोचना सही हो। अगर ऐसा है तो मुझे इसके लिए धन्यवाद देना चाहिए और इससे लाभ उठाने की कोशिश करनी चाहिए। कोशिश रहनी चाहिए कि जबकि कोई देख नहीं रहा है, क्यों न आप दर्पण में देखें और खुद से पूछें कि आप कहां गलत हैं और अपनी गलती की आलोचना होने से पहले ही उसे सुधार लें।

***मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़***

# विकास का गांधीवादी प्रतिमान

वंदना कुंडलिया

विकास एक जटिल एवम् बहुआयामी प्रक्रिया है। बीसवीं सदी में अनेक राष्ट्रों के उदय एवम् इनके द्वारा अपनी विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, समस्याओं के समाधान के परिणामस्वरूप 'विकास' शब्द का प्रयोग होने लगा। विकास को आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, राजनीतिक विकास, सांस्कृतिक विकास, मानव विकास इत्यादि अनेक रूपों में समझने का प्रयास किया गया है। विकास की प्रक्रिया जटिल एवम् बहुआयामी होने के कारण इसके अनेक प्रतिमान अस्तित्व में आए और अपने सिद्धान्तों के अनुसार विकास की व्याख्या की। विकास की पूंजीवादी प्रतिमान से लेकर साम्यवादी प्रतिमान ने मानव को परिधि में करके भौतिक सुख सुविधा एवम् उपभोग को जीवन का केन्द्र बना दिया। विकास के पश्चिमी प्रतिमान मूलतः अत्यधिक उपभोग, अत्यधिक उत्पादन की अवधारणा पर अवलंबित रहे हैं।

विकास के प्रति गाँधी की दृष्टि पश्चिमी देशों के प्रतिमान से सर्वथा विपरीत रही है। गाँधी ने कहा था--''मानव की न बुझने वाली भौतिक सुखों की चाह और उसकी खोज का गुणन करना एक बुराई है। मैं वादे से कह सकता हूँ कि पश्चिमी देशों को अपने विचारों का रूपान्तरण करना ही पड़ेगा नही तो वह अपनी ही विलासिता के बोझ के तले दब जायेंगे, जिसके वे दास बनते जा रहे हैं।'' गाँधी ने आगे कहा था कि ''एक ऐसा समय आएगा कि जो लोग आज अपनी इच्छाओं को बढ़ाने की होड़ में है, उन्हें उल्टे कदम लौटना पड़ेगा और पछताना पड़ेगा कि हमने यह क्या कर दिया।'' गाँधी के उपरोक्त कथनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि विकास का गाँधीवादी प्रतिमान आध्यात्मिक आदर्शवाद पर आधारित है जिसमें नैतिक विकास और नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया गया है। अधिकाधिक उपभोग एवम् अधिकाधिक उत्पादन पर आधारित विकास के पश्चिमी प्रतिमानों की आलोचना करते हुए गाँधी की विकासवादी दृष्टि संयम, श्रम और नैतिक पुर्ननिर्माण की पोषक है।

विकास के पश्चिमी प्रतिमान के संबंध में गाँधी का मत था कि--

- यदि हम पश्चिमी जीवन शैली एवम् गुणवत्ता को अपनाना चाहते हैं, तो सर्वप्रथम देश में संसाधनों एवम् ऊर्जा के असिमित भंडारों की पुष्टि करनी होगी।
- पश्चिमी विकास की पद्धति से सतत् विकास की संभावना नहीं हैं।
- गाँधी के अनुसार पश्चिमी विकसित राष्ट्र अपनी खुशहाली और वैभव को बनाए रखने के लिए साधन संपन्न विकासशील एवम् अविकसित राष्ट्रों का शोषण करेंगे व अन्य विकसित राष्ट्र इस कार्य में उनका सहयोग करके।
- उनके अनुसार प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुन्ध दोहन से देश का विकास तो होगा पर साथ ही विनाश की प्रक्रिया भी तीव्र होती चली जायेगी।

गाँधी का मत था कि भौतिक विकास गरीबी समाप्त करने की सीमा तक पर्याप्त होता है। एक निश्चित सीमा के बाद भौतिक विकास नैतिक अवनति को जन्म देता है। गाँधी के लिए अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र में कोई भेद नहीं था और उन्होंने नैतिक मूल्यों पर आधारित अर्थशास्त्र को ही वास्तविक अर्थशास्त्र की संज्ञा दी। उनके अनुसार अधिक पाने की कामना रखना गलत है क्योंकि अत्यधिक लालसा मनुष्य के अन्दर निहित ईमानदारी, नैतिकता जैसे सद्गुणों को समाप्त कर देती है। इसके अतिरिक्त अधिक इच्छा की पूर्ति के लिए अधिक उत्पादन करना होगा जो शब्द में शोषण केन्द्रीकरण और अन्यायपूर्ण वितरण को जन्म देती है। गाँधी का मानना था कि जैसे-जैसे अमीरी बढ़ती चली जाती है वैसे वैसे नैतिक चरित्रहीनता भी बढ़ती चली जाती है अतएव वे उन आर्थिक नितिओं को हानिकारक, अनैतिक और पापपूर्ण मानते थे जो व्यक्ति और राष्ट्र के नैतिक कल्याण को पोषित न करती हो। उनका विश्वास था कि एक व्यवस्थित समाज के अस्तिव के लिए न्यूनतम जीवन स्तर आवश्यक है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को रोटी, कपड़ा, मकान और शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए। गाँधी के लिए विकास का अर्थ करोड़पतियों की संख्या में वृद्धि करना न होकर भूखमरी समाप्त करना था।

गाँधी दृष्टि में विकास का मूल अर्थ है--अत्यधिक गरीबी को समाप्त करना। इस हेतु उन्होंने उत्पादन वृद्धि एवम् राष्ट्रीय साधनों के जीवन स्तर व भौतिक परिस्थितियों में सुधार लाने की वकालत की। किन्तु उत्पादन बढ़ाने के लिए गांधी ने औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण को प्रश्रय नहीं दिया क्योंकि वे मानते थे कि औद्योगिकीकरण मनुष्य के लालच और अधिक लाभ कमाने का प्रतिफल है। मशीन का अत्यधिक प्रयोग मानव राष्ट्र को बेरोजगार कर उसकी रचनात्मक गतिविधियों और व्यक्गित अर्हताओं को नष्ट कर देता है। अतः गाँधी ऐसी व्यवस्था के पक्षधर थे जिसमें उपयोग के लिए उत्पादन हो तथा जो ग्राम आधारित हो। उत्पादन के संदर्भ में गाँधी ने ''शरीर श्रम'' के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसका सार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन की आवश्यकता की पूर्ति के लिए शारीरिक श्रम अवश्य करना चाहिए। वितरण के संबंध में उनका मानना था कि एक न्यूनतम वेतन प्रत्येक व्यक्ति को मिलना चाहिए जिसमें वह अपनी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

गाँधी की विकास की अवधारणा में स्वदेशी के संप्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है जिसका तात्पर्य घरेलू अर्थव्यवस्था से हैं। स्वदेशी देशी वस्तुओं और उत्पादों के प्रयोग के द्वारा निर्धनता निवारण का मार्ग

प्रशस्त करता है। स्थानीय स्वशासन एवम् आत्मनिर्भरता विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। समाज में व्याप्त आर्थिक असमानताओं को दूर करने का विकल्प भी गाँधी के प्रतिमान में दृष्टिगत होता है। गाँधी ने 'अपरिग्रह' के सिद्धान्त पर आधारित ट्रस्टीशिप की विचारधारा प्रस्तुत की जिसके अनुसार व्यक्ति को अपनी आवश्यकता से अधिक धन को तिजोरी में बन्द करके नहीं रखना चाहिए अपितु अपनी आवश्यकता से अधिक धन को अपने पास जनता की रखी अमानत समझना चाहिए। गाँधी चाहते थे कि धनवान लोग निर्धनों के संरक्षक बन जाए और यदि स्वेच्छा से नहीं बने तो सत्याग्रह का प्रयोग करके उनकी विपुल संपदा का लोकहित मे प्रयोग कर आर्थिक समानता को कम किया जा सकता है।

यह कहा जा सकता है कि गाँधी ने ऐसे विचारों का प्रतिपादन किया जो व्यवहारिक जीवन में उपयोगी, समाज की व्यवस्था को संगठित और संतुलित बनाने में, तथा मानव जीवन को सुखी तथा शांतिमय बनाने में सहायक हो उनके विकास का मॉडल विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया के द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने पर आधारित है। स्वदेशी के सिद्धान्तों का सही ढंग से पालन करने पर ही समाज का सार्थक विकास संभव है। गाँधी के विकास के प्रतिमान को दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण माना जाता है--

- यह भौतिक समृद्धि की अपेक्षा में आत्मविश्वास और नैतिक विकास को प्राथमिकता देता है।
- यह आधुनिक मशीनों, तकनीकों एवम प्रौद्योगिकी की तुलना में बुनियादी स्तर पर काम करने वालों एवम ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास का पोषक है।

वर्तमान आधुनिक युग में ऐसे विकास के प्रारूप की आवश्यकता है जो नैतिकता के साथ प्रगति के मापदण्ड निश्चित रखें। विकास की ऐसी पद्धति की आवश्यकता है जो विकासशील देशों में वस्तुओं के समतावादी विवरण और उन देशों की आवश्यकताओं, समस्याओं और अनुभवों के अनुसार उन्हें आत्मनिर्भर बना सके। ऐसे समय में गाँधी के विकास का प्रतिमान अनेक दृष्टियों से प्रासंगिक है। विश्व क्षितिज जब यह चेतना उभरने लगी है कि यदि मानव को अपना अस्तित्व बनाए रखना है तो उसे प्रकृति के साथ तालमेल बिठाना होगा एवं अपने भौतिक विकास की सीमा निश्चित करनी होगी। इस संकटकालीन स्थिति में गाँधी की विकास की दृष्टि सर्वथा उचित है जो पर्यावरण अनुकूल विकास पर आधारित है। उनके विकास के मॉडल में पर्यावरण, सामाजिक एवम आर्थिक दिशा निर्देशों का समुचित मिश्रण है जो एक सतत् समाज की रचना कर सकते है। हेटन के शब्दो में--''कई मुद्दों पर गाँधी के विचार काफी आधुनिक हैं, उनके दृष्टिकोण को नैतिक सर्वव्यापक व क्रियात्मक कहा जा सकता है।''

***कनिष्ठ शोध अध्येता***
***जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं***

**पैरों के नीचे धरती तो पथ होगा,**
**भरा हुआ हैं मन तो सीमा होगी,**
**शून्य ही हो सकता हैं अपथ और असीम।**
**-- आचार्य महाप्रज्ञ**

***With best compliments from :***

**Prakash Chand Baid**

**BAID INDIA (P) LIMITED**

**9, India Exchange Place,**
**5th Floor, KOLKATA (W.B.)**
**M. : 09339339512**

संस्मरण

# मोरारजी भाई को अहिंसा पुरस्कार

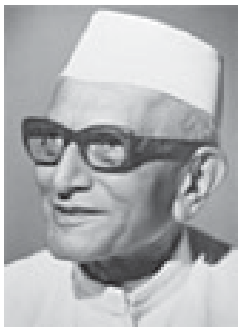

**मुनि राकेशकुमार**

गुरुदेव तुलसी के आचार्य पदारोहण के पचास वर्ष की संपन्नता पर अमृत महोत्सव का आयोजन किया गया। उस अवसर पर नैतिक और आध्यात्मिक जागरण के विविध कार्यक्रम आयोजित हुए। यह समारोह विभिन्न चरणों में लगभग एक वर्ष में संपन्न हुआ। गुरुदेव तुलसी आचार्य पद पर आरूढ़ मेवाड़ (उदयपुर) की धरती पर हुए थे। इसलिए अमृत महोत्सव के मुख्य कार्यक्रम मेवाड़ में हुए। उस वर्ष का चातुर्मास आमेट में था। वहां पंजाब के प्रसिद्ध संत लोंगोवाल पूर्व मुख्यमंत्री सुरजीत सिंह बरनाला के साथ आमेट में आचार्यश्री से मिले। उस ऐतिहासिक भेंट में पंजाब समस्या के समाधान की सुंदर भूमिका का निर्माण हुआ।

अमृत महोत्सव समिति के अध्यक्ष शुभकरण दस्साणी थे। अमृत महोत्सव का एक विशेष कार्यक्रम जैन विश्व भारती (लाडनूं) में आयोजित हुआ, उसमें पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी भाई देसाई ने भी भाग लिया। उस अवसर पर मोरारजी भाई को समिति की ओर से अहिंसा पुरस्कार देने की घोषणा की गयी।

मोरारजी भाई एक सिद्धांतवादी व्यक्ति थे। उन्होंने जीवन भर महात्मा गांधी के आदर्शों पर चलने का प्रयास किया। गांधीजी ने स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए मद्य-निषेध पर प्रमुखता से बल दिया पर उनके अधिकांश अनुयायियों में इस आदर्श को विस्मृत-सा कर दिया। मोरारजी भाई ने इस सिद्धांत पर पूर्ण दृढ़ता का परिचय दिया। जब से उनका अणुव्रत से सम्पर्क और सम्बन्ध बना वह क्रमशः बढ़ता ही गया। उन्होंने अपनी व्यस्तता में भी अणुव्रत के समारोहों में अनेक बार भाग लिया तथा आचार्य तुलसी के विचारों और कार्यक्रमों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। अहिंसा पुरस्कार प्रदान करने का यह समारोह मुम्बई में करने का निर्णय लिया गया। मुम्बई में उस समय मेरा और साध्वी कंचनप्रभा का चातुर्मास था। 2 मई 1987 को सुन्दरा बाई हॉल में हमारे सान्निध्य में यह समारोह आयोजित हुआ। राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह पुरस्कार प्रदान करने के लिए दिल्ली से मुम्बई आये। महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. शंकरदयाल शर्मा और मुख्यमंत्री शंकरराव चव्हाण भी इस अवसर पर उपस्थित थे। शुभकरण दस्साणी ने आचार्य तुलसी और युवाचार्य महाप्रज्ञ के संदेशों का वाचन किया तथा राष्ट्रपति को पुरस्कार प्रदान करने का निवेदन किया।

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा-- आचार्य तुलसी मानवता के संदेशवाहक धर्माचार्य है। उन्होंने सभी धर्मों में एकता और सद्भावना के विचारों को जन-जन में आगे बढ़ाया है। देश में धर्माचार्य बहुत हैं पर आचार्य तुलसी मेरी नजर में उन सब में विलक्षण है। उनके आचार्य पद के पचास वर्ष पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव मनाने का चिंतन बहुत उचित हुआ है। इसके साथ ही इस अवसर पर मोरारजी भाई को अहिंसा पुरस्कार प्रदान करने का जो निर्णय लिया गया है यह हम सभी के लिए खुशी का विषय है। मोरारजी भाई एक आदर्शवादी और सिद्धांतवादी राजनेता है। जब मुझे यह पुरस्कार प्रदान करने को कहा गया तो मैंने सहर्ष स्वीकृति दी। अहिंसा पुरस्कार के लिए अमृत महोत्सव समिति ने सही व्यक्ति का चयन किया है। राष्ट्रपतिजी ने अपने वक्तव्य के बाद मोरारजी भाई को प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार राशि भेंट की। मोरारजी भाई ने भी खड़े होकर सम्मान के साथ पुरस्कार को ग्रहण किया। उस समय उपस्थित जन समूह ने हर्ष ध्वनि की। राज्यपाल डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने कहा--आज देश में भौतिक प्रगति तेजी से हो रही है पर नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा के बिना राष्ट्र का भविष्य उज्जवल नहीं हो सकता। आचार्य तुलसी के अणुव्रत के संदेश की आज देश को सबसे अधिक जरूरत है। मैं वर्षों से अणुव्रत के कार्यक्रमों से जुड़ा हुआ हूं।

मोरारजी भाई ने अपने वक्तव्य में कहा--आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव समिति ने आज जो मेरा सम्मान किया है, इसके लिए मैं कहां तक योग्य हूं मैं यह नहीं कह सकता। पर अहिंसा के सिद्धांत में मेरी गहरी आस्था है और भविष्य में भी रहेगी। मैं अहिंसा को परम धर्म मानता हूं। जीवन के हर क्षेत्र में उसकी प्रतिष्ठा होनी चाहिए, तभी स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है। अहिंसा को सिर्फ धार्मिक क्षेत्र तक सीमित रखना उचित नहीं है। शिक्षा, व्यापार, राजनीति व प्रशासन सबके साथ उसका सम्बन्ध जोड़ना चाहिए। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से सामाजिक और व्यावहारिक जीवन में अहिंसा के संस्कार को आगे बढ़ाया है। यह बहुत आवश्यक है। जो राशि आपने इस पुरस्कार के साथ मुझे प्रदान की है, मैं इसे गुजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद) को प्रदान करता हूं।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शंकरराव चव्हाण ने कहा--आचार्य तुलसी एक महान विभूति है। उन्होंने देश की हजारों मील धरती को अपने पांवों से मापा है। मेरा उनसे बहुत निकट संपर्क रहा है। आचार्यश्री जिस पंथ के आचार्य हैं वह प्रभु का पंथ है। उसमें सभी को प्रवेश का अधिकार है। मोरारजी भाई हमारे देश के गौरव हैं, इस अवसर पर उपस्थित होकर मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं। पंजाब समस्या के समाधान में आचार्यश्री का प्रमुख योगदान रहा है। उस समय मैं केन्द्र सरकार में गृहमंत्री था। मैंने आमेट में आचार्यश्री के दर्शन भी किए।

मैंने अपने वक्तव्य में कहा--अहिंसा सभी धर्मों का प्रमुख संदेश है। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से अहिंसा को जीवन के हर क्षेत्र के साथ जोड़ा है। उन्होंने समाज और राष्ट्र में व्याप्त हिंसा को दूर करने के लिए विविधमुखी प्रयास किए हैं। संस्कृत साहित्य में मनुष्यों का समूह समाज कहलाता है तथा पशुओं का समूह समज कहलाता है। यह एक मात्रा का अंतर अहिंसा का सूचक है। अहिंसा के अभाव में मनुष्य का आचरण भी पशु के समान हो जाता है। अहिंसा की साधना के लिए हर व्यक्ति को संयम प्रधान जीवनशैली का विकास करना चाहिए।

साध्वी कंचनप्रभा की सहयोगी साध्वी मंजूरेखा ने अपने वक्तव्य में कहा--आज तक मानव समाज ने जो प्रगति की है वह अहिंसा के प्रभाव से की है। हिंसा से मनुष्य की बुद्धि मलिन होती है व शक्ति का दुरुपयोग होता है। मुनि सुव्रत ने प्रेरक गीत का संगान किया। मुनि हर्षलाल द्वारा सूक्ष्म अक्षरों में लिखित श्रीमद् भागवद् गीता की फोटो स्टेट प्रतियां अतिथियों को भेंट की गयी। मोरारजी भाई ने इसे हाथ में लेकर पढ़ने का प्रयास किया। संयोजन चन्दनमल 'चांद' ने किया। कार्यक्रम में अहिंसा और सर्वोदय से संबंधित संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। आयोजन के समाचार नेशनल न्यूज ने प्रमुख रूप से प्रसारित किया तथा मुम्बई के सभी भाषाओं के मुख्य पत्रों में प्रकाशित हुए।

समारोह के पूर्व दिन पत्रकार संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसमें हिन्दी, गुजराती व मराठी भाषा के पत्रकारों ने भाग लिया। उन्होंने अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत की, जिनका यथोचत समाधान किया गया।

प्रश्न : मोरारजी भाई जब मुंबई के मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने आंदोलनकारियों पर गोली चलाने का आदेश दिया था, क्या ऐसे व्यक्ति को अहिंसा पुरस्कार देना अणुव्रत की विचारधारा के प्रतिकूल नहीं है।

उत्तर : समाज और राष्ट्र की सुरक्षा और सुव्यवस्था के लिए जो हिंसा होती है, वह हिंसा अवश्य है। पर अणुव्रत की आचार संहिता के प्रतिकूल नहीं है।

प्रश्न : गोली चलाना स्पष्ट हिंसा है। फिर उसे अणुव्रत के अनुकूल कैसे माना जा सकता है?

उत्तर : भगवान महावीर अहिंसा धर्म के महान व्याख्याता और उपदेशक थे। अनेक राजा और सेनापति उनके अनुयायी श्रावक थे। उन्होंने देश और न्याय की रक्षा के लिए संग्राम भी किए थे। इसी प्रकार किसी नेता को समाज और नगर की सुव्यवस्था के लिए हिंसा का आदेश देना पड़ सकता है।

प्रश्न : अणुव्रत के लिए अहिंसा की आचार संहिता क्या है?

उत्तर : निरपराधी प्राणी की संकल्पपूर्वक हिंसा नहीं करना।

प्रश्न : क्या अणुव्रती खेती भी कर सकते हैं?

उत्तर : हिंसा के तीन प्रकार शास्त्रों में बताए हैं-- अणुव्रती संकल्पजा हिंसा का परित्याग करता है। व्यक्ति और समाज की आवश्यकता के लिए हिंसा होती है व आरंभजा हिंसा है। सुरक्षा के लिए जो हिंसा होती है वह विरोधजा हिंसा है। निरपराधी जंगम प्राणियों की हिंसा करना संकल्पजा हिंसा है।

प्रश्न : आज पारिवारिक हिंसा इतनी बढ़ रही है इसके लिए आप लोग क्या करते हैं?

उत्तर : परिवारों को अहिंसा का प्रशिक्षण देते हैं, पारिवारिक शांति के लिए शिविर भी आयोजित किए जाते हैं। अणुव्रत के साथ प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के प्रयोग कराये जाते हैं। अहिंसक मस्तिष्क निर्माण के लिए ध्यान का अभ्यास कराया जाता है।

पत्रकार गोष्ठी के संवाद जनकल्याण (गुजराती साप्ताहिक) में विस्तार से प्रकाशित हुए।

## झाँकी है हिन्दुस्तान की

- माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई 8848 मीटर है। इसके पास माउंट ल्होत्से पर चढ़ाई का क्रेज भी काफी है। यह धरती पर चौथी सबसे ऊंची चोटी है। इसकी ऊंचाई 8,548 मीटर है। इसके अलावा नुपत्से (7855 मीटर) और चांगत्से (7580 मीटर) भी हैं।

- माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के दो रास्ते हैं। पहला तिब्बत की ओर से (नॉर्थ-ईस्ट रूट) और दूसरा नेपाल (साउथ-ईस्ट रूट) की ओर से है। इनमें साउथ-ईस्ट रूट ज्यादा आसान है और ज्यादा इस्तेमाल होता है। हिलेरी और नोरगे इसी से एवरेस्ट पर गए थे। इसके अलावा भी कई ऐसे रूट हैं जिनसे कम चढ़ाई की गई। 29 मई एवरेस्ट डे के नाम से जाना जाता है। अतः यहां मई में जमकर चढ़ाई होती है और मानसून के बाद सितंबर, अक्टूबर में भी कोशिश होती है।

- देश में मनाली आदि जगहों पर सरकार के कई माउंटेनियरिंग संस्थान हैं। यहां पर कम खर्च में एक्सपिडिशन के लिए अप्लाई किया जा सकता है। शुरुआत में प्री एवरेस्ट एक्सपिडिशन होता है, जिसमें 7000 मीटर से ऊंची पहाड़ियों पर टीम ले जाई जाती है। सन् 2000 में करीब 8 सदस्यों का खर्च करीब 70 लाख तक था पर अब अगर व्यक्तिगत एजेंसियों के जरिए जाएं तो एक सदस्य का खर्च ही 50 लाख तक पड़ेगा।

- अरुणाचल प्रदेश की 32 साल की अंशु ने इस बार रेकॉर्ड कायम किया। 12 मई और 21 मई को एवरेस्ट पर चढ़कर वह एक ही सीजन में लगातार दो बार एवरेस्ट फतेह करने वाली महिला बन गई। 32 साल की सुषमा 24 साल के विकास कौशिक के साथ एवरेस्ट पर चढ़ीं और ऐसा करने वाला यह पहला इंडियन कपल बन गया।

- इस साल माउंट ल्होत्से पर चढ़ाई करने वाले नोएडा के अर्जुन वाजपेयी ने पिछले साल 16 साल की उम्र में ही एवरेस्ट पर चढ़ाई कर ली थी। और अब वह दुनिया के सात महाद्वीपों की सबसे ऊंची चोटियों को फतेह करने वाले सबसे कम उम्र के शख्स बनना चाहते हैं।

बढ़ें संयम पथ पर

**लोकमान्य गोल्छा**

अध्यक्ष

गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन

एवं

समस्त गोल्छा परिवार

**गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)**

**फोन नं. : 4250001/4249939 (D)**

**फैक्स : 00977-1-4249723**

www.terapanthinfo.com



# आचार्य महाश्रमण अणुविभा और तुलसी साधना शिखर में

## कैदियों ने लिया नशा छोड़ने का संकल्प

**१४ मई, राजसमंद।** अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने प्रातः वेला में अणुव्रत विश्वभारती के लिए प्रस्थान किया। इस क्रम में आचार्यश्री कुछ घुमावदार रास्ता लेकर प्रस्तावित अणुव्रत भवन के शिलान्यास स्थल की ओर पधारे। किन्तु मार्ग में बिछी सचित्त मिट्टी के कारण शिलान्यास स्थल से दूर ही कार्यकर्ताओं को मंगलपाठ सुनाकर पुनः अणुविभा की ओर प्रस्थित हो गए। मध्यवर्ती नगरपालिका मंडल के कार्यालय में पालिकाध्यक्ष आशा पालीवाल एवं अन्य पार्षदों ने पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया। पार्षदों ने नगरपालिका की ओर से अभिनंदन पत्र समर्पित किया। आचार्यश्री ने उपस्थित लोगों को आध्यात्मिक पथदर्शन प्रदान किया।

पालिका से प्रस्थान कर आचार्य महाश्रमण राजसमन्द के जिला कारागृह में पधारे। जेल अधीक्षक श्रीधर शर्मा ने आचार्य महाश्रमण का स्वागत करते हुए सादर आभार ज्ञापित किया। आचार्य महाश्रमण ने यहां उपस्थित कैदियों को सद्गुणों को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्य महाश्रमण के आह्वान पर बड़ी संख्या में कैदियों ने नशा छोड़ने का संकल्प व्यक्त किया।

दो संक्षिप्त कार्यक्रमों के पश्चात आचार्यश्री अणुव्रत शिक्षक संसद के केन्द्रीय कार्यालय में पधारे। अध्यक्ष भीखमचन्द नखत एवं डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने संस्थान की गतिविधियों की अवगति दी। अणुविभा के मार्ग में अणुव्रत, जीवन विज्ञान, ज्ञानशाला, जीवनशैली आदि आदि से संबद्ध झांकियों में विभिन्न शिक्षा संस्थानों से जुड़े बच्चों के द्वारा अणुविभा की बालोदय प्रवृति को साकार प्रस्तुति दी गई। झांकियों का अवलोकन करते हुए नवनिर्मित सड़क से आचार्य महाश्रमण अणुविभा विश्व मैत्री अतिथिगृह में पधारे। आज का प्रवास यहीं रहा। राजसमन्द झील से सटी पहाड़ी पर स्थित यह स्थान रमणीय है।

तुलसी साधना शिखर में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में बालिका मनस्वी व्यास ने सुमधुर गीत का संगान किया। अणुविभा के अध्यक्ष तेजकरण सुराणा, तुलसी साधना शिखर के अध्यक्ष भंवरलाल डागलिया, कार्याध्यक्ष भंवरलाल बागरेचा, गणेश डागलिया के स्वागत भाषण के पश्चात अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, मुनि पानमल एवं बिहारीलाल कावड़िया ने अपने सारगर्भित विचार रखे। अणुविभा के संस्थापक मोहनभाई जैन की कविता को उनकी सुपुत्री वीणा ने प्रस्तुति दी। लक्ष्मणसिंह कर्णावट ने भी अपनी भावपूर्ण कविता प्रस्तुत की।

समारोह के मुख्य अतिथि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के वाइस चांसलर वी. एन. पिल्लई ने कहा--'गत पांच वर्षों से हमारे विश्वविद्यालय में अणुव्रत मेमोरियल लेक्चर का आयोजन किया जा रहा है।' उन्होंने विश्वविद्यालय में शीघ्र ही 'आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा पीठ' स्थापित करने की घोषणा की। कार्यक्रम के अध्यक्ष राजस्थान पुलिस के एडीजी टी.एल.मीणा ने आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में अणुव्रत आन्दोलन और अहिंसा यात्रा को मानवता के लिए त्राण बताया।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा--'आज हम अणुविभा और तुलसी साधना शिखर आए हैं। तुलसी और अणुव्रत--दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं। अणुविभा की बालोदय प्रवृति बच्चों के संस्कार-निर्माण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यहां आने वाले बच्चों को सूचनात्मक और जीवनोपयोगी जानकारी मिल सकती है। लगभग तीन वर्ष पूर्व मैंने स्वयं घंटों समय लगाकर इसका अवलोकन किया था। संचय जैन वर्षों से यहां कार्य में संलग्न है। मैंने देखा--वह शालीन और समझदार युवक है। इसके मन में कार्य के प्रति तड़प है, निष्ठा है। तुलसी साधना शिखर रमणीय और साधना के लिए उपयुक्त स्थान है। यहां रह कर साधक साधना करें, अध्यात्म का प्रयोग करें अथवा ध्यान शिविर लगते रहें तो इस स्थान की उपयोगिता और बढ़ सकती है। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के महामंत्री संचय जैन ने किया।

मध्याह्न में अणुविभा द्वारा 'शान्ति व अहिंसा की संस्कृति का विकास' विषयक शैक्षिक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें राजसमन्द जिले के लगभग दो सौ शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं विद्यालय संचालकों की सहभागिता रही। बालोदय के कार्याध्यक्ष सुरेश कावड़िया ने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पचास विद्यालयों में 'स्कूल विद ए डिफरेंस' योजना प्रारंभ करने की उद्घोषणा की। अणुव्रत लेखक मंच के अध्यक्ष नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', राजसमन्द के जिला शिक्षाधिकारी डॉ. राकेश तैलंग एवं मुनि सुखलाल ने संभागियों को संबोधित किया। सेमिनार में आचार्य महाश्रमण का पावन पाथेय भी प्राप्त हुआ। रात्रि में अणुव्रत बालोदय डाक्यूमेन्ट्री फिल्म प्रदर्शित की गई।

## कन्या भ्रूणहत्या रोकथाम हेतु शिविर

**मेहकर।** डॉ. भीमराव अंबेडकर नगर में बालविकास प्रकल्प बुलडाणा के अंतर्गत नागरी प्रकल्प मेहकर की ओर से 10 से 18 वर्ष की किशार लड़कियों हेतु शिविर लगाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानक बालविकास प्रकल्प अधिकारी ने की। मेहकर के अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र की संचालिका डॉ. सुनीला नंदकुमार नाहर प्रमुख वक्त के रूप में उपस्थित थीं। स्वागत गीत का संगान आराख ने किया। सुनीला नाहर ने कहा--दिन-ब-दिन लड़कियों की संख्या बड़े पैमाने पर कम होती जा रही है। कन्या भ्रूणहत्या रोकने के लिए सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए। साथ ही सभी सामाजिक संगठनों एवं सार्वजनिक संस्थाओं को मिलकर 'कन्या बचाओ' अभियान का संचालन करना चाहिए। प्राकृतिक नियमों का पालन कर लड़के-लड़कियों के अनुपात में संतुलन बनाये रखना चाहिए, अन्यथा समाज में अनेक समस्याएं बढ़ती जायेंगी। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार रंजना ने किया। कार्यक्रम में ताड़किया व महिला मंडल की बहनों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। सभी ने एक स्वर में कन्या बचाओ की बात कही।

www.terapanthinfo.com



## अहिंसा यात्रा धोइन्दा में

# आचार्य महाश्रमण का 38वां दीक्षा दिवस

**धोइन्दा, १५ मई।** आचार्य महाश्रमण प्रातः तुलसी साधना शिखर एवं अणुव्रत विश्वभारती का अवलोकन करते हुए लगभग चार किमी. का विहार कर धोइन्दा पधारे। आचार्यश्री के पावन पदार्पण से यहां की जनता का उल्लास चरम पर था। भव्य जुलूस के साथ आर्यवर कर्मणा जैन अम्बालाल कुमावत के आवास पर पधारे। एकदिवसीय प्रवास यहीं हुआ। कुमावत परिवार आचार्य महाश्रमण के इस अनुग्रह से अभिभूत था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा और मुख्य नियोजिका के प्रेरक वक्तव्य हुए। मुनि आनंदकुमार ने अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में इन्द्रिय संयम की प्रेरणा प्रदान की तथा किसान सम्मेलन में उपस्थित कृषकों को नशामुक्ति हेतु संबोध प्रदान किया।

**आचार्यश्री का ३८वां दीक्षा दिवस**

आचार्य महाश्रमण धोइन्दा से भाणा गांव की ओर प्रस्थित हुए। लगभग दो किमी. का अतिरिक्त मार्ग लेकर आचार्य महाश्रमण मेवाड़ कान्फ्रेंस के कार्यालय में पधारे और यहां अल्पकालिक प्रवास किया। संक्षिप्त कार्यक्रम में मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. बसंतीलाल बाबेल आदि अनेक लोगों ने स्वागत करते हुए दीक्षा दिवस पर आचार्य महाश्रमण को वर्धापित किया।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'मेवाड़ यात्रा करते हुए मेवाड़ कान्फ्रेंस के मुख्य केन्द्र में आए हैं। मेवाड़ के लोगों में दायित्व और श्रद्धा का भाव है। बाबेलजी अच्छे कार्यकर्ता हैं। अध्यक्ष के रूप में अपनी कार्यक्षमता का उपयोग कर रहे हैं। मेवाड़ कान्फ्रेंस के द्वारा समाज कल्याण का कार्य होता रहे।'

कान्फ्रेंस के कार्यालय से प्रस्थान कर कुल ११ किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण दस बजे कड़ी धूप में भाणा पधारे। आराध्य के आगमन से यहां के लोग प्रफुल्लित थे। अनायास आचार्यश्री का दीक्षा दिवस समारोह मिलना भाणावासियों के लिए सोने में सुहागा जैसा था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण से पूर्व आचार्य महाश्रमण के सह दीक्षित मुनि उदितकुमार ने आचार्य महाश्रमण के साथ जुड़े बचपन के अनेक रोचक संस्मरण सुनाए। आचार्यश्री के दीक्षा प्रदाता मंत्री मुनि सुमेरमल ने दीक्षा के प्रसंगों की गरिमामय अभिव्यक्ति दी।

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज के दिन मुझे सशक्त रूप में कल्याण का पथ प्राप्त हुआ। यह दिन संयम ग्रहण और निहाल होने का दिन है। मेरा तो यह अनुभव है कि अवश्य पूर्वजन्म के कोई संस्कार रहे हैं। पूर्व में की गई साधना के संस्कार जागृत हुए, निमित्त मिले और दीक्षित होने का सौभाग्य मिल गया।' आचार्य महाश्रमण ने इस अवसर पर गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के महान उपकारों और उनकी अतिशय कृपा का विशेष श्रद्धा के साथ स्मरण किया।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा--'गुरुदेव तुलसी का अनुग्रह बरसा और मुझे मुनिश्री सुमेरमल के हाथों से दीक्षित होने का अवसर प्राप्त हुआ। इसका मुझे सात्विक संतोष है। मुनिश्री प्रभावशाली संत हैं। मेरी दीक्षा के लिए आपने बहुत श्रम किया। दीक्षा के बाद भी लगभग दो वर्षों तक मुझे आपकी सन्निधि में रहने का सुयोग मिला।' प्रवचन के मध्य आचार्यश्री ने कृतज्ञभाव से मंत्री मुनि को वंदना की तो विनय की जीवंत परंपरा को देखकर उपस्थित जनता अभिभूत हो गई।

आचार्य महाश्रमण ने अपनी संसारपक्षीया मां नेमादेवी और संसारपक्षीय अग्रज सुजानमल के उपकार की भी स्मृति की।

वैराग्यपुष्टि हेतु किए गए मुनिवृन्द के श्रम का उल्लेख करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा--'मैं मुनि सोहनलाल चाड़वास का कृतज्ञ भाव से स्मरण करता हूं। उन्होंने मुझ पर बहुत श्रम किया। उनके परिश्रम और कृपा से मैंने अनेक थोकड़े कंठस्थ किए। मुनि रोशनलाल का मेरे प्रति स्नेहभाव था। उन्होंने भी मेरे लिए बहुत श्रम किया। मुनि पानमल का योग भी मेरी वैराग्यपुष्टि में सहायक रहा। कार्यक्रम के पश्चात आचार्यश्री स्थानीय तेरापंथ भवन में पधारे। उनका प्रवास यहीं हुआ।

**१७ मई।** लगभग चार किमी. का विहार कर आचार्यवर तासोल के नवनिर्मित महाश्रमण भवन में पधारे। आचार्यश्री का स्वागत कर गांववासी पुलकित और प्रमुदित थे। उनकी प्रसन्न मुखाकृति उनके आन्तरिक भावों को अभिव्यक्त कर रही थी। प्रातःकालीन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा, मुख्यनियोजिका और मंत्री मुनि ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। साध्वी प्रज्ञा ने अपनी जन्म भूमि पर आचार्य महाश्रमण का अभिनंदन करते हुए कुछ त्यागमय संकल्प अभिव्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'वैशाख शुक्ला पूर्णिमा का दिन भगवान बुद्ध के साथ जुड़ा हुआ दिन है। महात्मा बुद्ध मानों करुणा के अवतार थे। वे विरक्तिमान महापुरुष थे। उनका संकल्पबल अनूठा था। तासोल के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'आज हम तासोल आए हैं। इसका नाम गुरुदेव तुलसी ने 'तुलसी ग्राम' रखा था। यहां की जनता में अणुव्रत का प्रभाव बना रहे।'

**१८ मई।** लगभग आठ किमी. का विहार कर आचार्यवर बोरज पधारे। मार्ग में मार्बल की खानों के आसपास पत्थर के टुकड़ों के ऊंचे और विशाल ढेर लगे हुए थे। मानों मेवाड़ के पहाड़ी भू-भाग में श्वेत पहाड़ खड़े किए जा रहे हों। बोरज की जनता ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। विशाल जुलूस के साथ आचार्यवर भेरूंलाल परमार के आवास पर पधारे और यहां अल्पकालिक प्रवास किया।

आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अनुकंपा और नैतिकता को अंगीकार करने की प्रेरणा प्रदान की। नरेश परमार ने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में पांच ग्रामीण विद्यालयों में अपने परिवार की ओर से कम्प्यूटर सेंटर स्थापित करने की घोषणा की।

प्रवचन के पश्चात आचार्यवर देवीलाल परमार के आवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। देवीलाल और उनके भाई के बाईस वर्षीय पौत्र दीक्षित का तीन दिन पूर्व ही एक हृदयविदारक दुर्घटना में देहावसान हो गया था। आचार्य महाश्रमण ने उनके घर पधार कर परिजनों को सम्बल प्रदान किया।

www.terapanthinfo.com



# आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव कांकरोली

## मुख्य बिन्दु

● राष्ट्रपति वायुसेना के विशेष विमान से जे.के.हवाई पट्टी पर प्रातः ९.४० बजे उतरीं। वहां राज्यपाल डॉ. शिवराज पाटिल, केन्द्रीय मंत्री डॉ. सी. पी. जोशी, राजस्थान के उद्योगमंत्री राजेन्द्र पारीक, अतिरिक्त पुलिस महानिदे ाक नवदीपसिंह, संभागीय आयुक्त अर्पणा अरोड़ा, सांसद गोपालसिंह शेखावत, जिला कलक्टर डा. यशवंत बी. प्रीतम, पुलिस अधीक्षक डॉ. नितिन दीप ब्लग्गन, नगरपालिका अध्यक्ष आशा पालीवाल आदि ने उनकी अगवानी की।

● राष्ट्रपति के आगमन पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए। वर्दी में तथा सादी वेशभूषा में स्थान-स्थान पर सुरक्षाकर्मी तैनात थे। सघन सुरक्षा के तहत प्रदेश के कई जिलों के जवान और सुरक्षाधिकारी यहां लगाए गए थे। कार्यक्रम स्थल धोइन्दा की ओर जाने वाले मार्ग पर टीवीएस चौराहा, बिट्ठल विलास बाग के निकट तथा स्टेशन रोड पर आवागमन सुबह से ही रोक दिया गया। बिट्ठल विलास बाग के आसपास पार्किंग का बन्दोबस्त था। लोगों ने गंतव्य तक जाने के लिए वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग किया।

● महामहिम राष्ट्रपति के काफिले में चालीस वाहन शामिल थे। वे ९.५५ बजे पचास फीट रोड स्थित समारोह स्थल पर पहुंचीं, १०.३३ पर अपना भाषण शुरू किया, जो पन्द्रह मिनट चला। लिखित भाषण से हटकर भी लगभग उतने ही समय तक राष्ट्रपति ने अतिरिक्त भाषण किया। अपने भाषण में उन्होंने कई बार पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ से अपने मिलन-प्रसंगों की चर्चा की और आचार्य महाश्रमण के नेतृत्व में चल रहे नैतिक अभियान की मुक्तकंठ से सराहना की। लगभग सात बार श्रोताओं ने 'ओम अर्हम्' की ध्वनि के साथ अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

● आचार्य महाश्रमण का प्रवचन राष्ट्रपति के आगमन से पूर्व और उनके सम्मुख दो चरणों में हुआ। आचार्यवर के उद्बोधन में सरलता, दृढ़ता, संकल्पनिष्ठा, विनम्रता का सहज दर्शन हो रहा था।

● आचार्यवर ज्यों ही मंच पर पधारे, पूरी परिषद ने खड़े होकर उच्चस्वर में 'वंदे गुरुवरम्' के साथ वर्धापन किया। आचार्यवर ने हाथ उठाकर सबको आशीर्वाद प्रदान किया।

● कार्यक्रम ठीक ८.३० बजे प्रारंभ हो गया। राष्ट्रपति निश्चित समय से दस मिनट बिलंब से पहुंचीं और निर्धारित समय से पैंतीस मिनट बाद रवाना हुईं।

● समारोह के बाद राष्ट्रपतिजी व आचार्य महाश्रमण के बीच ग्रीन रूम में लगभग आठ मिनट तक विशेष वार्ता हुई।

● कार्यक्रम में संभागीय आयुक्त, पुलिस अधीक्षक, कलक्टर, सांसद गोपालसिंह शेखावत, कुंभलगढ़ विधायक गणेशसिंह परमार, राजसमंद विधायक एवं भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव किरण माहेश्वरी, उदयपुर के आई.जी. मीणा सहित अनेक पुलिस अधिकारी व एस.डी. एम. आदि उपस्थित थे।

● तेरापंथी महासभा की ओर से अध्यक्ष चैनरूप चिंडालिया ने चंदन काष्ठ से निर्मित कलात्मक वीणा भेंट की। उसकी कोरणी रमणीय थी। इसके पांच खंडों में आचार्य महाश्रमण के जन्म-प्रसंग, दीक्षा तथा युवाचार्य और आचार्य बनने से लेकर मेवाड़ यात्रा और इससे जुड़े अनेक प्रसंगों के चित्र उत्कीर्ण थे। राष्ट्रपति को सिंगापुर में सोने से निर्मित एक विशेष स्मृतिचिह्न भेंट किया गया। उन्होंने वीणा को बहुत गौर से देखा और उसकी सराहना की।

● अमृत महोत्सव की समग्र व्यवस्था के लिए कई पंडालों का निर्माण किया गया। मुख्य कार्यक्रम स्थल का डोम ८०×५००=४० हजार वर्गफीट व उसके दोनों ओर लगे शामियानों का पंडाल भी ६० हजार वर्गफीट-- इस तरह कुल लगभग एक लाख वर्ग फीट में फैला हुआ था। मुख्यतः भंवरलाल बागरेचा के खेत में निर्मित इस पंडाल में समागत लोगों की समुचित व्यवस्था हेतु ३०० पंखे, ५० कूलर तथा इस ऐतिहासिक दृश्य को दूर से भी सुगमता से देखने हेतु एल.ई.डी. तथा एल.सी.डी. की व्यवस्था थी।

● पंडाल में मुख्य मंच के अतिरिक्त चार मंचों का निर्माण हुआ, जिन पर साधु-साध्वियों और विशिष्ट अतिथियों के पृथक-पृथक बैठने की व्यवस्था थी। मंच के पीछे लगा बैकड्रॉप अत्यन्त आकर्षक था। मंच के दायीं ओर बने दो स्टेजों में एक साध्वियों और समणियों के लिए आरक्षित था, जबकि दूसरे पर राष्ट्रपति के परिवार से उनके सुपुत्र, पुत्रवधू के साथ राष्ट्रपति भवन से आया स्टॉफ व अन्य अधिकारी मौजूद थे। बायीं ओर बने स्टेजों में एक पर संत विराजमान थे और दूसरे पर अतिविशिष्ट अतिथि उपस्थित थे। कई खंडों व गलियारों में बेरिकेट्स लगाकर श्रद्धालुओं के बैठने की व्यवस्था की गई।

● १० व ११ मई के कार्यक्रम समायोजन हेतु प्रज्ञा विहार के समीप ही लगभग तेईस हजार वर्गफीट पंडाल निर्मित हुआ, जिसमें ज्ञानशाला व महिला मंडल के कार्यक्रम आयोजित हुए।

● भोजनालय के सूत्रों के अनुसार तीन पंडाल भोजन व्यवस्था हेतु बने थे। ४९ हजार, २९ हजार तथा ९ हजार वर्गफीट के पंडालों के अलावा ज्ञानशाला के बच्चों के लिए तीन हजार वर्गफीट का स्पेशल पंडाल बनाया गया। सुचारु और त्वरित व्यवस्था हेतु चालीस काउंटर लगाए गए। स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ आसपास के क्षेत्रों के कार्यकर्ता भी व्यवस्थाओं से जुड़े हुए थे। भोजन प्रबंधन से जुड़े कार्यकर्ताओं ने बताया कि लगभग १७ हजार लोगों ने भोजन व्यवस्था का उपयोग किया। खाने में मात्र सात द्रव्य थे, जो सभी क्षेत्रों के लिए अनुकरणीय उपक्रम माना जा सकता है। भोजन व्यवस्था की विशेषता यह रही कि किसी भी आगंतुक को भोजन के लिए प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

● जल व्यवस्था के सूत्रों के अनुसार बीस-बीस लीटर वाले ३५०० ठंडे पानी के केंपर काम में आए। लगभग बीस टैंकर जल की सप्लाई की गई। गर्मी को देखते हुए स्थान-स्थान पर स्वच्छ और शीतल जल की व्यवस्था थी।

● आवास व्यवस्था से जुड़े कार्यकर्ताओं ने बताया--अमृत महोत्सव पर आने वाले यात्रियों के लिए धर्मशाला, भवन, होटल आदि २६ स्थान आरक्षित थे। लगभग ५५०० लोगों को आवास व्यवस्था उपलब्ध करवाई गई। सैकड़ों लोग

www.terapanthinfo.com



व्यक्तिगत रूप से नाथद्वारा आदि में रुके।

● परिवहन सूत्रों के अनुसार दो स्पेशल ट्रेनों, सैकड़ों बसों तथा सैकड़ों छोटे और निजी वाहनों से लोग महोत्सव में भाग लेने के लिए कांकरोली पहुंचे। बड़ी संख्या में लोग मावली और फालना जंक्शन से रेल यात्रा करके भी पहुंचे। कई जगह पार्किंग जोन बनाए गए। जहां तक दृष्टि जाती वाहन ही वाहन दिखाई दे रहे थे।

● समारोह में ६१ साधु, ६२ साध्वियों, ६७ समण-समणियों सहित लगभग २० हजार लोगों की उपस्थिति आंकी गई।

● कार्यक्रम कितना कसा हुआ, आकर्षक व ग्रहणीय था उसका अंदाजा राष्ट्रपति भवन से कलक्टर के पास पहुंचे इस संदेश से लगाया जा सकता है--'कार्यक्रम बहुत सुव्यवस्थित अच्छा और प्रभावी रहा।

● महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के मार्गदर्शन में अमृत महोत्सव आयोजना का समग्र उत्तरदायित्व अमृत महोत्सव के प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने बखूबी संभाला। कार्यक्रम के हर पहलू में उच्च प्रबंधन, कुशल संयोजना, समय नियोजन और कार्यकर्ताओं का टीमवर्क स्पष्ट झलक रहा था।

● समारोह के समुचित प्रबंधन में राजसमन्द के कलेक्टर डॉ. यशवंत बी.प्रीतम, पुलिस अधीक्षक डॉ. नितिनदीप ब्लग्गन का सकारात्मक व सक्रिय सहयोग रहा।

● आयोजन को सफल बनाने में महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिंडालिया, विजयसिंह चोरड़िया, अमृत महोत्सव समिति के संयोजक ख्यालीलाल तातेड़, हंसमुखभाई मेहता, मनोहर गोखरू, सलिल लोढ़ा, एवं गौरव कोठारी का निष्ठापूर्ण योग रहा।

● राष्ट्रपति के आगमन और कार्यक्रम समायोजन में मुम्बई के अशोक तलेसरा एवं बेंगलोर के अभय दूगड़ का कार्यकारी योगदान रहा। अरविन्द गोठी एवं जब्बर चिंडालिया का भी इस संदर्भ में सहयोग प्राप्त हुआ।

● समारोह की व्यवस्था के सम्यक निष्पादन हेतु तेरापंथी सभा कांकरोली के अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश चोरड़िया, पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी,व्यवस्था समिति के संयोजक धर्मेश डांगी, सहसंयोजक गणेश कच्छारा, प्रशासनिक कार्यों में संलग्न सुरेश कच्छारा सहित पूरी टीम तथा तेयुप, महिला मंडल, कन्यामंडल, किशोर मंडल के कार्यकर्ताओं ने दिन-रात सक्रिय रहकर अपने दायित्व का निर्वहन किया।

● कांकरोली में आचार्य महाश्रमण व संतों का प्रवास विशाल 'प्रज्ञा विहार' में हुआ।

## जुगराज नाहर को पुत्र शोक

**मैसूर ।** अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जुगराज नाहर के सुपुत्र प्रकाश नाहर का रुग्णावस्था में पिछले दिनों बैंगलोर के अस्पताल में निधन। प्रकाश नाहर हंसमुख, मिलनसार, धार्मिक विचारों से युक्त, संस्कारवान, कर्मठ व्यक्तित्व के धनी थे। प्रकाश नाहर के आकस्मिक निधन पर अणुव्रत महासमिति परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि।

# भ्रष्टाचार पर लगाम लगे

**हिसार, 25 मई।** यक्ष प्रश्न यह है कि क्या लोकपाल विधेयक भारतीय समाज की रग-रग में रचे-बसे हुए भ्रष्टाचार को समाप्त कर पाएगा? हमारे देश में कानूनों की कमी नहीं है मगर उनको ईमानदारी से लागू करने का कोई प्रयास नहीं करता। राजनीतिक दबाव और वकीलों के दांवपेंच से दोषी साफ बच जाते हैं। यही कारण है कि इस देश की आम जनता को आज भी यह विश्वास नहीं है कि सत्ताधारी भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने का ईमानदारी से प्रयास करेंगे। ये विचार मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने आर्यनगर कुरड़ी में आयोजित विशाल सार्वजनिक सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा--भ्रष्टाचार के प्रति समाज के दृष्टिकोण को भी बदलने की जरूरत है। कुछ दशक पूर्व तक ईमानदार व्यक्ति को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था मगर आज उसे सबसे अधिक मूर्ख माना जाता है। परिवारजन और समाज के लोग यह कहते नहीं थकते कि फलां व्यक्ति ने मौका होते हुए भी भ्रष्टचार से धनराशि नहीं बटोरी, इसलिए वह सनकी और मूर्ख हैं। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अंग्रेजों के शासन में देश में भ्रष्टाचार इतने व्यापक रूप से नहीं फैला हुआ था जितना कि आज। यह कड़वा सच है कि आजादी के बाद जिन लोगों के हाथ में सरकार की बागडोर आई उन्होंने भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन दिया। कोई राजनीतिक दल ऐसा नहीं है जिसका दामन भ्रष्टाचार के धब्बों से पाक-साफ हो। इससे साफ है कि सरकार की नीयत भ्रष्टाचार को समाप्त करने की कतई नहीं है।

# समाज संरचना का एक अभिनव प्रकल्प

**लाडनूं, 28 मई।** जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के छात्र-छात्राओं को अहिंसा भवन में उद्‌बोधन देते हुए प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने जीवन विज्ञान की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि की व्याख्या करते हुए कहा--जीवन विज्ञान के सारे प्रयोग न्यूरोसाइंस की इस अवधारणा पर आधारित है कि मानव-मस्तिष्क में जो मेमलियन ब्रेन (पशु-मस्तिष्क-स्तर) है उसका परिष्कार किए बिना मनुष्य को सही अर्थ में शिक्षित नहीं किया जा सकता। इस पशु-मस्तिष्क के प्रभाव से ही शिक्षित व्यक्ति भी हिंसा, हत्या, धोखाधड़ी, क्रूरता, अत्याचार में लिप्त होकर समाज में समस्याएं पैदा कर देता है। इसलिए शिक्षा में ऐसे प्रमाण-सिद्ध प्रयोगों के द्वारा मस्तिष्कीय प्रशिक्षण आवश्यक है। मुनिश्री ने जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग को शिक्षा का एक अभिनव आयाम बताया जिससे मनुष्य के वैयक्तिक जीवन के साथ पारिवारिक जीवन को भी कलहमुक्त किया जा सकता है तथा सामाजिक जीवन में व्याप्त बुराइयों का वास्तविक प्रतिकार संभव है।

मुनिश्री ने आगे कहा--प्रेक्षा एवं अनुप्रेक्षा हमारी मौलिक जैव-रासायनिक प्रक्रिया को रूपांतरित करने में सक्षम हैं। विश्वविद्यालय में ही इसके लिए अनेक आधुनिक उपकरणों के माध्यम से अनुसंधान किया जा रहा है। जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम द्वारा समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जाए, इस हेतु आप लोगों को प्रयत्न करना चाहिए। कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

www.terapanthinfo.com



# इग्नू में आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा पीठ

**राजसमंद।** इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली (इग्नू) के उपकुलपति प्रो. वी.एन. राजशेखरन पिल्लई ने अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद में यह घोषणा की कि शीघ्र ही इग्नू में आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा पीठ (चैयर) की स्थापना की जाएगी। प्रो. पिल्लई ने आचार्य महाश्रमण के साथ विचार विमर्श के दौरान बताया कि इस पीठ के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा दर्शन को जन-जन में फैलाने के लिए साहित्य व अन्य सामग्री का प्रकाशन-प्रसारण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इग्नू द्वारा 'ज्ञानवाणी' आकाशवाणी चैनल व 'ज्ञानदर्शन' दूरदर्शन चैनल के माध्यम से देश के कोने-कोने में शिक्षा का संदेश पहुंचाया जा रहा है। आचार्य महाश्रमण के सुझाव पर प्रो. पिल्लई ने कहा कि आपसी विचार-विमर्श के बाद पीठ की रूपरेखा निर्धारित की जाएगी एवं आवश्यकता हुई तो मैं पुनः आकर आपका मार्गदर्शन प्राप्त करूंगा। प्रो. पिल्लई ने अणुविभा के राजसमन्द केन्द्र में इग्नू का स्टडी सेन्टर खोलने का सुझाव भी दिया।

# अहिंसा प्रशिक्षण द्वारा मनोबल विकास

**बाढ़, 10 मई।** राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद द्वारा संचालित स्थानीय अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के नये सत्र का भव्य उद्घाटन चीन एशियाड़ 2010 की कबड्डी स्वर्ण पदक विजेता तथा भारतीय रेलवे की अधिकारी स्मिता कुमारी ने दीप जलाकर किया। इस अवसर पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए एशियाड़ गोल्डन गर्ल स्मिता ने कहा कि अहिंसा प्रशिक्षण मनोबल विकास का आधार है। अहिंसा प्रशिक्षण से व्यक्ति में सकारात्मक बदलाव घटित होता है। मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ इसके प्रणेता थे। वर्तमान में इसके अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण हैं। समता एवं सद्भावना से ही समाज का वर्तमान और भविष्य निर्मित होता है। खेलकूद के लिए भी अहिंसा की भावधारा अत्यन्त जरूरी है। विशिष्ट अतिथि के रूप में समाजसेवी तारिणी प्रसाद सिंह ने हृदय परिवर्तन पर प्रकाश डाला। शिशु रोग विशेषज्ञ एवं संभावना चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक सचिव शिक्षाविद् डॉ. अंजेशकुमार ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए अहिंसा प्रशिक्षण द्वारा जनपद मेंआए बदलावों को रेखांकित किया तथा शिक्षा के साथ दीक्षा और जीवन के साथ जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान को जोड़ने की बात कही।

समारोह के आयोजक एवं संयोजक प्रो. साधुशरण सिंह सुमन ने आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के समन्वयक शिक्षाविद् सुरेश चन्द्र प्रसाद सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार सिंह, हैदराबाद केन्द्र प्रभारी ललित किशोर प्रसाद, बाढ़ नगर परिषद् के उपाध्यक्ष राजीव कुमार, छात्र संसद के प्रदेश संयोजक राणा शत्रुघन सिंह, संभावना ट्रस्ट के उपाध्यक्ष आर.पी. निराला, संगठन के प्रांतीय मंत्री हेमन्तकुमार, डॉ. आलेहसन आजाद ने अपने विचार रखे।

# इंडिया अगेस्ट करप्शन सेमिनार में अणुव्रत महासमिति की भागीदारी

**नई दिल्ली, 2 जून।** कारमैल कॉन्वेंट पब्लिक स्कूल मालचा मार्ग में इंडिया अगेंस्ट करप्शन के अग्रणी गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन की कड़ी में देश के विभिन्न राज्यों से आमंत्रित कार्यकर्ताओं की एक विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। इसमें अणुव्रत महासमिति ने अपनी भागीदारी दर्ज की। अणुव्रत महासमिति की ओर से संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा और कार्यालय प्रभारी एल.आर. भारती ने वहां उपस्थित प्रतिनिधियों के मध्य अणुव्रत पत्रिका एवं प्रचार-प्रसार साहित्य का वितरण किया। विचार गोष्ठी में जन लोकपाल व लोकायुक्त के तहत नागरिक अधिकार-पत्र (नागरिक घोषणा-पत्र या सिटीजन चार्टर) से संबंधित जन शिकायतों के निवारण पर विचार-विमर्श हुआ। जिसमें देश की जनता के समक्ष जन लोकपाल विधेयक के ड्राफ्ट की जानकारी और सुझावों को लेकर चर्चा चली। इसमें मुख्य बिन्दु थे कि जनता जन लोकपाल क्यों चाहती है? लोकपाल की संरचना, भ्रष्टाचारियों के खिलाफ लोकपाल द्वारा क्या कार्यवाही की जाएगी? जन लोकपाल आम आदमी को रिश्वतखोरी से कैसे राहत दिलाएगा? लोकपाल के तहत नागरिक अधिकार-पत्र के उल्लंघन से संबंधित जन शिकायतों का निवारण कैसे किया जाएगा? जन लोकपाल और जन लोकायुक्त में भ्रष्टाचार रोकने के लिए क्या किया जाएगा? जन लोकपाल का अधिकार क्षेत्र। भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने वालों का संरक्षण। झूठी और भ्रमित करने वाली शिकायतों के खिलाफ सुरक्षा। जांच की निश्चित समयावधि आदि अनेक विषयों पर और लोगों द्वारा उठाए गए प्रश्नों पर गहन चर्चा हुई। इस चर्चा में बाबूलाल गोलछा ने भी कई महत्वपूर्ण प्रश्न उठाकर कानून की खामियों को ठीक करने हेतु प्रश्न उठाए। एल.आर. भारती ने समाज में फैलाई जा रही कुछ भ्रांतियों की ओर इंगित करते हुए उनके निवारण एवं निरूपण पर जोर दिया। लोगों के प्रश्नों का निवारण सिविल सोसायटी के सदस्य अरविंद केजरीवाल एवं स्वामी अग्निवेश ने किया।

## सूचना

### जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा

जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के सभी आजीवन सदस्यों को सूचित किया जाता है कि जिन सदस्यों का महासभा की ओर से पहचान पत्र बनना बाकी रह गया है, वे कृपया यथाशीघ्र अपनी 2 रंगीन पासपोर्ट साइज की फोटो तेरापंथी महासभा कार्यालय को प्रेषित करें, ताकि उनका पहचान पत्र बनवाया जा सके।

अगर किसी सदस्य का पता परिवर्तित हो गया है तो वे भी कृपया परिवर्तित पता महासभा कार्यालय को प्रेषित करें।

**जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा**
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता-700001
दूरभाष : 22357956, 22343598
फैक्स : 033-22343666

www.terapanthinfo.com



# गांधी सेवा सदन में अणुव्रत परिषद् आयोजित

**राजसमन्द, 13 मई।** अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की आचार्य शासना की प्रथम वर्षगांठ पर अभिवंदना समारोह उपरांत गांधी सेवा सदन में अ.भा. अणुव्रत परिषद् का अयोजन हुआ। अणुव्रत परिषद् के अन्तर्गत अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति बैठक, साधारण सभा बैठक तथा राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति की साधारण सभा की बैठक आयोजित हुई एवं अणुव्रत आंदोलन की भावी दिशाएँ विषय पर व्यापक चिन्तन मनन अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल के सान्निध्य में हुआ।

अणुव्रत परिषद् में डॉ. महेन्द्र कर्णावट, जी.एल. नाहर, जुगराज नाहर, डॉ. बी.एन. पांडेय, अर्जुन बापना, विजयराज सुराणा, बाबूलाल गोल्छा, जंवरीलाल सकलेचा, प्रो. देवेन्द्र जैन, सुरेन्द्र जैन, डॉ नरेन्द्र शर्मा कुसुम, कानराज सालेचा, एम.के. कांठेड, गणेश डागलिया, रावतमल सैनी, सम्पत सामसुखा, जसराज चोरडिया, डॉ शंकरलाल इंटोदिया, डॉ निर्मल कुणावत, प्रेमसिंह तलेसरा, बैरवा बंधु, जमनालाल दशोरा, इन्द्रमल हींगड़, डालचंद चिंडालिया, मनोहरलाल बापना सहित पचास से अधिक अणुव्रत से जुड़े लोककर्मियों की उपस्थिति रही।

अणुव्रत परिषद् को संबोधित करते हुए मुनि सुखलाल ने कहा--आने वाला समय हमारे लिए परीक्षा का है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का शताब्दी समारोह हमारा आह्वान कर रहा है कि अणुव्रत आन्दोलन से जुड़े सभी संस्थान संयुक्त कार्ययोजना पर तीव्र गति से कार्य प्रारंभ कर जन-जन को आचार्य तुलसी के अनुदानों से परिचित करायें। यह अवसर है कि जब अणुव्रत की पुनः गूंज हो और उसका आंदोलनात्मक पक्ष उभर कर सामने आये।

अणुव्रत परिषद् की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ लोककर्मी एवं अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी. एल. नाहर ने अपने वक्तव्य में कहा--अणुव्रतों को हम स्वयं जीवन में उतारेंगे तभी समाज में परिवर्तन घटित होगा। आचार्य तुलसी ने जीवन भर संघर्ष किया व्यक्ति-व्यक्ति को बदलने का। उनकी जन्म शताब्दी पर यदि हम एक हजार व्यक्तियों को भी बदल सकें तो समाज में बड़ा परिवर्तन स्वतः आ जायेगा।

अणुव्रत परिषद् में अणुव्रत महासमिति के विधान संशोधन पर विस्तृत चर्चा हुई तथा अणुव्रत महासमिति के नाम की महरौली स्थित जमीन अ.भा. अणुव्रत न्यास को हस्तांतरित करने का सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया था। सम्पत सामसुखा को सर्व सम्मति से पुनः राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

## अणुव्रत भवन का शिलान्यास

**राजसमन्द 14 मई।** अणुव्रत आन्दोलन की प्रमुख कार्यस्थली राजसमन्द में किशोरनगर स्थित सौ फीट रोड़ पर अणुव्रत भवन का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। शिलान्यास समारोह अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में प्रस्तावित था लेकिन मार्ग में मिट्टी का अवरोध आ जाने से अणुव्रत अनुशास्ता ने दूर से ही मंगल आशीर्वाद देकर शुभ भावनाएँ व्यक्त की।

गुणसागर कर्णावट, जुगराज नाहर, रमेश कोठारी, प्रफुल्ल बड़ोला, मीठालाल कावड़िया, हर्ष नवलखा, डॉ. विमल कावड़िया, अचल धर्मावत, गणपत धर्मावत, डॉ. मदन सोनी, कुलदीप सोनी एवं डूंगरसिंह कर्णावट ने भवन स्थल पर उपस्थित हो नींव का पत्थर रखा। अणुव्रत भवन शिलान्यास समारोह में डॉ. बी. एन. पांडेय, विजयराज सुराणा, जी. एल. नाहर, डॉ. महेन्द्र कर्णावट की प्रमुख उपस्थिति रही।

अणुव्रत भवन के माध्यम से राजसमन्द जिले में अणुव्रत की गतिविधियों को संचालित करने का प्रावधान है।

## 'अणुव्रत सेवी' डालचंद चिंडालिया का निधन

**सरदारशहर।** 'अणुव्रत सेवी' डालचंद चिंडालिया का विगत दिनों हृदयाघात से अचानक निधन हो गया। चिंडालियाजी सरदारशहर में आधारभूत कार्यकर्ता थे। उनके नेतृत्व में विविध अणुव्रत सम्मेलनों एवं गोष्ठियों का आयोजन हुआ। वे अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति के सदस्य भी रहे। उन्हीं के प्रयासों से सरदारशहर में जीवन विज्ञान भवन एवं अणुव्रत भवन का निर्माण हुआ। वे अत्यन्त विनम्रः, सरल एवं कर्मठ व्यक्तित्व के धनी थे। उनके निधन से अणुव्रत का आधार-स्तंभ ढह गया है। चिंडालिया का निधन अणुव्रत के लिए अपूरणीय क्षति है।

दिवंगत आत्मा को अणुव्रत महासमिति परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि।

## बांझपन निवारण एवं पशु चिकित्सा शिविर

**उदयपुर।** अणुव्रत समिति उदयपुर, तारा ज्वेलर्स एवं पशुपालन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में ग्राम मारूवास पंचायत समिति बड़गांव में निःशुल्क बांझपन निवारण एवं पशु चिकित्सा शिविर का आयोजन राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मारूवास में किया गया। शिविर में बड़ी संख्या में पशुओं की जांच एवं चिकित्सा की गयी एवं दवाइयां दी गयी। शिविर में प्रमुख रूप से पशुओं में बधियाकरण, टीकाकरण, चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, कृत्रिम गर्भाधान एवं गर्भ परीक्षण, डोपिंग एवं डस्टिंग का परीक्षण किया गया। जांच के दौरान बीमार पाये गये पशुओं का पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विभाग उदयपुर द्वारा ईलाज किया जायेगा।



www.terapanthinfo.com